उपलब्धि संवेदनाओं, अनुभवों और जीवन के रंगों का जीवंत चित्रण करने वाले कलाकार हैं अनिल रस्तोगी

अभिनेता अनिल रस्तोगी ने रंगमंच पर नाटकों का पूर्ण किया शतक

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। शतक पूरा करना अपने-आप में एक बड़ी उपलब्धि है, चाहे वह उम्र का हो या जीवनभर की सृजनात्मक कृतियों का। यह साधारण संख्या नहीं, बल्कि साधना, निरंतरता और प्रतिबद्धता का प्रतीक होता है।

रंगमंच के वरिष्ठ कलाकार अनिल रस्तोगी जी ने 82 वर्ष की आयु में, रंगमंच की दुनिया में 64 वर्षों की निरंतर यात्रा के बाद, सोमवार को लखनऊ में अपने 100वें नाटक मुस्कान गोस्वामी के निर्देशन में "बियॉन्ड द कर्टन" का सफल मंचन कर यह शतक पूर्ण किया। यह उपलब्धि केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि भारतीय रंगमंच के लिए भी गर्व का क्षण है। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं यह नाटक नहीं देख पाया। लेकिन लोगों से बातचीत और सोशल मीडिया पर देखकर अच्छा लगा। 2006 में जब मैंने लखनऊ कला महाविद्यालय में दाख़िला लिया, तब कला और साहित्य के प्रति मेरी रुचि को विस्तार देने में प्रदर्शनी, नाटक, फ़िल्म और साहित्यिक बैठकों में जाना मेरे जीवन का एक अत्यंत समृद्ध अनुभव बना। इन विधाओं से जुड़े रचनात्मक व्यक्तित्वों से मिलना, संवाद करना और उनके साथ समय बिताना मेरे लिए एक बड़ी उपलब्धि रहा। इसी दौरान रंगमंच के दिग्गजों—पद्मश्री राज बिसारिया जी , अनिल रस्तोगी जी, ऊर्मिल थपलियाल जी, मोहन कुलश्रेष्ठ जी, ललित सिंह पोखरियाल जी—का सान्निध्य प्राप्त हुआ और आज भी मिल रहा है। उसके बाद नए कलाकारों में प्रवीण चंद्रा, संदीप यादव, शुभम त्रिपाठी, भारतेंदु कश्यप, मुस्कान सहित अन्य कई कलाकार भी मिले । उनके साथ काम करने और उनसे सीखने का अवसर तब भी मिला और आज भी मिलता रहता है। लखनऊ में बिताए गए 19 वर्षों ने मुझे बहुत कुछ दिया है—और आगे भी देता रहेगा।

कभी-कभी जीवन ऐसे व्यक्तित्व रचता है, जो दो बिल्कुल अलग संसार को एक साथ जोड़ देते हैं। अनिल रस्तोगी ऐसे ही व्यक्तित्व हैं—विज्ञान की कठोर अनुशासनात्मक दुनिया और रंगमंच की संवेदनशील, नाज़ुक दुनिया—दोनों को अपने जीवन में सहज संतुलन के साथ समेटे हुए। वे केवल अभिनेता नहीं, बल्कि अनुभव और संवेदनाओं की एक सतत यात्रा हैं। अनेक कला प्रदर्शनियों और आयोजनों में उनसे निरंतर मिलना-जुलना होता रहा है। उनका स्नेह, उनकी सहजता और संवाद सदैव प्रेरित करते रहे हैं। आज अपने छोटे से अनुभव के माध्यम से मैं उनके लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ साझा कर रहा हूँ। यह चर्चा किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि उस व्यक्तित्व का है, जिसने ज्ञान और कला, विज्ञान और संवेदनशीलता, कर्म और भावना के बीच एक दुर्लभ संतुलन स्थापित किया। अनिल रस्तोगी एक ऐसे अभिनेता हैं जिसकी पहुंच कला मंच या स्क्रीन तक सीमित नहीं, बल्कि हमारे भीतर छुपी मानवीय संवेदनाओं तक पहुँचती है। 27 सितंबर 1943 को लखनऊ की गलियों में जन्मे अनिल रस्तोगी जी का जीवन सरलता, अनुशासन और जिज्ञासा से शुरू हुआ। बचपन से ही उनमें ज्ञान के प्रति गहरी रुचि और खोज की भावना रही। विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने विज्ञान का मार्ग चुना और 1962 में सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट में वैज्ञानिक के रूप में कार्य आरंभ किया। 2003 में सेवानिवृत्ति तक उन्होंने पूरी निष्ठा से देश सेवा की, किंतु उनकी आत्मा सदैव कला और अभिनय की ओर आकृष्ट रही। यही वह समय था, जब उनके जीवन में थिएटर के एक नए अध्याय की शुरुआत हुई। मंच पर उनकी पहली प्रस्तुति से ही यह स्पष्ट हो गया कि अनिल रस्तोगी केवल अभिनय नहीं करते, बल्कि भूमिका को जीते हैं। उनके लिए मंच एक भावनात्मक यात्रा है, जहाँ दर्शक केवल दृश्य नहीं देखते, बल्कि अनुभव से गुजरते हैं। "ताजमहल का टेंडर" में उनका संवाद आज भी स्मृतियों में गूंजता है— "ज़िंदगी की सच्चाई आँखों में नहीं, दिल में बसती है।" इस एक पंक्ति में जीवन का गहन अनुभव, मानवीय संवेदनाओं की परतें और धैर्य की झलक दिखाई देती है।"येहूदी की लड़की" में उन्होंने युद्ध और पीड़ा के बीच भी मानवीय आशा और प्रेम को जीवंत किया। जब अनिल रस्तोगी मंच पर किसी पात्र की पीड़ा में उतरते हैं, तो दर्शक भी उस दर्द को महसूस करने लगते हैं। उनकी यह कला हर उम्र और हर समय के दर्शकों को भीतर तक छू जाती है। टेलीविजन और फ़िल्मों में भी उनकी उपस्थिति उतनी ही प्रभावशाली रही है। उड़ान में SSP बशीर अहमद की भूमिका हो या मुल्क, ठप्पड़, बटला हाउस जैसी फ़िल्मों में छोटे लेकिन गहरे असर छोड़ने वाले किरदार—हर जगह उनकी संवेदनशीलता और अनुभव स्पष्ट दिखाई देते हैं। सेट पर उनका सहज व्यवहार, धैर्य और सादगी उन्हें सहकर्मियों के लिए प्रेरणा बनाते हैं। उनका निजी जीवन भी उतना ही संतुलित और प्रेरक है। 21 मई 1962 को उन्होंने सुधा रस्तोगी जी से विवाह किया। परिवार के प्रति उनका समर्पण और सादगी उनके अभिनय में भी सच्चाई और भावनात्मक गहराई जोड़ती है। आज वे 82 वर्ष की आयु के बाद भी रंगमंच, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा—अभिनय की चारों विधाओं में सक्रिय रहने वाले देश के सबसे वरिष्ठ और संभवतः एकमात्र अभिनेता हैं। अभिनय के क्षेत्र में उनका जीवन अनुशासन, निरंतरता और समर्पण का दुर्लभ उदाहरण है। उन्हें 2 राष्ट्रीय और 6 राज्य स्तरीय पुरस्कार सहित 60 से अधिक सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें भारत सरकार का सर्वोच्च प्रदर्शन कला सम्मान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2023) प्रमुख है। वैज्ञानिक के रूप में वे नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, इंडिया के फेलो (1999) भी रहे हैं। राज्य सम्मानों में कालिदास सम्मान, यश भारती, अटल उर्दू सम्मान और दूरदर्शन लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड विशेष उल्लेखनीय हैं। उन्होंने रंगमंच में 64 वर्षों के दौरान 100 नाटकों के लगभग 950 से अधिक मंचन किए और 75 से अधिक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय नाट्य महोत्सवों में भाग लिया। वे देश के सबसे पुराने शौकिया रंगमंच समूह 'दर्पण' का पिछले 47 वर्षों से नेतृत्व कर रहे हैं और अनेक प्रतिष्ठित रंगनिर्देशकों के साथ कार्य कर चुके हैं। रेडियो व टेलीविजन के 'ए' ग्रेड कलाकार के रूप में उन्होंने 250 से अधिक रेडियो नाटकों, 500 से अधिक टीवी कार्यक्रमों, 14 वेब सीरीज़, 75 से अधिक फिल्मों और अनेक विज्ञापनों में अभिनय किया है। अनिल रस्तोगी जी का अभिनय-सफ़र हिंदी सिनेमा, लघु फ़िल्मों, वेब सीरीज़ और टेलीविजन—चारों माध्यमों में फैला हुआ, दीर्घकालीन और अत्यंत विविधतापूर्ण है। फ़िल्मों में उन्होंने 1986 में सुधीर मिश्रा निर्देशित यह वो मंज़िल तो नहीं से लेकर 2025 तक निरंतर सक्रिय रहते हुए प्रशासनिक अधिकारी, गाँव के प्रधान, राजनेता, न्यायाधीश, मंत्री, सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी, किसान, महंत, पिता, दादा, सलाहकार और खलनायक जैसे असंख्य चरित्रों को सशक्त ढंग से निभाया। मरीचिका, खून बहा गंगा में, समर्पण, मैं, मेरी पत्नी और वो, इश्क़ज़ादे, Z+, मुक्ति भवन, राग देश, रेड, मुल्क, परमाणु, थप्पड़, द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर, नक़ाश, गोदान, रौतू का राज, महादेव का गोरखपुर, राम राज्य जैसी चर्चित फ़िल्मों के साथ-साथ उन्होंने तेलुगु, मराठी, भोजपुरी और अंतरराष्ट्रीय फ़िल्मों में भी यादगार भूमिकाएँ निभाईं। विशेष रूप से आठवण (मेमोरी) में डिमेंशिया रोगी की मुख्य भूमिका और गोदान में पं. दत्तादीन जैसे चरित्र उनके अभिनय की गहराई और संवेदनशीलता को रेखांकित करते हैं।डिजिटल मंच पर भी अनिल रस्तोगी जी ने प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। अ सूटेबल बॉय, आश्रम (तीनों सीज़न), ग्रहण, मुंबई डायरीज़, रक्तांचल, शिक्षा मंडल, सीतापुरः सिटी ऑफ़ गैंगस्टर्स, ताली और धुरंधर जैसी वेब सीरीज़ में उन्होंने मुख्यमंत्री, गृह मंत्री, न्यायाधीश, राजनेता, मार्गदर्शक और पिता की भूमिकाओं में अपने अनुभव और सहज अभिनय से दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी। इन वेब सीरीज़ के माध्यम से उन्होंने समकालीन डिजिटल युग में भी अपनी बहुआयामी अभिनय क्षमता को मज़बूती से स्थापित किया है।टेलीविज़न के क्षेत्र में वे दूरदर्शन के "ए" ग्रेड कलाकार हैं और 1975 से निरंतर अभिनय कर रहे हैं। विभिन्न चैनलों पर प्रसारित धारावाहिकों में उन्होंने 500 से अधिक एपिसोड में अभिनय किया है। ना बोले तुम ना मैंने कुछ कहा, कलश, संविधान, दरीबा डायरीज़, एडवेंचर्स ऑफ़ हातिम, रज़िया सुल्तान, CID, क्राइम पेट्रोल, सावधान इंडिया जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों के साथ-साथ DD1 के उड़ान, बानो बेगम, आज़ादी की शिखाएँ, आधा गाँव, बीवी नातियों वाली सहित अनेक धारावाहिकों में उनकी सशक्त उपस्थिति रही है।

लखनऊ दूरदर्शन, टेलीफ़िल्मों और टेली नाटकों में भी उन्होंने मुंशी प्रेमचंद की कहानियों से लेकर समकालीन विषयों तक, हर विधा में अपनी अभिनय-दृष्टि और संवेदनशीलता का प्रभावशाली प्रमाण दिया है। कुल मिलाकर, अनिल रस्तोगी जी का कार्य भारतीय अभिनय परंपरा में निरंतरता, विविधता और गहराई का एक समृद्ध दस्तावेज़ है। अभिनय के साथ-साथ वे एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक भी रहे हैं। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (CDRI) में निदेशक श्रेणी के वैज्ञानिक के रूप में सेवा देते हुए उन्होंने लगभग 100 शोध पत्र प्रकाशित किए और मधुमेह पर ICMR के लिए मोनोग्राफ लिखा। सामाजिक सेवा के क्षेत्र में वे हरि ओम सेवा केंद्र और लक्ष्मी नारायण भगवती ट्रस्ट के माध्यम से पिछले कई दशकों से निर्धन रोगियों की चिकित्सा सहायता और शिक्षा के प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। वे हर भूमिका के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं की गहराई को दर्शकों तक पहुँचा सके। आज हम केवल उनके अभिनय या पुरस्कारों को नहीं, बल्कि उनके जीवन की संवेदनशीलता, धैर्य, अनुभव और प्रेम को भी नमन कर रहे हैं।

vehicles entering and exiting the city.

NEWSMAKERS

SHUBHANSHU SHUKLA

Born and brought up in Lucknow, Shubhanshu Shukla created history in 2025 by becoming the first Indian astronaut to visit the International Space Station. His achievement marked a major milestone for India's space ambitions and highlighted Lucknow's contribution to nurturing talent in advanced research, space science and global exploration

ANIL RASTOGI

Veteran theatre and film actor Anil Rastogi achieved a rare milestone in 2025 by performing at 100 theatre venues across India. The achievement highlighted his lifelong dedication to theatre and Lucknow's enduring contribution to India's performing arts tradition

SHARDA NAND TIWARI

Lucknow's Sharda Nand Tiwari finished as the highest goal scorer at the Junior Men's Hockey World Cup 2025. Despite being a defender, he scored eight goals in five matches, playing a key role in India's bronze-medal finish

PROF SONIYA NITYANAND

KGMU VC Prof Soniya Nityanand received Padma Shri in 2025 for contribution to medicine. She played a key role in strengthening medical researc and academic leadership in Lucknow

Hindustan Times

'Beyond the Curtain': Veteran actor Anil Rastogi hits ton of plays

HT Correspondent
letters@htlive.com

Anil Rastogi stars in his 100th play in Lucknow. MUSHTAQ ALI/HT

LUCKNOW : Veteran Indian theatre, television and film actor Anil Rastogi hit the stage for his 100th play on Monday wherein he performed in a play "Beyond the Curtain", which is inspired by Anton Chekhov's classic "The Swan Song", at the Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademi.

The play depicted him not as Vasily from Chekhov's classic, crushed under the weight of age, searching for a final performance within his insecurities. Instead, Rastogi was shown finding a beginning through humility, dedication and love for his craft.

The play depicted the 82-year-old scientist-turned-actor's untold stories, silent struggles, patience and philosophy of his life which continues to burn like a flame. The play, directed by Mumbai-based Lucknowite Muskan Goswami, also wove some instances of plays staged by Rastogi in the past. They included Shakespeare's "Hamlet", "Othello" and "King Lear" apart from "Panchi Ja Panchi Aa", "Daddy" and others. Rastogi has over six decades of theatre experience.

Throughout the performance, he tried depicting a dialogue between the past and the present. The play chronicles his life journey as a scientist and an actor from the lens of an old man who is suffering from dementia.

What he is, however, reminded of is about his distinguished past as a scientist (research on parasitic diseases at CDRI, Fellowship of the National Academy of Sciences) and the journey of a theatre artiste. With a cake marked with the number 100, flickering candles and scattered costumes, he moves between illusions and laughter, awards and disappointments.

Memories of his mother, father, and brother; the companionship of his wife, son, and grandchild; and the support of CDRI and the Darpan Theatre Group lift him out of loneliness and lead him towards the celebration of his 100th play. His shadow, performed by Ambrish Bobby, created an intense visual and sensory experience on the stage.

मंचन

सौवें नाटक में वरिष्ठ रंगकर्मी ने दिखाया अभिनय का जादू

बियॉन्ड द कर्टेन की पिच पर डॉ. अनिल रस्तोगी का शतक

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। दर्शकों से खचाखच भरा संगीत नाटक अकादमी का संत गाडगे प्रेक्षागृह सोमवार शाम गवाह बना एक ऐसे असाधारण रंगकर्मी के नाटकों के शतक का जिन्होंने अपने जीवन के 64 वर्ष रंगमंच को समर्पित कर दिए। 82 की उम्र में भी नवजवानों जैसा जोश और मन मोह लेने वाली अदायगी पर तालियों का उत्सव बता रहा था कि डॉ. अनिल रस्तोगी रंगमंच के लिए नायाब हीरा हैं। मुस्कान गोस्वामी के निर्देशन से सजे नाटक बियॉन्ड द कर्टेन डॉ. अनिल रस्तोगी की रंगयात्रा में मील का पत्थर साबित हुआ।

नाटककार चेखव की कहानी स्वान सॉन्ग से प्रेरित इस नाटक में मुस्कान गोस्वामी ने कई प्रयोग किए। मूल कहानी के पात्र वैसली की जगह उन्होंने डॉ. अनिल रस्तोगी के भीतर के वैज्ञानिक और रंगकर्मी को मंच पर उतारा। नाटक का पुनर्लेखन किया यश योगी ने। वैसली का मूल किरदार जहां निराशावाद में डूब जाता है तो वहीं डॉ. अनिल रस्तोगी की कहानी इससे अलग दिखाई गई। डिमेंशिया के हल्के असर के बावजूद वे इस उम्र में भी कला और अपने काम से प्रेम करते हैं।

अभिनय करते डॉ. अनिल रस्तोगी। -संवाद

अंबरीष बॉबी ने पर्दे के पीछे से डार्क शेड में डॉ. अनिल के जवानी के दिनों के किरदार को निभाया। उनके माध्यम से डॉ. अनिल के 64 वर्ष की यात्रा को मंच पर उतारा गया जिसे दर्शकों ने दिल थामकर देखा और सुना।

संस्था दर्पण की ओर से प्रस्तुत इस नाटक के दौरान दर्शकों के साथ बैठे मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा भी नाटक के दौरान टस से मस नहीं हुए। अंत में अभिनेता अनिल व वैज्ञानिक डॉ. अनिल रस्तोगी के भीतर के दोनों रूप एक-दूसरे में विलीन होकर बुढ़ापे को उत्सव में बदल देते हैं। मंचन से पूर्व वरिष्ठ रंगकर्मी गोपाल सिन्हा ने नाटक की भूमिका के बारे में बताया।

मंचन | 82 साल के वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी ने सौवें नाटक में अभिनय किया, दर्पण संस्था की ओर से बियॉन्ड द कर्टेन नाटक हुआ

आंसू, मुस्कान और भ्रम से दिखाया अभिनय का आसमान

- अनिल रस्तोगी ने जुनूनी अभिनेता की भूमिका की
- नायक की परछाई बन अम्बरीश बॉबी भी छाए

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। 82 साल के वरिष्ठ रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी ने सोमवार को अपने 100 वें नाटक में अभिनय कर सशक्त छाप छोड़ी। दर्पण संस्था की ओर मंचित बियॉन्ड द कर्टेन नाटक का मंच संत गाडगे जी महाराज प्रेक्षागृह में मुस्कान गोस्वामी के निर्देशन में किया गया। जहां अनिल रस्तोगी ने एक जुनूनी अभिनेता की प्रभावी भूमिका दर्शकों के सामने रखी।

नाटक में जुनूनी अभिनेता रात के सन्नाटे में एक छोटे कस्बे के खाली थिएटर में भटकते हुए अपनी स्मृतियों की अद्भुत यात्रा पर निकलता है। डिमेंशिया की हल्की छाया के बावजूद उसके भीतर से उभरता है एक वैज्ञानिक का उजला अतीत, एक रंगकर्मी का जगमगाता सफर और एक परिवार का स्नेहिल आलिंगन। 100 नंबर वाला केक, मोमबत्तियां और बिखरे कॉस्ट्यूम्स के बीच वह कभी भ्रमों, कभी हास्य, कभी पुरस्कारों और कभी जीवन के उतार-चढ़ाव को जीता है। मां, पिताजी, भाई की यादें, पत्नी, बेटे, पोते, सीडीआरआई तथा दर्पण थिएटर ग्रुप का समर्थन उसे अकेलेपन से उठाकर उसके 100वें नाटक का जश्न मनाने ले जाता है जहां उसे दर्शकों की तालियों में प्रेम और

दर्पण संस्था की ओर मंचित बियॉन्ड द कर्टेन नाटक में अभिनेता अनिल रस्तोगी।

अस्तित्व का अर्थ मिलता है।

नाटक का काव्यात्मक व प्रतीकात्मक पहलू यह रहा कि कि नायक की परछाईं अम्बरीश बॉबी द्वारा एक काव्यमय शैली में निभाई गई है, जो मंच पर एक गहरा दृश्य-सम्वेदनात्मक अनुभव रचती है। यह परछाईं कभी स्मृति बनकर उभरती है, कभी आत्मा की आवाज, कभी अनकहे भावों का रूप, जिन्हें शब्दों में पिरोना संभव नहीं। अंत में अभिनेता अनिल और वैज्ञानिक अनिल दोनों रूप एक-दूसरे में विलीन होकर बुढ़ापे को उत्सव में बदल देते हैं। नाटक जो बीत गई सो बात गई गाते हुए जीवन की निरंतरता, कला की अमरता का संदेश देता है।

'बियांड द कर्टन' से डा. अनिल रस्तोगी के नाटकों का शतक

एसएनए में नाटक बियांड द कर्टन का मंचन करते अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी • जागरण

जासं • लखनऊ: कुछ कहानियां लिखी नहीं जातीं, वे जी ली जाती हैं। कुछ प्रदर्शन गढ़े नहीं जाते, वे जीवन की शांत साहसिक यात्रा से जन्म लेते हैं। "बियांड द कर्टन" ऐसा ही एक नाटक है, जो डा. अनिल रस्तोगी के कलात्मक सफर में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। डा. रस्तोगी ने इसी के साथ नाटकों के मंचन का शतक पूरा किया। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में सोमवार को नाटक के साक्षी बने दर्शकों ने तालियों से डा. अनिल की रंगमंचीय यात्रा का स्वागत किया। बियांड द कर्टन केवल कल्पना से नहीं जन्मा, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति से हुई मुलाकात से उपजा, जिसकी जिंदगी ने विज्ञान और कला, अनुशासन और जुनून, इन सबके बीच की सीमाओं को मिटा दिया। वह व्यक्ति हैं डा. अनिल रस्तोगी। यह नाटक एंटोन चेखव के 'स्वान सांग' से प्रेरित एक गहन, संवेदनशील और प्रेरणादायक एकल-अभिनय नाटक है। इसमें डा. रस्तोगी की संक्षिप्त रंगमंचीय यात्रा भी दिखाई गई। उनके पिछले कुछ नाटकों को स्पर्श करते हुए 100वें नाटक की पटकथा आगे बढ़ी। मां, पिताजी, भाई की यादें, पत्नी, बेटे, पोते का साथ और केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ) व दर्पण थिएटर ग्रुप का समर्थन भी इसका हिस्सा बना।

Pics: Aditya Yadav

A heartwarming & heartbreaking tale

Dolly Rastogi

Gopal Sinha

The play *Daddy*, directed by **Surya Mohan Kulshrestha**, was recently staged at Sangeet Natak Akademi. Inspired by the play *Le Père* by French writer Florian Zeller, the production deeply moved the audience with the emotional journey of a father suffering from dementia.

The play delved into the life of a devoted daughter and her aging father. While the daughter grapples with her own dreams, love, and aspirations, she also shouldered the weighty responsibility of caring for her ailing father.

The unique perspective of the play took the audience on an immersive exploration of dementia's effects, revealing how memory shapes our understanding of the world and those around us. As the father's mind drifts back to his childhood, his late mother becomes his sole refuge.

Silence took over the hall, and the emotionally moved audience stood to applaud. **Dr Anil Rastogi**, who portrayed the role of the father, was highly appreciated for his powerful performance.

— Manas Mishra

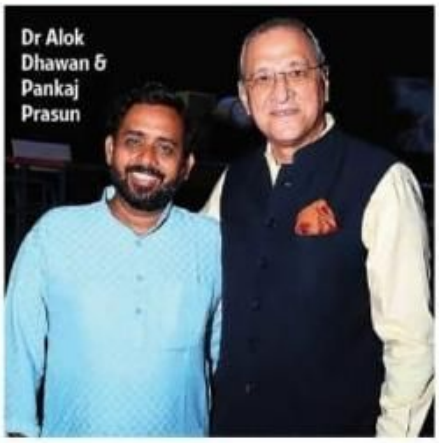

Dr Alok Dhawan & Pankaj Prasun

Dr Mithilesh & Mandvi Singh

Tariq Khan

Kishor Kumar

Dhruv and Tanya Rishi

Arushi Singh

KumKum Dhar

Bhanu and Preeti

Anil Rastogi credits wife for perfection in dialogue delivery

▶Continued from P 1

Born and brought up in Lucknow, Rastogi did his graduation and post-graduation from Lucknow University. He has also acted in OTT series and 70 films. An award winning actor, he is known for his roles in TV serial 'Udaan' and movies 'Ishaqzaade' and 'Na Bole Tum Naa Maine Kuch Kaha'.

Rastogi was 18 when he was drawn towards acting while watching plays. "My maternal uncle Tony Babu used to act in plays and he inspired me to act. He introduced me to several theatre artists and directors," he told TOI. While pursuing higher education in science, he continued to struggle for a break in theatre and finally got a major

Ajay Kumar

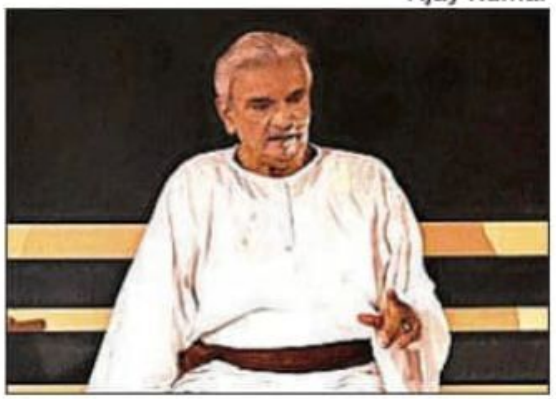

Veteran actor Anil Rastogi

role in 1961 in the play `Noor Jahan'. In 1962, Rastogi was appointed scientist at the Central Drug Research Institute in Lucknow, and in the same year, got married to Sudha, who played a stellar role in his acting career. He gives credit for perfection in his dialogue delivery, choice of excellent plays and support to his wife. "The motivation to act, helping me in learning dialogues and choosing plays is done by my wife," he said. "In 1964, I met Rajeshwar Bachchan ji who taught me all the nuances of theatre and I did many plays with him," he recalled. Rastogi also forayed into radio plays in 1971.

"I had to work hard to strike a balance between my profession and passion. For my favourite play 'Yahudi Ki Ladki', I had to memorise long dialogues and deliver them as it was performed at a Parsi theatre. Another tough play, which is close to my heart, was 'Sakharam Binder'. It was a very bold play with intimate scenes, but I played the role in a way that did not make the public uncomfortable," Rastogi said. Rastogi acted in 55 plays while he was with CDRI and staged 45 plays after retiring from the institute in 2003.

अनिल रस्तोगी सिनेमा अभिनेता, रंगकर्मी

लखनऊ के एक प्रतिष्ठित रस्तोगी व्यापारी परिवार में जन्म और यहीं से शिक्षा दीक्षा ग्रहण किया पिता जगमोहन रस्तोगी बाबूजी चाहते थे कि बेटा पढ़ लिख कर बड़ा वैज्ञानिक बने। उनके सपनों को पूरा करने के साथ ही थियेटर और कला के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले डा. अनिल रस्तोगी से फोटो वायॅस पत्रिका के लिए बात की है सम्पादक मंजू श्रीवास्तव व अनुपम घोष, लेखक व निदेशक ने।

रस्तोगी इण्टर कालेज में आठवीं तक की पढ़ाई की और फिर नवीं से दूसरे स्कूल से इण्टर तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय में बीएससी और एमएससी और 1964 में सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीटयूट में वैज्ञानिक की नौकरी साथ ही माइक्रोबायलॉजी में पीएचडी की डिग्री प्राप्त कर डा. अनिल रस्तोगी ने नौकरी के साथ साथ थियेटर को अपनी कर्मभूमि बनाया। रस्तोगी इण्टर कॉलेज छोड़ने के पीछे का कारण अनिल रस्तोगी कभी नहीं भूलते उनके एक शिक्षक जो पी.टी. व आर्ट पढ़ाते थे। इम्तिहान के समय जब अनिल रस्तोगी पी.टी. की परीक्षा देकर लौट रहे थे कि कुछ दोस्तों ने उनसे पूछा कि टीचर ने क्या कराया इस दृश्य को टीचर दूर से देख रहे थे इनकी गलती न होते हुए भी उन्होंने इनको बुलाकर पीटा यह रोते अपने घर गये और अपने बड़े भाई से कहा कि वह टीचर की शिकायत प्रधानाध्यापक से करें। भाई साथ में गये पर प्रधानाध्यापक ने उनको समझा बुझाकर वापस कर दिया उस समय अनिल रस्तोगी ने जिद्द पकड़ ली की वह रस्तोगी स्कूल में नहीं पढ़ेंगे। स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों में भी वह भाग लेते थे। वर्ष 1964 में दर्पण संस्था से जुड़े, अभी तक आप लगभग एक हजार थियेटर के शो कर चुके हैं। आपके बड़े भाई चन्द्र किशोर रस्तोगी ने आपके कैरियर को नई दिशा देने का

कार्य किया। आप अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता भाई और पत्नी को देते हैं। डा. रस्तोगी का कहना है कि विज्ञान और थियेटर एक दूसरे के पूरक है थियेटर से आत्मविश्वास आता है। और सीडीआरआई में नौकरी के दौरान मैने अनुभव किया कि जो भी प्रस्तुतिकरण मैने विज्ञान के क्षेत्र में किया उसमें मेरा थियेटर का अनुभव बहुत काम आता रहा। अनिल रस्तोगी वह वाकया कभी नहीं भूलते जब उनके पिताजी की तबीयत काफी खराब थी और

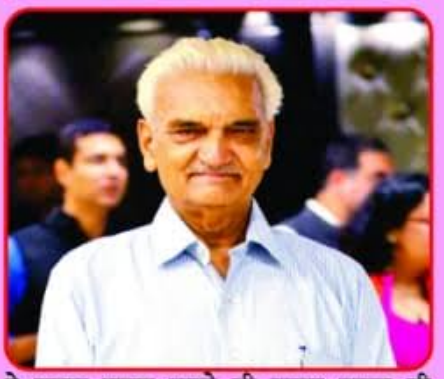

वे उनका ख्याल रखने की बजाय नाटक की रिहर्सल करने में व्यस्त थे। एक दिन उनके पिता ने कहा मै मर जाऊंगा और तुम थियेटर करते रहना। यह बात मेरे दिल में इतना घर कर गयी कि मैने सीडीआरआई और थियेटर दोनों से छुट्टी लेकर बाबू की देखभाल की। अनिल रस्तोगी ने थियेटर के साथ ही कई फिल्में जिनमें मुख्य रूप से इश्कजादे, द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर, मै मेरी पत्नी और वो, जेड प्लस शामिल है आपने अपने कैरियर की शुरूआत 1989 में टीवी सीरियल उड़ान में एसएसपी के किरदार से किया इसके पूर्व आप 1970 में दर्पण संस्था के सचिव भी रहे। आपकी फिल्म मुक्तिभवन को देश विदेश में अभी तक 32 आवार्ड मिल चुके है जापान में तो यह 100 दिन तक लगी रही। आपके पसंदीदा हीरो अशोक कुमार और हीरोइन वैजयंती माला और नूतन है। सोशल मीडिया के बारे में आपकी राय है कि इसे सकारात्मक लेना चाहिए यह प्रचार का एक बेहद अच्छा माध्यम है। आप शाकाहारी है और आलू आपको बेहद पसन्द है। खेलों में बैडमिन्टन आप खेलते थे और कई बैडमिंटन के टूर्नामेंट आप ने आयोजित कराये। अब आपको क्रिकेट देखना पसन्द है।

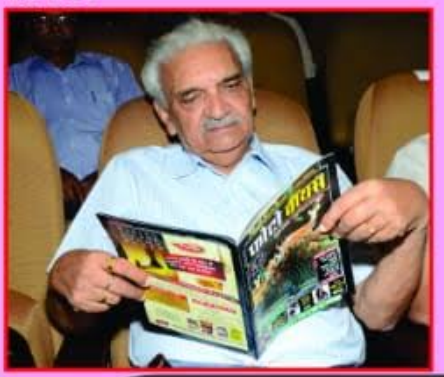

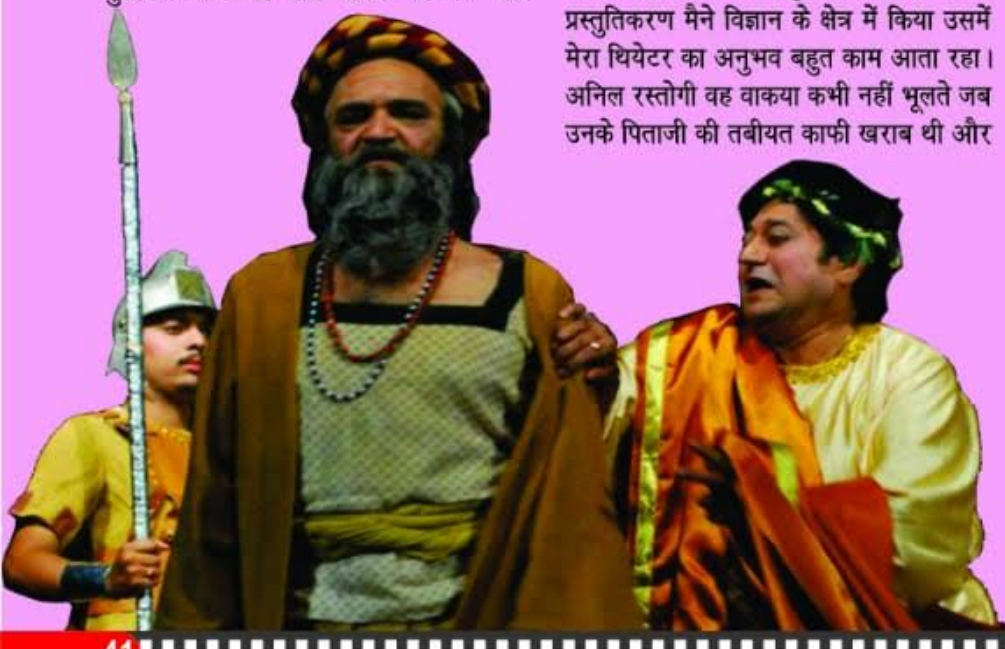

31.12. TOI 2022.

रेडियो सिटी जागरण सिटी

सिटी की शान

जुनून रहा थियेटर

सीडीआरआई से सेवानिवृत्त साइंटिस्ट, अनिल रस्तोगी जितना अपने वैज्ञानिक के रूप में उम्दा मिसाल हैं, उतनी ही शोहरत उन्हें रंगकर्मी के रूप में भी हासिल है। बकौल रस्तोगी जी-

1 आम आदमी से जुड़े मुद्दों पर दर्शकों से सीधे संवाद का थियेटर सबसे पावरफुल मीडिया है। इससे मैं एक जुनून की तरह जुड़ा।

2 इस क्षेत्र में आने पर आदरणीय संतराम शुक्ल जी, राधेश्याम जी से काफी प्रेरणा मिली। और भी बहुत से लोगों से सीखने को मिला।

3 थियेटर में आज अच्छी स्क्रिप्ट का अभाव, दर्शकों की कमी वगैरह बहुत खलती है। कुछ नये लोग इसे महज टीवी और फिल्मों में जाने का माध्यम बनाकर आ रहे हैं।

4 1962 में जब लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था तभी कुछ अच्छा थियेटर देखने को मिला। तभी इसमें खुद को अभिव्यक्त करने की संभावना दिखी और इससे जुड़ गया।

5 थियेटर और साइंटिस्ट की नौकरी, मेरे लिए दोनों महत्वपूर्ण रहे। दोनों को ही पूरा समय दिया, ये कभी एक दूसरे के आड़े नहीं आये। जहां चाह वहीं राह होती है।

● अजय शुक्ला

Radio City ty Bjao 104.8 FM की संयुक्त प्रस्तुति

दैनिक जागरण बदलते जमाने का अखबार

यह साक्षात्कार आज आप रेडियो सिटी पर भी सुन सकते हैं।

THE Newsmakers FROM LUCKNOW

Shradhanand Tiwari

Shradhanand Tiwari, the son of an escort driver of Lucknow DM, was India's spearhead at the junior Hockey World Cup quarter final match against Belgium in Bhubaneswar. He converted a penalty corner to score the only goal of the match to take his team into the semi-finals.

Himanshu Bajpai & Pragya Sharma

The daastango duo found mention in PM Modi's Mann ki Baat. During the virtual address, Modi mentioned the storytelling of Rani Durgawati, narrated by Bajpai and Sharma at one of their events in Madhya Pradesh. Defence minister Rajnath Singh also lauded them for keeping the art form alive.

Anil Rastogi

Celebrated theatre and film artist and ex-CDRI scientist Anil Rastogi was conferred with the prestigious Rashtriya Kalidas Samman by the Madhya Pradesh government. Rastogi started his journey with the play 'Noor Jahan' in 1962 and has been working in the field of theatre and cinema.

Scanned with OKEN Scanner

INEXT 29.8.16

शहर के कलाकार की विदेशों में धूम

SPECIAL

» शहर के अनिल रस्तोगी की फिल्म इटली और साउथ कोरिया के फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (28 Aug): शहर के जाने-माने रंगमंच कर्मी और फिल्मी दुनिया में अपने अभिनय का लोहा मनवाने वाले डॉ. अनिल रस्तोगी एक बार फिर अपने अभिनय को लेकर चर्चा में हैं. जिस फिल्म में उन्होंने काम किया है, वो फिल्म अब इटली और साउथ कोरिया में होने वाले सबसे बड़े फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी.

फिल्म आठवण के लिए भी जीता पुरस्कार

कलाकार अनिल रस्तोगी की आज अपनी अलग शख्सियत है. फिल्म मुक्ति भवन में वो मुक्ति भवन के केयर टेकर के किरदार में नजर आएंगे, जो बनारस पर आधारित फिल्म है. हाल ही में अभिनेत्री रेणुका शहाणे के निर्देशन में बनाई गई उनकी मुख्य भूमिका वाली मराठी फिल्म आठवण नासिक इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार जीत चुकी है. इससे पहले अनिल रस्तोगी सुपरहिट फिल्म इश्कजादे में अभिनेता अर्जुन कपूर के दादा की भूमिका निभा चुके हैं. इसके अलावा वह मैं मेरी पत्नी और वो समेत कई नाटकों में दमदार अभिनय कर चुके हैं.

अभिनेता अनिल रस्तोगी.

फिल्म रिलीज से पहले ही चर्चा में

ऐसे में अभिनेता अनिल रस्तोगी की फिल्म मुक्ति भवन रिलीज होने से पहले ही चर्चा में आ गई है. 23 अगस्त को हुए मुंबई प्रीमियर के बाद इस फिल्म को सेकेंड इंटरनेशनल वेनिस फिल्म फेस्टिवल में दिखाया जाएगा. इसके अलावा इसको साउथ कोरिया के बुसान फिल्म फेस्टिवल में भी दिखाया जायेगा.

मुक्ति भवन में है दमदार किरदार

अभिनेता अनिल रस्तोगी फिल्म मुक्ति भवन में मकान के केयर टेकर की भूमिका में नजर आएंगे. जहां पर लोग मोक्ष की तलाश में आते हैं. उन्होंने बताया कि इस फिल्म में उनका किरदार बहुत ही डिफरेंट है. उनके किरदार में कोई इमोशन नहीं है, लेकिन कहीं न कही मुक्ति भवन में मोक्ष के लिए आने वाले लोगों से उनका इमोशनल जुड़ाव हो जाता है. अनिल ने बताया कि इसके अलावा वो तिग्मांशु धूलिया की एक फिल्म कर रहे हैं.

डा० अनिल रस्तोगी को मिला डीडी यूपी लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान

डेस्क

अभिनेता डॉ अनिल रस्तोगी का कहना है कि जब कोई भी पुरस्कार मिलता है तो उसकी खुशी होना स्वाभाविक है। मैंने लंबे समय से टेलीविजन में काम किया यह उसका प्रतिफल है ।मै टीवी में काम करता था इसी वजह से फिल्मों में काम मिला। आज भी मेरा टेलीविजन के प्रति उतना ही लगाव है।

इस अवसर पर प्रसार भारती बोर्ड के अध्यक्ष नवनीत कुमार सहगल ने कहा कि दूरदर्शन लखनऊ की 50 वर्षों की यात्रा यादगार रही है। दूरदर्शन ने अपने प्रसारण के जरिए समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया और प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रस्तुत किया है। लोहिया पार्क के मुक्ताकाशी मंच पर दूरदर्शन के 50वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में दूरदर्शन की महानिदेशक कंचन प्रसाद ने कहा कि यह केंद्र केवल समाचार एवं कार्यक्रम प्रसारित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि जनता के जीवन, संस्कृति एवं विचारों का सजीव प्रतिबिंब है। उप महानिदेशक एवं केंद्राध्यक्ष अनुपम स्वरूप ने कहा कि

पेशे से वैज्ञानिक एवं थियेटर, टेलीविजन ,सिनेमा ,और रेडियो, मनोरंजन की चारों विधाओं में पारंगत 70 फिल्में ,13 वेब सीरीज ,और अनेकों धारावाहिकों में 500 से अधिक एपिसोड में काम करने का अनुभव रखने वाले अभिनेता डॉ अनिल रस्तोगी 81 वर्ष की उम्र में भी पूरी तरह सक्रिय रहते हैं। वह 70 वर्ष की उम्र में मुंबई में स्थापित हुए ,जब लोग मुंबई से वापस लौटते हैं। वह अपने किरदार में दृश्य का स्थिर होना देखते हैं। उन्हें रोल छोटा या बड़ा कोई मायने नहीं रखता है।

वर्ष 1975 से वर्ष 2024 के लंबे सफर में दूरदर्शन यूपी के कार्यक्रमों की रूपरेखा में भी परिवर्तन हुआ और तकनीक व तकनीकी सुविधाओं में भी। हमारा यह केंद्र जनमानस को समर्पित, सूचना, शिक्षा, संस्कृति और मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम रहा है। हम इस विरासत को और समृद्ध बनाने का संकल्प लेते हैं। कार्यक्रम प्रमुख आत्म प्रकाश मिश्र ने कहा कि पिछले 50 वर्षों में दूरदर्शन लखनऊ ने न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि पूरे देश में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। इस अवसर पर आकाशवाणी लखनऊ के प्रथम समाचार वाचक 97 वर्षीय यज्ञदेव पंडित, कार्यक्रम अधिशासी (समन्वयक), श्याम नारायण चौधरी, कार्यक्रम के प्रस्तुतकर्ता ध्रुवचंद, नलिनी श्रीवास्तव, पीके तिवारी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

लोहिया पार्क में कवियों ने अपनी पंक्तियों से महफिल सजाया। कवि सर्वेश अस्थाना ने अपनी कविता सुनाई–रिश्तों में तकरार बहुत है, लेकिन इनमें प्यार बहुत है, सारी दुनिया खुश रखने को बस अपना परिवार बहुत है। चंद्रशेखर वर्मा ने पढ़ा– तेरी तस्वीर का जब दाम लगाया जाए...। अज्म शाकिरी ने सुनाया– लाखों सदमें ढेरों गम फिर भी नहीं हैं आंखे नम...। अन्य कवियों ने भी रचनाएं सुनाईं। समारोह का आकर्षण नीतीश और सचिन बैंड की मनमोहक संगीत प्रस्तुति रही, जिसने संगीतमय संध्या में श्रोताओं को आनंदित किया।

दैनिक जागरण लखनऊ, 29 फरवरी, 2024

जागरण

छह दशक से कर रहे नाटक, अभिनय को मिलेगा बड़ा सम्मान

जासं, लखनऊ : केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ), लखनऊ से बायोकेमिस्ट्री के प्रमुख और निदेशक ग्रेड वैज्ञानिक पद सेवानिवृत्त डा. अनिल रस्तोगी राजधानी ही नहीं, प्रदेश के वरिष्ठतम रंगकर्मियों में एक हैं। वह 80 वर्ष से अधिक की उम्र में भी नाटक कर रहे हैं और मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने विज्ञानी और रंगकर्मी के रूप में दोनों यात्राएं साथ-साथ कीं। रंगकर्म के पथ पर उनकी यात्रा छह दशक से अधिक की हो चुकी है। उनके अभिनय को अब केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार के रूप में बड़ा सम्मान मिलने जा रहा है।

डा. रस्तोगी का वर्ष 1961 में रंगकर्म से जुड़ाव हुआ। उन्होंने बताया कि मामाजी नाटक करते थे, उनसे नाटक में लेने को कहा। पहला नाटक नूरजहां किया। लोगों की वाह-वाही और प्रोत्साहन से चस्का लग गया। वर्ष 1962 में सीडीआरआइ ज्वाइन किया। पहले बाहर नाटक करता था, बाद में सीडीआरआइ के लिए भी नाटक किए। वर्ष 1972 में दर्पण संस्था से जुड़ने के बाद पूरे देश में नाटक किए। वह 1961 से सक्रिय नाट्य संस्था दर्पण के लगभग 38 वर्षों तक सचिव रहे। उन्होंने रेडियो, टीवी और फिल्मों में भी अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं। अपने अभिनय, प्रबंधन कौशल व टीम लीडर के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। भारतवर्ष के लगभग सभी चर्चित रंग महोत्सव जैसे भारत रंग महोत्सव, थिएटर ओलिंपिक, कालिदास नाट्य समारोह, भारत भवन नाट्य समारोह, विभिन्न जोनल केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नाट्य समारोह में अपने नाटकों व अभिनय के साथ उपस्थिति दर्ज कराई।

डा. अनिल रस्तोगी विज्ञान और कला का अनूठा संगम व बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्हें अपने शोध कार्य के लिए राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की फेलोशिप व कला के क्षेत्र में अन्य पुरस्कारों के अतिरिक्त यश भारती, उप्र संगीत नाटक अकादमी की रत्न सदस्यता व अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। डा. रस्तोगी को मध्य प्रदेश सरकार का प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान भी मिल चुका है।

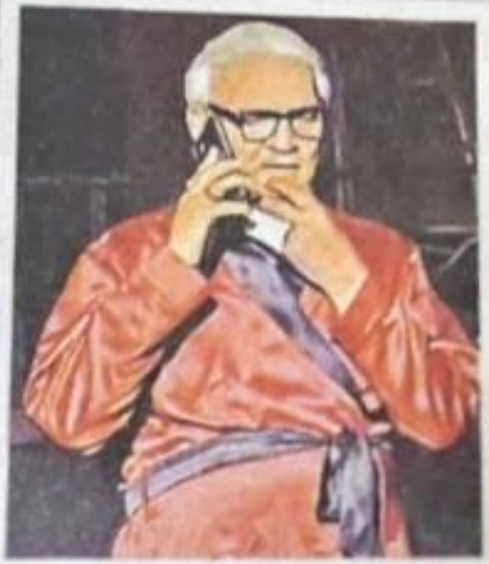

- डा. अनिल रस्तोगी ने विज्ञानी व रंगकर्मी के रूप में साथ-साथ की यात्राएं
- बहुमुखी प्रतिभा के हैं धनी मिला चुका है प्रतिष्ठित कालिदास सम्मान भी

<< एक नाटक में अभिनय करते वरिष्ठ रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी • सौजन्य स्वयं

28.02.2024

अस्सी की उम्र में कायम बीस की उम्र वाला जोश

अभिनेता व वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी ने केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिलने पर जताई खुशी

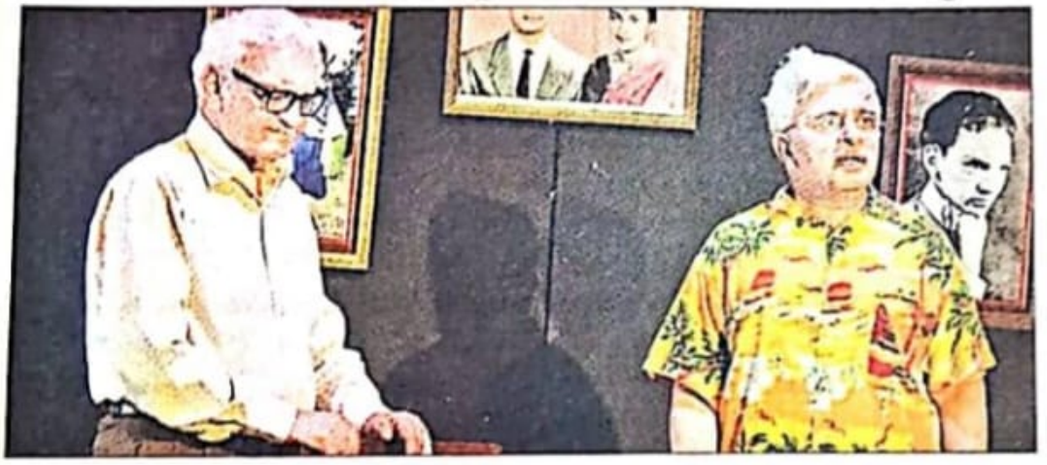

ताज महोत्सव में बीते सोमवार को नाटक स्वाहा के मंचन के दौरान अनिल रस्तोगी। -स्रोत स्वयं

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। डॉ. अनिल रस्तोगी वैज्ञानिक बाद में बने, पहले उन्होंने अभिनय की दुनिया में कदम रखा। 80 वर्ष की उम्र में भी लगातार अभिनय की दुनिया में आज भी सक्रिय हैं। कभी टेलीविजन पर आने वाले विज्ञापनों में तो एक के बाद एक फिल्मों और वेबसीरीज में लगातार दिखाई दे रहे हैं।

उन्होंने मंगलवार को केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिलने पर खुशी जाहिर की और कहा कि यह तो छह दशक पुराना जुनून है। डॉ. अनिल रस्तोगी बताते हैं कि 1961 में पहली बार मंच पर प्रवेश किया।

मामाजी नाटक करते थे। उनसे नाटक में लेने को कहा, पहला नाटक मिला नूरजहां। इसके बाद से तो बस तालियां ही सुनाई देती रहीं और रंगमंच दिखता रहा। कहते हैं कि 1962 में सीडीआरआई जॉइन किया था। बाद में संस्थान के लिए भी नाटक किया। अब तो रिटायर हो चुका हूं, पर बीते दिनों अपने संस्थान में स्वाहा नाटक का मंचन किया था।

अनिल रस्तोगी ने बताया कि नाट्य संस्थाओं में सिरमौर दर्पण संस्था से 1972 में जुड़ा। उसके बाद तो देशभर में नाट्य मंचन का मौका मिला। फिल्मों में इश्कजादे से बड़ा ब्रेक मिला। अनिल रस्तोगी के मुताबिक, पहली फिल्म सुधीर मिश्रा की ये वो मंजिल तो नहीं... थी।

1972 में दर्पण संस्था से जुड़े

उड़ान सीरियल में आने के बाद उन्हें पहचान मिली तो फिल्म इश्कजादे में बड़ा ब्रेक मिला। विकास दुबे पर आधारित वेब सीरीज बिकरू की। अक्षय कुमार जैसे अभिनेता उनके द्वारा 1976 में अभिनीत नाटक पंछी जा पंछी आ में निभाए उनके किरदार को निभा चुके हैं।

अब तक मिले पुरस्कार

■ 1984 में यूपी संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड ■ 2007 यूपी संगीत नाटक अकादमी फेलो ■ 2016 यश भारती ■ 2019 कालीदास सम्मान ■ 2024 पाटलिपुत्र लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड ■ 1999 नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस आफ इंडिया की फेलोशिप व अन्य पुरस्कार।

अमर उजाला my city
बुधवार • 28.02.2024
amarujala.com/lucknow

2011

नौ रत्न

कुछ बातें उनके बारे में जिन्होंने वर्ष 2011 में अपनी उपलब्धियों से न केवल अपने परिवार का नाम रोशन भी डाल दिए गौरव के अमिट क्षण। वर्ष 2011 में लोकक मालिनी अवस्थी, वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी, श्रीवास्तव, डॉ. सुनील प्रधान, डॉ. चंद्र शेखर नौटियाल मा वाली रश्मि तिवारी सुर्खियों में रहे।

वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी की ऊर्जा और उनका समर्पण किसी भी युवा रंगकर्मी के लिए भी एक मिसाल है। उन्होंने वर्ष भी कई नाटक किए, जिसमें 'आइनों का कोरस' खासा चर्चित रहा। वर्ष भर व सक्रिय रहे। न केवल कार्यक्रमों का आयोजन किया बल्कि अभिनय भी किया। एक के बाद एक करके तीन नाटकों में उन्होंने अभिनय किया। 'दर्पण रंगमंडल' के स्वर्ण जयंती समारोह के अंतर्गत उन्होंने एक संगोष्ठी जयशंकर प्रसाद सभागार में आयोजित की, जिसमें 'लखनऊ की रंगयात्रा' पर प्रकाश डाला गया। फिल्म 'मोनिका' में भी वह दिखाई दिए। इसमें उन्होंने अभिनेत्री दिव्या दत्ता के भूमिका अदा की थी।

डॉ. अनिल रस्तोगी, वरिष्ठ रंगकर्मी

कुछ समय पहले की बात है। एलडीए कोचिंग सेंटर में अभ्यास करते समय प्रशिक्षक गोपाल सिंह ने अपने एक साथी की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह बच्चा एक दिन देश के लिए खेलेगा। बात सच साबित हुई और क्रिकेटर अक्षदीप नाथ का चयन इस साल भारतीय अंडर-19 टीम में हो गया। चार देशों के टूर्नामेंट में अक्षदीप ने आस्ट्रेलिया और श्रीलंका जैसी मजबूत टीमों के खिलाफ अपने बल्ले से कई मैच जिताऊ पारी खेलकर चयनकर्ताओं को प्रभावित किया। एक मैच में वह 'मैन ऑफ द मैच' भी रहा। अक्षदीप ने उत्तर प्रदेश की अंडर-19 टीम की कप्तानी करते हुए इतिहास बनाया और पहली बार टीम ने प्रतिष्ठित वीनू मांकड ट्राफी अपने नाम की।

अक्षदीप नाथ, युवा क्रिकेटर

लखनऊ के लिए गौरव का एक बड़ा कारण ब्राजील से आया। ब्राजील की 'यूनीवर्सिटी ऑफ साओपोलो' में एमएस-सी मास कम्यूनिकेशन के कोर्स में अब साइंटून भी शामिल होंगे। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के मेडिसिनल एंड प्रोसेस केमिस्ट्री डिवीजन के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पीके श्रीवास्तव द्वारा इजाद 'साइंटून' विधा को ब्राजील अमेजन जंगलों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए भी इस्तेमाल करेगा। साइंटून को मेट्रो, मॉल व अन्य स्थानों पर लगाया जाएगा। डॉ.श्रीवास्तव को ब्राजील ने अतिथि शिक्षक भी नियुक्त किया है। अब डॉ. श्रीवास्तव ब्राजील के लोगों को साइंटून विधा के जरिए जंगल बचाने के प्रति जागरूक करेंगे।

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव, वैज्ञानिक

एमबीबीएस में टॉप करने वाली रश्मि चिकित्सा विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में सुर्खियों में रहीं। उन्हें बारह स्वर्ण पदक, चार सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर और एक बुक प्राइज से अलंकृत किया गया। कानपुर निवासी रश्मि के पिता राकेश कुमार तिवारी व्यवसायी हैं। रश्मि को पढ़ाई के अलावा कविताएं लिखने का भी शौक है। फिलहाल वो पीजी में दाखिले की तैयारी कर रही हैं।

रोड टू सक्सेस

मैने कभी टाइम टेबल बनाकर पढ़ाई नहीं की क्लास करना और घर आकर उसे दोहरा लेना, सफलता का राज है। तमाम व्यस्तताओं के नियम कभी नहीं तो तक पढ़ तक सोना लेकि

LUCKNOW, SUNDAY, FEBRUARY 10, 2019, 4 PAGES | Entertainment & Promotional Features

www.hindustantimes.com | www.facebook.com/HTcity | twitter.com/htshowbiz

hindustantimes

htcity LUCKNOW

'GOOD CONTENT, GREAT BOX OFFICE GO HAND IN HAND' >>P4

DHEERAJ DHAWAN/HT

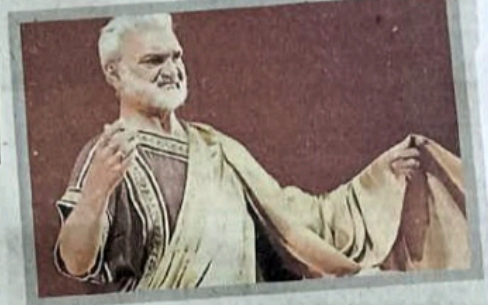

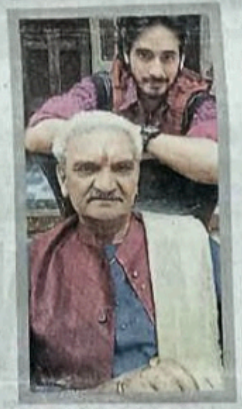

LIVING LEGEND

THIS SILVER-HAIRED SCIENTIST STORMS SILVER SCREEN

Stills from Ishaqzaade, Crime Patrol, play Barefoot in Athens and TV serial Na Bole Tum Na Maine Kuch Kaha

HT City is running a series, 'Living Legend', every Sunday, featuring luminaries of the state, whose decades of contribution in theatre, films, painting, music and other performing arts, has won them much acclaim. If you would like to have one such indefatigable spirit featured, write in to saron@hindustantimes.com

Deep Saxena

At 70, when most people kick up their heels, veteran actor Dr Anil Rastogi headed to Mumbai to pursue his hobby, now his profession: acting. Riding the crest of success of 'Ishaqzaade', he lived there for four years and did multiple films, TV serials and ad films.

The scientist did his first play at the age of 20, first film and TV serial at 44 and became a household name at 69. Interestingly, the same year he celebrated the golden jubilee of his marriage.

Running 76, he has 32 films, 92 plays with nearly 1,000 stage shows, multiple TV serials, advertisements and short films to his credit. "I never planned to become an actor. Becoming a scientist and researching was my aim, which I did during my service period. Acting happened, which gave me fame at the national and international level. Now, I am enjoying it and am in the best phase of my acting career," he said.

MAKING OF AN ACTOR

He started working as a scientist in 1963. "Before that I had never acted. In 1964, there was an exhibition which I was coordinating. For the first lot of appreciation, which inspired me. The same director started promoting me. KV Chandra was a big director then and in his play 'Jai Somnath', I got the role of chowkidar, where I had to just stand on the gate but as fate would have it, I graduated to becoming the main villain. It was in this play that I got noticed for the first time. My theatre guru was late Rajeshwar Bachchan," he tells.

After inception of Darpan theatre group in 1971, he did his first play as lead BV Karanth's 'Haya Vadan' (1972) with Vijay Vastav and Shobhna Jagdish. "I started doing plays with the group and was made its treasurer. I became Darpan's secretary in 1978, which I continued to be till 2017. I worked a lot in it and took Darpan across the country. All top directors have done plays for us."

He has done over 400 shows of the play 'Panchi Jaa Panchi Aa' directed by comedy king Dina Nath, an adaption of film 'Boeing Boeing'. "Later, film 'Garam Masala' starring Akshay Kumar and John Abraham was made on it. I played a Casanova in it who was flirting with three air hostess," he said with a smile.

Rastogi takes inspiration from theatre veteran Raj who is still acting and going strong.

For Lucknow Doordarshan, he did plays 'Dani Moor Dhwaj' (playing Arjun), 'Jahan Chah Wahan Raah', 'Biwi Natiyonwali' and 'Mukhra Kya Dekhe Darpan Main'.

ACTING JOURNEY

His big screen journey started with Sudhir Mishra's directorial debut 'Yeh Woh Manzil To Nahi' in 1986. "I played a pro-British officer in the film in which Manohar Singh played my son. Then I did a play 'Marichika', 'Khoon Baha Ganga Main', 'Chintoo Ji', 'Main, Meri Patni Aur Woh', 'Monika' and few more films. But the major break came with 'Ishaqzaade'."

He considers four works as game changers. "'Ishaqzaade' is right on the top. That I realised when I shifted to Mumbai in 2013! Every production house was aware of my work and praised it. Before that Kavita Chaudhury's serial 'Udaan' also gave me national recognition. I played Senior Superintendent of Police Bashir Ahmed who was the boss of the protagonist (IPS) and her mentor. It was based on Kavita Chaudhury's elder sister, Kanchan Chaudhury, who retired as the first Marathi film 'Aathvan' (memory) directed by Renuka Sahane. "I played a dementia patient and it won the Best Film award at the Nasik Film Festival. Finally, 'Mukti Bhawan' gave me international recognition and has won 132 international awards."

In Mumbai, "Casting director Reema Gupta approached me for a daily soap 'Na Bole Tum Na Maine Kuch Kaha'. I was already 70 years and was not keen but the family supported me and we bought a flat too. 'Dareeba Dairies', 'Kalash', 'Samvidhan', 'Hum Hain Na' and 'Beta Bhagya Se Beti Saubhagya Se'. Then I stopped daily soaps and started doing episodes of 'CID', 'Crime Patrol' and 'Savdhaan India'."

GOING STRONG!

Last year, he had multiple releases 'Mulk', 'Parmaanu', 'Raid', 'Babumoshai Bandoorkbaaz', 'Baraat Company', 'Raag Desh' (Kailash Kath Katju), 'Hotel Milan' (on anti-Romeo squad) and 'Accidental Prime Minister' (Shiv Raj Patil).

He has many films coming up. "I have one, but a very powerful scene 'Naqqaash' and is going to festivals. Then, His grandfather (played by Rastogi) and mother (Deepika Chikhalia), somehow keep him away from terrorism and he makes a good career. I have also done another film 'Yugpurush Deendayal Upadhyay', where I play his uncle. 'Batla House' will release on August 15 in which I have good scenes where again I play Shivraj Patil," he said.

Now, he is going slow. "There is very good money in daily soaps but now, I am taking it easy with episodes and films. I don't do films for money. For me, the role has to be good and remuneration has to be respectable," he says.

His last play was Raj Bisaria's 'Barefoot in Athens'.

THE SCIENTIST

He did M Sc in Biochemistry. "I went for a civic reception thrown for cosmonaut Uri Gagarin at CDRI in 1962. I made up my mind to be here (in the institute) and by God's grace, I got a fellowship and then I went on to work for 41 years in the same place. I retired as the head of biochemistry and Scientist G (director's grade) I retired in published 100 research papers and my PhD students are doing well at big institutes," he said.

His wife, Sudha Rastogi, was a teacher at Nari Shiksha Niketan and his son, Anurag, runs an IT company in Lucknow. "Besides his family members, he feels his institute also supported him in following his hobby of acting, which today, has become my profession," he said.

▪ deep.saxena@htlive.com

Like Comment Share

Placed 7th after Sarv Padmshri Rajbisaria, Anoop Jalota, Muzzafar Ali, Vidya Bindu Singh & Malini Awasthi and Atul Tiwari.

Wall of Fame: India

Prof. G. G. Sanwal. HoD Biochemistry at the University of Lucknow, Lucknow, for 21 years. Mentor to generations of eminent scientists and teachers

Prof. Prahlad K. Seth. Ex-Director CSIR-IITR, Ex-CEO and presently consultant, Biotech Park, Lucknow

Dr. Anil Rastogi. Ex-Head, Division of Biochemistry at CSIR-CDRI, Lucknow, and thespian and veteran actor.

Prof. L.M. Srivastava. Prof. and Head, Biochemistry AIIMS New Delhi and Senior Consultant at Sir Gangaram Hospital, New Delhi

Dr. Navin Khanna, PADMA SHRI Group leader at ICGEB, New Delhi. Adjunct Professor at Emory University.

Prof. Narendra Tuteja. Group leader at ICGEB, New Delhi. Prof. and Director, Amity Institute of Microbial Technology, NOIDA

Prof. Sudhir K. Goel. Eminent scientist and Deputy Director CSIR-IITR and Prof. and Head, Biochemistry, AIIMS, Bhopal

Prof. Rajendra Prasad Ex-Dean, Rector and Proo-VC, JNU, New Delhi
Director, Amity Institute of Biotechnology, Gurgaon

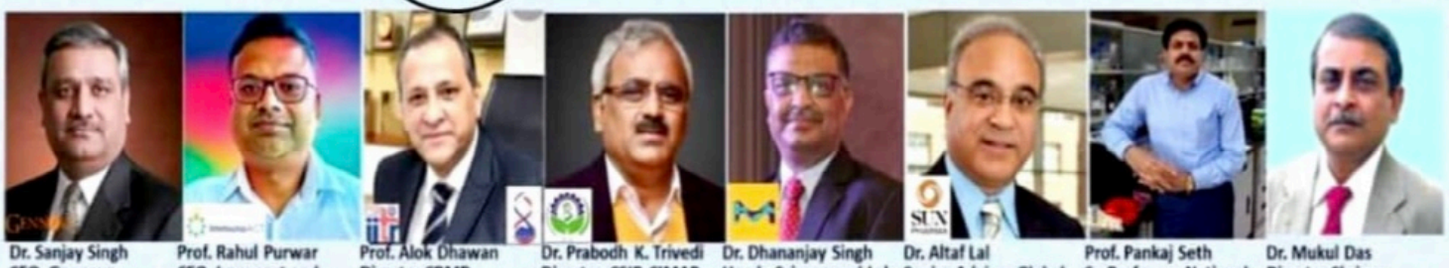

Dr. Sanjay Singh CEO, Gennova Biopharmaceuticals, Pune. COVID Vaccine pioneer, Hinjwadi Pune

Prof. Rahul Purwar CEO, Imunoact and Professor IIT Bombay CART Cell therapy pioneer, Prof. at IIT Mumbai

Prof. Alok Dhawan Director CBMR Lucknow.
Ex-Director CSIR-IITR, Lucknow.

Dr. Prabodh K. Trivedi Director, CSIR-CIMAP, Lucknow

Dr. Dhananjay Singh Head - Science and Lab Solutions, India at Merck Life Science, Bengaluru

Dr. Altaf Lal Senior Advisor Global Health and Innovation, Sun Pharma, Delhi
Ex-Head FDA India

Prof. Pankaj Seth Sr. Professor, National Brain Research Center, Manesar.

Dr. Mukul Das Director Shriram Institute for Industrial Research, Delhi.
Ex-Chief Scientist CSIR-IITR, Lucknow

Prof. Vishal Trivedi Professor of Biotechnology, IIT Guwahati

Prof. Neelam Sangwan Professor. of Biochemistry, Central University Mahendragarh

Prof. Subash C Gupta. Professor of Biochemistry, AIIMS Guwahati

Dr. Charu Sharma Senior Principal Scientist Host-Pathogen Interactions and Cell Signaling Lab CSIR-IMTECH

Dr. Aniruddha Sane Chief Scientist, Plant Molecular Biology, CSIR-NBRI

Dr. Vidhu Sane Senior Principal Scientist, Plant Molecular Biology, CSIR-NBRI

Dr. Ashutosh Shukla Principal Scientist, Biotechnology, CSIR-CIMAP

Dr. Sarika Singh Principal Scientist, CSIR-CDRI

Dr. Rohit Sinha Assistant Professor, SGPGIMS, Lucknow

Dr. Anshika Srivastava Assistant Prof. SGPGIMS, Lucknow

Dr. Nisha Singh Assistant Prof. Biochemistry, HNB Garhwal University,

Dr.Aiki Kaul General Manager, Gencnova Biopharmaceuticals, Pune

Dr. Umanath Tripathi Sr. Scientist R&D, Kashiv Biosciences Pvt. Ltd., Ahmedabad

Dr. Parul Mishra Assistant Prof., Life Sciences, University of Hyderabad

Dr. Garima Srivastava Deputy Assistant Director (Biochemistry) at National Centre for Disease Control

Dr. Amit K. Sonkar, Assistant Professor of Biochemistry, AIIMS Guwahati

Department of Biochemistry, University of Lucknow (1962-2023)

Performed in 100 plays, 1,000 shows: Anil Rastogi

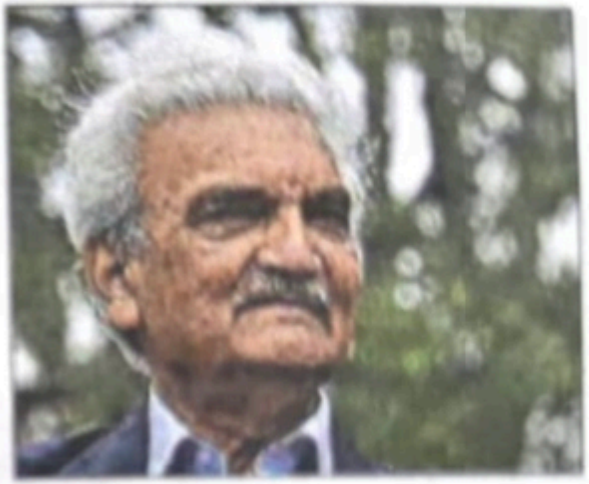

Anil Rastogi HT FILE

LUCKNOW: With nearly 1,000 stage credits to his name, Anil Rastogi, a veteran theatre actor, said, "I have performed in 100 plays and 1,000 shows. Lucknow has witnessed a golden era of theatre." He said this during an interview conducted as part of an event hosted by city-based cultural organisation Lucknow Bioscope on Sunday. The interview was conducted by IPTA Lucknow member and social activist Deepak Kabir, and the two conversed about Rastogi's illustrious careers across fields. Rastogi said of his Lucknow roots, "When I lived in Mumbai, people would ask about my etiquette, and I was always very grateful to Lucknow for that. Lucknow is truly a city of culture and contributed to my career greatly."

थिएटर मेरा शौक है, पैशन है, नशा है

-डा० अनिल रस्तोगी

पेशे से वैज्ञानिक, दिल से एक्टर, थिएटर के शीर्ष कीर्तिमान, चार दशकों से ज्यादा टीवी. एवं रजतपट (फिल्मों) के प्रतिष्ठित कलाकार जो लखनऊ के उन व्यक्तियों में एक है जिन्होंने राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर नाम बढ़ाया है।

रजनी गुप्ता

प्र0:– आप अपने बारे में बताइये?

उ0:– मैं मूल रूप से वैज्ञानिक हूं। मैंने बायो केमिस्ट्री में एमएससी और पीएचडी किया और सी डी आर आई में नौकरी किया। रिसर्च में मेरे 100 से ज्यादा पेपर पब्लिश हो चुके है। अपने इंस्टिट्यूट की तरफ से देश में तमाम जगह मीटिंग और कॉन्फ्रेंस में गया मेरे बहुत सारे शोध विद्यार्थी रहे हैं जिनको मैं पीएचडी और एमडी, एमडीएस. कराया। इसी सिलसिले में कई बार विदेश गया इस तरह साइंस के लिए बहुत कार्य किया। मुझे नेशनल अकाडमी आफ साइंस की फेलोशिप भी मिली। 1962 से मैंने सी डी आर आई ज्वाइन कर लिया था और 2003 में निदेशक के समकक्ष अध्यक्ष बायोकैमेस्ट्री और वैज्ञानिक रहते हुये 41 वर्ष तक अपनी सेवाएं देकर सेवा निवृत्त हुआ।

प्र0:– थिएटर से कैसे जुड़ना हुआ और अब तक के सफर के बारे में बताइये?

उ0:– साइंस के समानांतर थिएटर भी शुरू हुआ। राजेश्वर बच्चन जी चौक के रहने वाले थे उन्होंने मुझे रंगमंच के क्षेत्र में आगे बढ़ाया तब से थिएटर करता आ रहा हू। 1972 में मैंने दर्पण संस्था ज्वाइन किया । जो कानपुर की बहुत मशहूर संस्था थी 1971 में उसका नया केंद्र लखनऊ में बनाया गया था उसमें बहुत बड़े निर्देशक बी बी कारन्द जी रहे जो

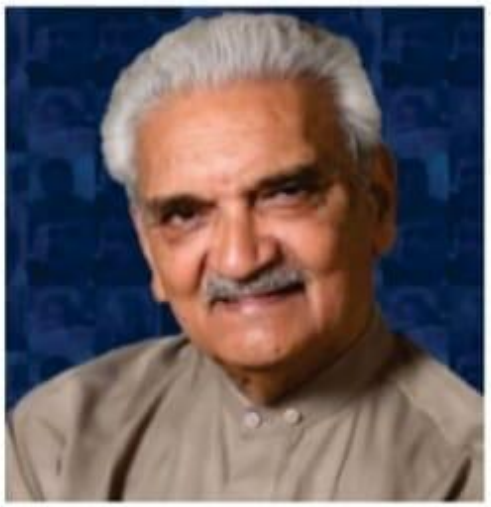

कन्नड़ थे। वह (एन एस डी) नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के पास आउट थे। संस्था के संस्थापक सत्यमूर्ति जी थे। जिन्होंने सुदेश बंधु, माया गोविंद, राम गोविंद, हरी कृष्ण अरोड़ा, विमल बनर्जी आदि इन चार पांच लोगों के साथ मिलकर संस्था शुरू किया। 1972 में मैंने कारन्द जी के साथ पहला नाटक दर्पण के साथ किया था नाटक का नाम था तन बदन जिसमें मेरे अगेंस्ट शोभना जगदीश (मशहूर न्यूज़ रीडर) थी। जिसे गिरीश कर्नाड कन्नड़ के मशहूर लेखक ने लिखा था। 1973 – 74 में मैं जर्मनी चला गया इस तरह 2 वर्ष दूर रहा। वहां से आते ही सत्य मूर्ति जी ने मुझे कोषाध्यक्ष का दायित्व दे दिया। विद्यासागर गुप्ता जी हमारे अध्यक्ष होते थे उनके साथ काम करने में बड़ा आनंद आता था और बहुत अच्छा अनुभव रहा। 1978 में मेरी प्रबंधन क्षमता को देखते हुए मुझे सचिव बना दिया गया ।इसके बाद ग्रुप लीडर की तरह मैंने अपनी टीम को भारत भर में घुमाया हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, राजस्थान गया एक–एक राज्य में पांच पांच शहरों में शो किया। और यूपी का प्रतिनिधित्व करते हुए परचम फहराया। इसके अलावा भोपाल, मैसूर, असम, बेंगलुरु, कोलकाता, दिल्ली, जोधपुर आदि प्रमुख शहरों में शो किया मैं अब तक 96 नाटको में काम कर चुका हूं जिसके 900 से ज्यादा प्रदर्शन शो पूरे भारत में हो चुके हैं।

प्र0:– रेडियो और टेलीविजन में किस तरह आना हुआ?

उ0:– 1971 में मैं रेडियो में आया और 1975 में दूरदर्शन पर आया, उसमें काम किया। दोनों जगह ही मैंने ए ग्रेट आर्टिस्ट की तरह काम किया। जब कि मेरी शुरुआत बी ग्रेड आर्टिस्ट की तरह हुई थी। 1984 में पहली फिल्म ये वो मंजिल तो नहीं में काम किया सुधीर मिश्रा की यह फिल्म नेशनल अवॉर्ड विनिंग फिल्म थी। टीवी के लिए चर्चित धारावाहिक उड़ान बना उस समय दूरदर्शन ही था जो पूरे हिंदुस्तान में देखा जाता था। इस धारावाहिक को कविता चौधरी जो एन एस डी की पढ़ी थी उन्होंने पुलिस की लाइफ पर बनाया था। जिसे पूरी ब्यूरोक्रेसी देखती थी। साथ ही इस धारावाहिक में आम आदमी अपनी झलक देखता था इसमें मैंने एस एस पी का रोल निभाया था। जिसने पुलिस के बड़े बड़े अधिकारियों को प्रभावित

किया। 1989–1990में बने इस धारावाहिक से मुझे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।

प्र0:–फिल्मी सफर के बारे में बताइये?

उ0:– 2012 में फिल्म इश्कजादे बनी जो परिणीति चोपड़ा और अर्जुन कपूर को लेकर है इसमें मैंने एक डर्टी पॉलिटिशियन का रोल किया। इस किरदार ने बहुत प्रसिद्ध पाई। इसकी शूटिंग लखनऊ बाराबंकी में हुई ।अर्जुन कपूर के बाबा का रोल किया था। लोग मुंबई जाकर रोल मिलने के लिए संघर्ष करते हैं पर मुझे मुंबई से बुलावा आया। मैं 5 वर्ष मुंबई में रहा इसमें मैंने तमाम सीरियल और कमर्शियल ऐड भी किया। 12–13 वेब सीरीज भी किया है ।अब तक मै250सीरियल कर चुका हूं छोटे बड़े रोल मिलाकर 60 फिल्में कर चुका हूं। कुछ अभी रिलीज होना भी बाकी है।

प्र0:– बढ़ती उम्र और व्यस्तता के कारण क्या थिएटर पीछे छूट गया?

उ0:– 80 वर्ष से अधिक मेरी आयु है अभी भी नाटक करता हूं 3 नवंबर को जबलपुर में किया था, 9 दिसंबर को दूसरा भी जबलपुर में,फरवरी में दिल्ली गया था नाटक करने। मई में लखनऊ में ही नाटक किया था। थिएटर मेरा शौक है, पैशन है, नशा है।

प्र0:– आप अपने सम्मान एवं अर्वाड के बारे में बताइये?

उ0:– वैसे तो मुझे 50–60 अवार्ड व सम्मान मिल चुके हैं, उनमें 4 बहुत महत्वपूर्ण है। पहला है मध्य प्रदेश सरकार का सबसे बड़ा कालिदास सम्मान। दूसरा है उत्तर प्रदेश सरकार का यश भारती सम्मान। तीसरा है उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी का अवार्ड मुझे 1984 में मिला। और 2007 में मुझे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की रत्न सदस्यता मिली यह मेरे महत्वपूर्ण सम्मान है। लखनऊ विश्वविद्यालय के हाल ऑफ फेम में मेरी फोटो लगी हुई है। सी डी आर आई ने 1951 से 2021 तक 70 वर्षों की पत्रिका प्रकाशित की थी जिसमें उन्होंने ख्याति प्राप्त 27–28 वैज्ञानिकों के नाम दिए थे उसमें मेरा भी नाम शामिल किया था।

प्र0:– इतने लम्बे अनुभव के बाद आप अभिनय को किस तरह देखते है?

उ0:– अब इच्छा रहती है कि भले ही थोड़ा काम करो पर अच्छा करना है। आप कला पैदा नहीं कर सकते ,बचपन से ही कला का कीड़ा होना चाहिए। पानी देकर उसे सींचा जा सकता है लेकिन अगर बीज ही न हो तो कितना भी सीचो पौधा कैसे निकलेगा। अगर सफलता नहीं मिली तो घबराने की जरूरत नहीं है आप निरंतर लगे रहिए उस समय तो इतने तरीके भी नहीं थे ।अब तो बहुत सारे प्लेटफार्म है आप अपनी वीडियो, रिकॉर्डिंग खुद ही बना सकते हैं उनको देखकर अपनी कमियां सुधार सकते हैं और बेहतर कर सकते हैं।

प्र0:– वह पांच काम जिनको करने के बाद आपको आत्मसंतुष्टि मिली?

उ0:– पांच काम जो मुझे बहुत संतोष देते हैं पहले काम है उड़ान सीरियल जिसमें मैंने एस एस पी का रोल किया है। दूसरा काम फिल्म इशकजादे इस काम के बाद फिल्मी दुनिया के लोगों ने मुझे हाथों–हाथ लिया। तीसरा काम मराठी शॉर्ट फिल्म आठवां है जिसे रेणुका साहनी ने किया था आठवां मराठी शब्द है इसका मतलब याददाश्त होता है। इसे राष्ट्रीय पहचान और अंतरराष्ट्रीय अवार्ड भी मिला। चौथा काम है मुक्ति भवन इस फिल्म को 30 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। यह फिल्म वियना में दिखाई गई जहां 10 मिनट तक लोगों ने खड़े होकर तालियां बजाई इसमें मैंने मुक्ति भवन के मैनेजर का रोल किया है। पांचवा मेरी एक वेब सीरीज है आश्रम जिसमें बॉबी देओल ने एक बाबा का रोल किया है यह कटाक्ष है उन पाखंडियों पर जो भेड़ की खाल में भेड़िए हैं। इस वेब सीरीज में मैं मुख्यमंत्री के रोल में हूं।

प्र0:– वह नाटक जो आपके दिल के बेहद करीब है?

उ0:– मेरा एक नाटक है यहूदी की लड़की जिसे उर्मिल कुमार थापरियाल जी ने निर्देशित किया था वह मेरे दिल के बहुत करीब है इसके अलावा मैंने एक नाटक किया था **"पंछी जा पंछी आ"** इसके 400 से ज्यादा शो किया। एक फिल्म आई थी गरम मसाला जो इस नाटक पर आधारित फिल्म है फिल्म में अक्षय कुमार वाला रोल नाटक में मैं करता था। 96 नाटकों में 40–45 नाटकों में मैं मुख्य भूमिका में रहा।

प्र0:– ऐतिहासिक कदम के माध्यम से आप उन युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे जो रोल मिलने के लिए संघर्ष कर रहे है?

उ0:– समय के साथ ही बदलाव आया है, पहले एक स्टारडम हुआ करता था। लेकिन अब तो काम मिलता है एक्टिंग की क्वालिटी से और एक्टिंग आती है थिएटर से। युवाओं को चाहिए कि वह अपने शहर के अच्छे थियेटरों की जानकारी हासिल करें उनके साथ जुड़े, गंभीरता से अभिनय की बारीकियां सीखें सीढ़ी की तरह उपयोग करें। फिर सीरियल में, फिल्मों में जाइए आपको काम मिलेगा एक्टिंग ऐसा कैरियर है जिसमें आपको पैसा, शोहरत, सम्मान सब मिलेगा।

'70 वर्ष की उम्र में कलाकार मुंबई से लौटते हैं,

मैं स्थापित होने गया'

रेडियो, टेलीविजन, रंगमंच और सिनेमा, चारों विधाओं का ज्ञान। 70 फिल्में, 13 वेब सीरीज और 22 धारावाहिकों के 500 से अधिक एपिसोड में काम का अनुभव। किसी अभिनेता के लिए यह बड़ी उपलब्धि से कम नहीं। आज के युवाओं को इतना कार्य करते-करते एक अवस्था लग सकती है, किंतु डा. अनिल रस्तोगी ऐसे अभिनेता हैं, जो केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ) से सेवानिवृत्त होने के बाद दूसरी पारी में सिनेमाई दुनिया में सक्रिय हुए और 81 वर्ष की उम्र में अब भी निरंतर काम कर रहे हैं। डा. रस्तोगी कहते हैं, '70 वर्ष की उम्र में कलाकार मुंबई से लौटते हैं और मैं वहां स्थापित होने गया था। मेरा मानना है कि रोल छोटा या बड़ा नहीं होता, दृश्य स्थिर होना चाहिए। **डा. अनिल रस्तोगी** से उनके सिनेमाई करियर, फिल्मों में काम के अनुभव आदि पर दैनिक जागरण के संवाददाता **महेन्द्र पाण्डेय** ने विस्तृत बात की। प्रस्तुत हैं महत्वपूर्ण अंश :

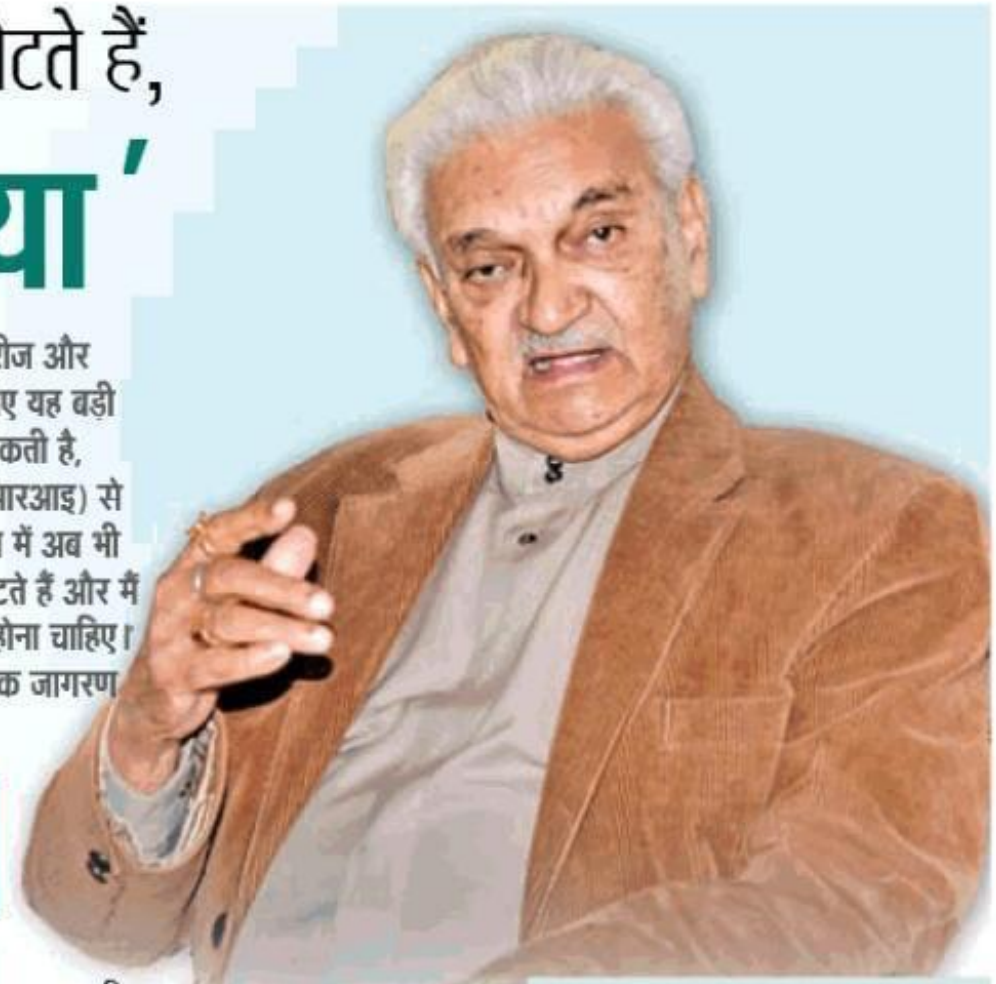

साक्षात्कार

अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी

- आपने सीडीआरआइ में नौकरी के साथ रंगमंच की भी सेवा की। इस विधा में छह दशकों का अनुभव फिल्मों में किस तरह काम आया?

● मैं 1962 से थिएटर करता रहा। उस समय हमारे एक दोस्त ने कहा कि तुम्हारी आवाज अच्छी है, रेडियो में क्यों नहीं काम करते। मैं उनकी प्रेरणा से 1971 में रेडियो में आकाशवाणी में आडिशन देने गया और 'बी' ग्रेड में उत्तीर्ण हो गया। फिर रेडियो में काम करने लगा। थिएटर और रेडियो से होकर टीवी पर गया। 1989 में धारावाहिक 'उड़ान' किया। इसके बाद 'ये वो मंजिल तो नहीं' की। फिर 'मरीचिका', 'मैं मेरी पत्नी और वो', 'खून बहा गंगा में' जैसी फिल्मों में काम किया, लेकिन मुझे 2012 में 'इश्कजादे' में काम करने से पहचान मिली। निःसंदेह रंगमंच, रेडियो और टेलीविजन में काम का अनुभव फिल्मों में काम आया। उसी अनुभव से यह यात्रा जारी है।

- आपको इश्कजादे से फिल्मी दुनिया में पहचान मिली। कैसे इसमें आपका चयन हुआ?

● इश्कजादे में अभिनेत्री भूमि पेडनेकर ने मेरा आडिशन कराया था। मैंने पैंट-शर्ट में आडिशन दिया तो भूमि ने कहा, आप क्या कुर्ता-पजामा में भी आडिशन दे सकते हैं? मैंने कहा, क्यों नहीं। फिर मैंने कुर्ता-पजामा में भी आडिशन दिया और चयनित हो गया। मुझे मुंबई से भी बुलावा आया। तब मैं वहां उस उम्र में गया, जब लोग मुंबई से वापस आते हैं। मैं मुंबई में पांच वर्षों तक रहा। अपने परिवार और थिएटर को याद करता था। इसलिए फिर लखनऊ आ गया।

- अगर लखनऊ की विरासत पर कोई फिल्म बने तो उसमें आप अपने लिए क्या किरदार चुनेंगे?

● मैं कोई ऐसे रियासत वाले का किरदार करना चाहूंगा जो बेहतरीन उर्दू बोलता हो। जिसके अंदाज में नजाकत-नफासत हो, क्योंकि लखनऊ की जुबां रईस है और यह रईसी मैं अपने किरदार में देखना पसंद करूंगा।

- आप इस उम्र में भी फिल्मों की शूटिंग में सक्रिय रहते हैं। कैसे चर्या प्रबंधित करते हैं?

● मेरा मानना है कि आप जितना सक्रिय रहोगे, उतना जिंदा रहोगे। मैं इसलिए नियमित काम करते रहना चाहता हूं। मुझे निरंतर काम करने की प्रेरणा सीडीआरआइ से मिली। मैं उस सेवा में भी कहीं जाता था तो पहले अपने कार्य पर फोकस करता था। फिर उसे पूरा करने के बाद ही घूमने-टहलने के बारे में सोचता था। क्योंकि मुझे भीड़ से अलग दिखना था।

- आपने इतने धारावाहिक, फिल्मों और वेबसीरीज में काम किया है। आपको किस तरह की भूमिकाएं पसंद है?

● मैं अब उम्र के हिसाब से ही रोल करता हूं। अधिकतर किरदार में जज, नेता आदि के ही किरदार निभाए हैं। मैं फिल्मों में अपनी भूमिका से पूरी तरह संतुष्ट हूं। मेरी एक फिल्म आई थी- मुक्तिभवन। यह जागरण फिल्म फेस्टिवल में भी चली थी। इसे 32 अंतरराष्ट्रीय और तीन राष्ट्रीय पुरस्कार मिले थे। मैंने इसमें प्रबंधक की भूमिका निभाई थी। यह भूमिका भी बहुत पसंद रही।

-आपने कई वेबसीरीज में भी काम किया है। आश्रम में भी। वेबसीरीज में जिस तरह गाली और अश्लीलता परोसने का चलन बढ़ रहा है, इस पर क्या राय है?

● मैं गाली और अश्लीलता परोसने के पक्ष में नहीं हूं। अगर पटकथा की मांग है कि अश्लीलता दिखानी ही तो उसे प्रस्तुत करने के और भी तरीके हैं, उनका इस्तेमाल किया जाए। खुलेआम नग्नता प्रदर्शित करना उचित नहीं। मैंने आश्रम में काम किया, लेकिन तब मुझे यह नहीं पता था कि उसमें क्या दिखाया जाना है। मुझे किसी सीन में गाली भी देना हो तो मैं इससे बचूंगा। रक्तांचल-2 में मेरे किरदार को गाली देनी थी, लेकिन मैंने मना कर दिया।

-आपने कई तरह की फिल्में कीं। आपको किस तरह की फिल्म अच्छी लगती है?

● ऐसी फिल्म जिससे दर्शक स्वयं को उससे जोड़ें। मुक्तिभवन ऐसी फिल्म रही। फिल्म ऐसी होनी चाहिए, जिसमें एक संदेश हो या फिर वो पूरी तरह हास्य हो। मुझे पौराणिक फिल्में भी अच्छी लगती हैं। मैंने रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों का भी अध्ययन किया है। मुझे ऐसी फिल्में प्रेरक लगती हैं। मुझे मार-धाड़ या एडवेंचर वाली फिल्म पसंद नहीं।

- आपने कभी निर्देशक या निर्माता की भूमिका नहीं निभाई?

● मैंने निर्देशन तो नहीं किया, लेकिन निर्माता बनने का प्रयास किया था। कुछ लोगों ने चढ़ा दिया था कि प्रोड्यूसर का भी काम करिए। तब एक-दो गाने बनवाए, लेकिन मुझे लगा कि इसमें फंसने वाला मामला है। इसलिए मैंने पैसे देकर किनारे होना बेहतर समझा। तब से ये काम बंद कर दिया।

मेरे जीवन का सबसे मुश्किल नाटक है डैडी : अनिल रस्तोगी

अभिषेक सहज

विशेष बातचीत

वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी 64 साल के रंगमंचीय कॅरिअर में 99वें नाटक में निभाएंगे मुख्य भूमिका

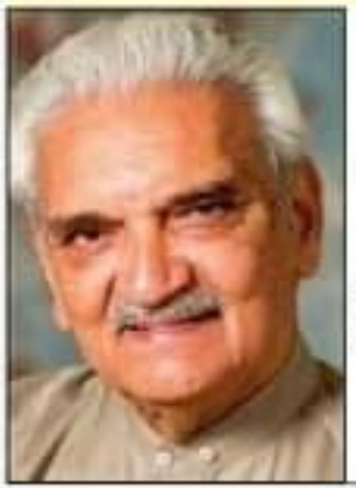

बीएनए के पूर्व निदेशक और प्रख्यात रंगकर्मी सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ कर रहे हैं नाटक का निर्देशन

लखनऊ। 64 साल के रंगमंचीय कॅरिअर में अब तक 98 नाटकों में अभिनय से दर्शकों की वाहवाही लूट चुके वरिष्ठ रंगकर्मी और फिल्म अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी बिल्कुल नए नाटक डैडी में मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इन 98 नाटकों के सैकड़ों मंचन कर चुके डॉ. अनिल रस्तोगी का कहना है कि डैडी मेरा 99वां नाटक है और शायद मेरे कॅरिअर का सबसे मुश्किल नाटक भी यही है।

लखनऊ की प्रसिद्ध नाट्य संस्था दर्पण की ओर से इस नाटक का पहली बार मंचन होने जा रहा है संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे प्रेक्षागृह में 25 और 26 जुलाई को। डॉ. अनिल रस्तोगी ने अमर उजाला से खास बातचीत में बताया कि इस नाटक का निर्देशन कर रहे हैं बीएनए के पूर्व निदेशक और प्रख्यात रंगकर्मी सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ।

इससे पहले उर्मिल कुमार थपलियाल के निर्देशन में यहूदी की लड़की नाटक को मंच पर उतारने में मुझे बहुत मशक्कत करनी पड़ी थी। इतने वर्षों बाद अब इस नाटक में मुझे जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ ने इस नाटक में जिस तरह से अपनी ऊर्जा और कौशल झोंका है, वह वाकई काबिलेतारीफ है। उनके निर्देशन में हूबहू उनकी परिकल्पना को अपनी अदायगी में उतारना वाकई कठिन काम था। इसी वजह से अतिरिक्त ऊर्जा लगानी पड़ी। 25 को पहला और 26 जुलाई को नाटक का दूसरा शो होगा।

■ **डिमेंशिया के मरीज की कहानी पर आधारित है नाटक :** डॉ. अनिल रस्तोगी ने बताया कि यह नाटक डिमेंशिया के मरीज की कहानी पर आधारित है। इसमें बुजुर्ग और उसकी बेटी के बीच रिश्ते को बड़ी संवेदनशीलता के साथ दर्शाया गया है। उन्होंने कहा कि मैं एक माह से इस नाटक की रिहर्सल में व्यस्त हूं।

Privileged to belong to Lucknow, says Anil Rastogi

Ratan Mani Lal

In the past one decade, if there is one person from Lucknow who has made a place for himself as the face of Lucknow in the entertainment industry, it is Anil Rastogi. The veteran stage actor has been active in theatre and on stage in Lucknow for more than five decades, but now, he has emerged as a powerful actor on television and in films.

"Meaningful roles are more important to me rather than long but forgettable ones," says the actor in an interview. It is such roles that have made him extremely popular among viewers since his mere presence on the screen adds weight to the story that is unfolding in the TV serial or the film. His impressive voice, as well his expressive eyes, linger on in the memory of viewers long after the show is over.

"I am privileged that I have been associated with Lucknow since my early days. My education, job, career, love for theatre – everything was nurtured because I was in Lucknow. The city has given me so much and today whatever I am is because of the city and its people," says he.

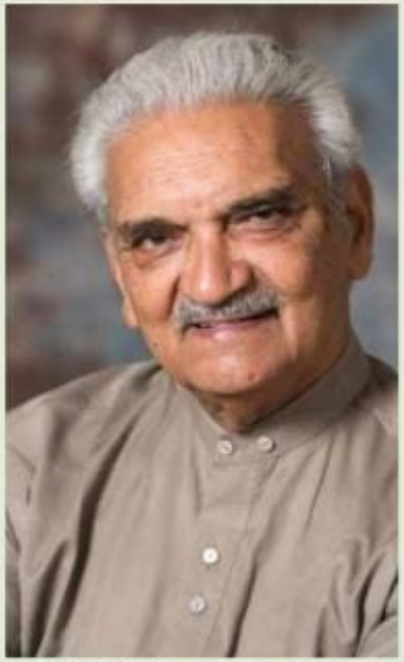

Strong support

"The kind of support I got in Lucknow is unprecedented. Support from family and friends is something that people get, but I got full support from even the institution where I was working, that is Central Drug Research Institute or CDRI. The management, director, my colleague and students gave me wholehearted support in my love for theatre. I am truly blessed," he says, adding that "I never neglected my job because of my love for acting, and the CDRI director always gave many responsibilities to me."

He recalls that in 1989-90, when he was doing the serial Udaan, its cinematographer Baba Azmi asked him to come to Mumbai (then Bombay) as there were good opportunities for an actor like him. "But I declined, it was a considered choice as I wanted to be in Lucknow. I later did stay in Mumbai for five years, from 2013 to 2018, but returned to Lucknow as the love for this city brought me back."

Even at the age of 78, he retains a youthful enthusiasm about his work and the world of acting. "It gives me a lot of energy and excitement to look forward to new ideas," he says. Before the pandemic, he completed shooting for multiple projects and later during the second wave, he did not work for two months beginning April. But in the last some weeks, he has been active in work and has traveled to Mumbai for shooting and post-production.

Great future

Lucknow is fast emerging as a hub for entertainment industry activities. Today, there are many film-making units, line producers, actors and technical personnel in Lucknow who have been working in films and TV serials. "There are many dubbing studios and artistes working in Lucknow which are as good as those in Mumbai. I have told many film-makers that they should come to Lucknow for dubbing my voice instead of calling me there. Even in film editing many professionals have come up in Lucknow, and that is a good sign," he feels.

Not only this, a lot of work is emerging in areas besides Lucknow. "I have worked in Varanasi, Gorakhpur and Agra as well, and it is a great thing to see that Uttar Pradesh is finally making a mark in the film industry," he says.

He is excited about his forthcoming projects and says film-makers today are trying out new ideas. The variety of stories and the flexibility of the OTT platforms will lead to more exciting shows in the future.

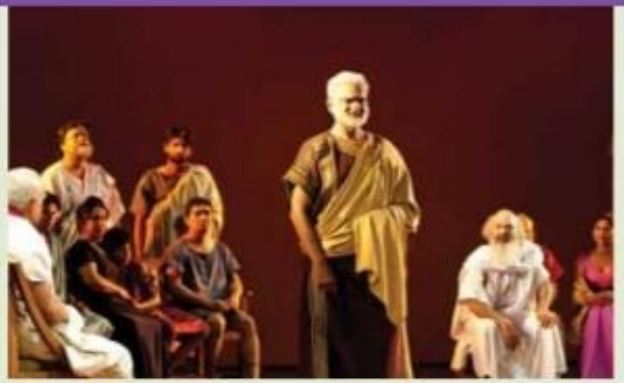

Barefoot in Athens

Gaalib

Yahoodi ki Ladki (Pictures courtesy Anil Rastogi)

Films: Main, Meri Patni Aur Woh, Ishqzaade, Gaalib, Raid, Thappad, Mulk, Batla House, Accidental Prime Minister, Guddu Rangeela, Mukti Bhawan, Raag Desh,

OTT serials: Ashram, A Suitable Boy, Grahan

TV serials: Udaan, Biwi Naatiyon Wali, Samvidhaan, Na Bole Tum Na Maine Kuchh Kaha, Razia Sultan, Dariba Diaries, Manzilen Hamse Hain

Plays: Panchhi Jaa, Panchhi Aa, Rustam Sohraab, Taj mahal Ka Tender, Yahoodi Ki Ladki, Kamla, Sakharam Binder, Mitra

Upcoming films and shows: Bikru Kanpur Gangster, Raktanchal-2, Sitapur: The city of Gangsters, Veerangana, Bombay Diaries

GURU PURNIMA }

Octogenarian gurus still inspire with passion and purpose

HT Correspondent
letters@htlive.com

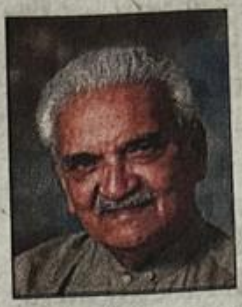

Anil Rastogi (left) and Prof Roop Rekha Verma SOURCED

LUCKNOW: From being lifelong learners to mentors in multiple fields, some octogenarians continue to pursue excellence while inspiring younger generations. On the occasion of Guru Purnima on Thursday, Hindustan Times spoke to two such individuals.

Anil Rastogi (82), a former scientist at the Council of Scientific and Industrial Research–Central Drug Research Institute (CSIR-CDRI), also followed his passion for theatre.

On Thursday, his contributions were celebrated by students from both science and the performing arts.

"I worked on both my passion—theatre—and my profession—scientific research—simultaneously," said Rastogi. "After retirement, I shifted my complete focus to theatre." He credits Rajeshwar Bacchan, an employee at the Transport Office, for inspiring his theatre journey. "He taught me the nuances of acting and encouraged me to move in that direction. Other theatre artists like Urmil Kumar Thapaliyal, Raj Bisaria, and Suryamohan Kulshrestha also shaped my journey."

Though Rastogi never directed plays, he has mentored many young theatre artists, especially in voice modulation—a skill he honed while working in radio. He is currently working on his 99th play.

Similarly, Prof Roop Rekha Verma (82), former Vice Chancellor of Lucknow University, said retirement was not a sudden shift for her, as she had always been involved in social issues alongside her academic work.

"Retirement becomes difficult only if one has nothing to pursue beyond their profession," she said. "I had always engaged in writing, public speaking, and groundwork on social issues. So, after stepping down from institutional responsibilities, I felt relieved that I could now devote more time to social work—even though it reduced my time for academic writing."

Though she writes less now, Prof Verma believes society urgently needs more people to engage in ground-level work, even if it means stepping away from other pursuits.

स्टारडम घट रहा है... बढ़ रहा कलात्मक मूल्य : डा. रस्तोगी

जागरण फिल्म फेस्टिवल के दूसरे दिन अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी, निर्देशक अबनर रेग्नाल्ड से संदीप यादव ने किया संवाद

Rajnigandha presents JAGRAN FILM FESTIVAL

महेन्द्र पाण्डेय • जागरण

शनिवार को फन माल में आयोजित जागरण फिल्म फेस्टिवल में फिल्म आश्रय देखते लोग व चर्चा करते अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी, अबनर रेग्नाल्ड और संदीप यादव • जागरण

लखनऊ: 'सिनेमाई जगत में बदलाव आ रहा है। अब स्टारडम घट रहा है, जबकि कलात्मक मूल्य (आर्टिस्टक वैल्यू) बढ़ रहा है। यूं समझिए कि ग्लैमर कम चल रहा है, कंटेंट की उपयोगिता बढ़ रही है। अगर आपके पास अच्छी कहानी है तो ही लोग उसे देखेंगे, अन्यथा बड़े से बड़े कलाकार क्यों न हों, फिल्म नहीं चलेगी।' अभिनेता डा. अनिल रस्तोगी ने अभिनय की दुनिया में काम के अनुभवों को साझा करते हुए ये भाव व्यक्त किए तो साथ बैठे 'गोदान' फिल्म के निर्देशक अबनर रेग्नाल्ड ने भी सहमति जताई। जागरण फिल्म फेस्टिवल (जेएफएफ) में संवाद की यह यात्रा थिएटर से होते हुए धारावाहिक, फिल्म और फिर वेबसीरीज तक जारी रही।

जेएफएफ में शनिवार को संवाद त्र के खेवनहार अभिनेता संदीप दव ने दोनों अतिथियों से पूछा, एटर की यात्रा कैसे शुरू हुई? बनर बोले, 'मैंने अनिल रस्तोगी के न्निध्य में ही थिएटर शुरू किया। रस्तोगी ने विश्वास जताया तो मैंने ी उम्र में निर्देशन भी किया। वह प्रेरणास्रोत हैं।' नाटक यहूदी की ी का जिक्र करते हुए बताया, ं अभिनेता अनुपम खेर को यहूदी ूमिका निभानी थी। उन्होंने 15 तक अभ्यास भी किया था, उन्हें दूसरे शो के लिए मुंबई नया गया तो वह चले गए। तब रदार को डा. रस्तोगी ने निभाया ी से मैं साथ में जुड़ा।'

अनिल ने केंद्रीय औषधि न संस्थान (सीडीआरआइ) षों की अपनी सेवा की चर्चा

अब हीरो ही हास्य कलाकार और खलनायक भी

संदीप ने प्रश्न किया कि पहले दूरदर्शन पर फिल्में आती थीं। उसमें गांवों को दिखाया जाता था, अब गांव कहानियों से क्यों दूर हो गए? अबनर ने कहा, 'लगभग 80 प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं, लेकिन वे अब सिनेमा से दूर हैं।' डा. रस्तोगी ने उनकी बात को आगे बढ़ाया। बोले, 'साहित्य पर बहुत फिल्में बनीं हैं। प्रेमचंद के छह उपन्यासों पर फिल्में आ चुकी हैं। जब हम ब्रिटिश राज में थे, तब गांवों में जमींदार होते थे। वे पीड़ित समाज को प्रताड़ित करते थे। उनकी कहानियों को फिल्मों में भी दिखाया गया। अब नई कहानियां आ रहीं। केरला स्टोरी, कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्में बन रहीं। पहले हीरो केवल हीरो की ही भूमिका निभाते थे। अब हीरो हास्य कलाकार भी बन रहे हैं और खलनायक भी।'

ठोंक-पीट कर टैलेंट नहीं ला सकते

फिल्मों के लिए थिएटर कितना आवश्यक है? इस पर डा. रस्तोगी ने कहा, 'मैंने 35 निर्देशकों के साथ काम किया है। हर विधा सीखनी पड़ती थी। अब कलाकार गंभीरता से नहीं लेते। थिएटर के लिए टैलेंट आवश्यक है और टैलेंट ठोंक-पीटकर नहीं ला सकते।' अबनर ने एक पंक्ति में बात पूरी की- 'शुरू तो कीजिए आदत बन जाएगी।'

थिएटर में संतुष्टि

श्रोता हेमंत के प्रश्न पर डा. अनिल रस्तोगी ने कहा, 'थिएटर में सर्वाधिक चुनौती होती है। थिएटर लाइव होता है। इसमें सुधारने का अवसर नहीं होता। फिल्मों में डबिंग भी होती है। जो चीज छूट गई, उसे डबिंग में सही कर लेते हैं, लेकिन आज मैं यहां हूं तो थिएटर के कारण नहीं, फिल्म और वेबसीरीज के कारण। थिएटर से संतुष्टि तो मिलती है, किंतु प्रसिद्धि सिनेमा से ही मिलती है।'

Register Now

सेना के अधिकारियों ने देखी सैम बहादुर

शनिवार सुबह 10:15 बजे से माई थू हुएन निदेर्शित 'फ्रैजाइल फ्लावर' प्रदर्शित की गई। इसके बाद मेघना गुलजार निर्देशित फिल्म 'सैम बहादुर' दिखाई गई। यह फिल्म सेना के अधिकारियों ने भी देखी। इसके बाद विग्नेश नादर निर्देशित लघु फिल्म आश्रय, श्रीधर रंगायन व सागर गुप्ता निर्देशित फिल्म 'कुछ सपने अपने' व हरेश पटेल निर्देशित 'ईश्वर क्या चे' प्रदर्शित की गई। रात में क्रिज्स्टाफ जानुसी निर्देशित फिल्म 'द कांस्टेंट फैक्टर' दिखाई गई।

मैं उद्घाटन सत्र में शामिल रही। कलाकारों का संवाद भी सुना। युवा पीढ़ी के लिए ये कलाकार प्रेरणास्रोत हैं। वे भले ही सेलिब्रेटी फैमिली से हैं, पर काम करने से पीछे नहीं हटते।

- पूनम गौतम, प्रधानाचार्य, सेठ एमआर जयपुरिया स्कूल, कानपुर रोड।

मैं हर बार जागरण फिल्म फेस्टिवल में आती रही हूं। यह एक परिवार जैसा है। यह हम जैसे लोगों को अभिनय सिखाने का मंच है। नए कलाकारों को यहां अवश्य आना चाहिए।

- राखी जायसवाल

जागरण फिल्म फेस्टिवल में जो फिल्में प्रदर्शित हो रही हैं, वे वाकई प्रेरणादायक हैं। इन्हें हर किसी को देखना चाहिए और इनके सबक को आत्मसात करना चाहिए।

आज के आकर्षण

सौरभ सचदेवा व पं. राम मोहन महाराज

- दो फरवरी को सुबह 10:15 बजे से हर्षमोहन मिश्रा निर्देशित 'रिदम आफ हेरिटेज - द अनटोल्ड स्टोरी आफ पंडित राम मोहन महाराज ओवरव्यू' देख सकेंगे। यहां पंडित राम मोहन महाराज भी उपस्थित रहेंगे।
- दोपहर 12:10 बजे से मास्टरक्लास में अभिनेता सौरभ सचदेवा अभिनय के अनुभव साझा करेंगे।
- दोपहर 1:25 बजे लिजू मिथ्यान मैथ्यू निर्देशित फिल्म 'कलाम स्टैंडर्ड' दिखाई जाएगी।
- दोपहर 3:10 बजे से कश्मीर में आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए भारतीय सेना के आपरेशन पर आधारित फिल्म 'अमरन' प्रदर्शित की जाएगी। इसके निर्देशक हैं राजकुमार पेरियासामी।
- शाम 6:15 बजे से अबनर रेग्नाल्ड निर्देशित 'गोदान' दिखाई जाएगी।
- रात 8:15 बजे उदय शंकर पंत निर्देशित 'अपना आकाश' प्रदर्शित करने के साथ फिल्म फेस्टिवल

अब ग्लैमर नहीं, कंटेंट आधारित फिल्म पसंद करते हैं दर्शक

लखनऊ में वैज्ञानिक रहे अनिल रस्तोगी ने अपनी जीवनगाथा को किया साझा, कहा- अब थिएटर करने में अधिक आता है आनंद

संवाद न्यूज एजेंसी

शाहजहांपुर। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) लखनऊ के पूर्व वैज्ञानिक अनिल रस्तोगी के रोम-रोम में अभिनय रचा और बसा है।

अभिनेता अनिल रस्तोगी। संवाद

भारतीय थिएटर, टेलीविजन और फिल्म अभिनेता रस्तोगी ने अलग-अलग भूमिकाओं को निभाया है।

उन्होंने पूर्व और वर्तमान के सिनेमा पर अंतर साझा करते हुए कहा कि पहले ग्लैमर पर फिल्में चलती थीं। वर्तमान में कंटेंट आधारित सिनेमा को दर्शक पसंद करते हैं।

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से चार दिवसीय संभागीय नाट्य समारोह में नाटक की प्रस्तुति देने आए अनिल रस्तोगी ने थिएटर के सफर पर विस्तार से चर्चा की। मूलतः लखनऊ के राजाजीपुरम निवासी अनिल रस्तोगी ने बताया कि स्कूल समय में डॉ. घनश्याम को नाटक करते देखकर थिएटर का शौक जागा था। पहली बार 1961 में उन्हें नूरजहां नाटक में विजय सिंह मंत्री का रोल मिला।

18 साल की उम्र में नाटक में हीरो का किरदार निभाया। उस समय लखनऊ के चौक में नाटक करने वाले राजेश्वर बच्चन को अपना गुरु बनाकर रंगकर्म की बारीकियों को सीखा। वह बोले कि थिएटर करने में आनंद आता है। सिनेमा में अभिनेता का काम 40 प्रतिशत होता है। शेष कार्य निर्देशक और एडिटर करते हैं।

थिएटर का प्रशिक्षण नहीं लेने वाले अनिल कहते हैं कि प्रत्येक कलाकार जीवनभर सीखता रहता है। 82 साल के नजदीक उम्र होने के बावजूद वह अपने नाटकों के जरिये संदेश देना चाहते हैं। उनके साथ पत्नी डॉ. सुधा भी आई हैं।

उड़ान सबसे चर्चित सीरियल

इश्कजादे फिल्म और आश्रम वेब सीरीज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अनिल रस्तोगी ने बताया कि 1967 में जय सोमनाथ नाटक से काफी सराहना मिली थी, फिर उन्हें रेडियो में काम करने का मौका मिला। 1975 में लखनऊ में दूरदर्शन आने पर ऑडीशन देने पर चयन हो गया था। 1989 में दूरदर्शन के सीरियल उड़ान से काफी चर्चा मिली।

सिनेमा में आया काफी बदलाव

अभिनेता अनिल रस्तोगी ने बताया कि पहले दिलीप कुमार, शाहरुख खान जैसे कलाकारों की फिल्में आती थीं तो काफी भीड़ जाती थी। विलेन, हास्य अभिनेता अलग होता था। वर्तमान में हीरो ही विलेन बन जाता है। वह ही कॉमेडी भी कर रहा है। रंगकर्म और टीवी के शो करने वाले अनिल रस्तोगी को इश्कजादे फिल्म के लिए मुंबई बुलाया गया था। तब उनका ऑडीशन वर्तमान में अभिनेत्री भूमि पेंडकर ने लिया था। बोले कि वह अभी तक एक हजार शो और पांच सौ टीवी एपीसोड शो कर चुके हैं। इसमें 22 सीरियल शामिल हैं।

विदेश से बेटे को वापस लाने की जद्दोजहद

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के संभागीय नाट्य समारोह में बुधवार को आखिरी नाटक आखिरी वसंत का मंचन किया गया। इसमें झगड़े के बाद विदेश में गए बेटे को वापस लाने और अपनत्व का भाव समझाया गया।

नाटक आखिरी वसंत का मंचन

गांधी भवन के सभागार में बुधवार शाम को प्रस्तुत नाटक में दिखाया गया कि बुजुर्ग सुधीर और उनकी पत्नी का बेटे रणदीप के साथ आए दिन झगड़ा होता है। दंपती झगड़े से निपटने का प्रयास करते हैं, लेकिन एक दिन बेटा उन्हें छोड़कर कनाडा में जाकर बस जाता है। वहां वंदना से शादी कर लेता है।

संपत्ति को लेकर विवाद होने के बाद सुधीर और गीता बेटे और बहू को वापस लाने का प्रबंध करते हैं, लेकिन तभी जेल से भागे अपराधी राधू का उनकी जिंदगी में प्रवेश होता है। वह सब गड़बड़ कर देता है। अफरा-तफरी के बीच मूल सच्चाई सामने आती है।

नाटक आखिरी वसंत का मंचन करते कलाकार। स्रोतः संस्था

नाटक में मंच पर प्रख्यात फ़िल्म अभिनेता डॉ. अनिल रस्तोगी, चित्रा मोहन, अलका विवेक, विकास श्रीवास्तव, संजय देगलूरकर, वंश श्रीवास्तव ने अपने अभिनय से प्रभावित किया। मंच से परे प्रकाश व्यवस्था में देवाशीष मिश्रा, संगीत संचालन विवेक श्रीवास्तव का रहा।

कार्यक्रम का संचालन इंदु अजनबी ने किया। अंत में मंथन आर्ट्स सोसाइटी के अध्यक्ष शिवा सक्सेना ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस दौरान वरिष्ठ रंगकर्मी शमीम आज़ाद, जरीफ मलिक आनंद, अनिल द्विवेदी, राजाराम, कृष्ण कुमार, मनोज मंजुल, कप्तान, योगेश, प्रेम मौजूद रहे। संवाद

प्रत्येक भूमिका में अव्वल

आदरणीय

डा. अनिल रस्तोगी

नाट्य शास्त्र के प्रथम आचार्य भरत ने नाटक को 'सार्ववर्णिक' तथा लोकवृत्त का अनुकरण बताया है। तत्कालीन व तत्पश्चात् दृश्य काव्य के रूप में विकसित और वर्तमान में साहित्य व संवेदना अभिव्यक्ति की प्रत्येक विधा को संचित करती समाजोत्थान का संदेश लिये यह लोक कला व्यापक परिप्रेक्ष्य व संप्रेषण से वस्तुतः समाज का भाव दर्पण ही बन चुकी है। रंगमंच अपने संप्रेषण के सशक्त माध्यम से आज के संक्रमण ग्रस्त समाज में वास्तविक मूल्यों के पुनर्स्थापन व जनभागीदारी को ही समर्पित होते जाने की छटपटाहट लिये आशा का दीप जलाये दिखती है। संसाधन, आर्थिक व्यावसायिक बाधाओं व दर्शकों को अधिक से अधिक साक्षात् संवाद से जोड़ने व मनोरंजन के साथ अपने मूल उद्देश्य संदेश व सामाजिक संरचना से जूझती रंगकर्मियों, निर्देशकों व कलाकारों की एक समूची प्रतिबद्ध श्रृंखला से जुड़ी इस विधा में अपनी चार दशक से भी अधिक की रंगयात्रा व अभिनय कला से रंगमंच को समृद्ध करने वाले शहर के वरिष्ठ रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी थियेटर की जानी-मानी समर्पित हस्ती ही हैं।

आकाशवाणी और दूरदर्शन के ए श्रेणी के कलाकार व पिछले लगभग तीन दशकों से उत्तर भारत के प्रतिष्ठित थियेटर ग्रुप दर्पण से जुड़े डा. रस्तोगी अब तक सत्तर से भी अधिक नाटकों व सात सौ से भी अधिक प्रदर्शनों से पूरे देश में ख्याति प्राप्त हैं। इस अमेच्योर नाट्य संगठन से आपका नाता पिछले 25 वर्षों से सचिव के रूप में रहा है व इसकी प्रतिबद्धता से स्वयं को जोड़कर, अपनी भाव अभिव्यक्ति व अभिनय क्षमता से आपकी विशिष्ट पहचान रही है। पूरे देश में अभिनय यात्रा कर चुके डा. रस्तोगी लगभग सभी ख्याति प्राप्त रंगकर्मियों व निर्देशकों के साथ काम कर चुके हैं। संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, कलाकार सोसाइटी ऑफ इंडिया अवार्ड, प्रसिद्ध रंग भारती सम्मान व थियेटर प्रबंधन व अभिनय के लिये रंग यात्रा अवार्ड पाने वाले समर्पित व वरिष्ठ रंगकर्मी डा. रस्तोगी जहां रंगमंच के, आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यमों से चार दशकों से समाज संदेश की सार्थक भूमिका निर्वहन करते आ रहे हैं, वहीं औषधि अनुसंधान व चिकित्सा क्षेत्र में आपका योगदान विशिष्ट ही रहा है। 1943 में लखनऊ के एक व्यवसायी परिवार में जन्मे आपकी शिक्षा रस्तोगी व जुबली कालेज में हुई। यहीं से नाटक की आपकी अभिरुचि के साथ-साथ जैव-रसायन में एम.एस.सी., केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान में जूनियर रिसर्च फैलो से प्रारंभ सेवा यात्रा दोनों साथ-साथ चलती रही। जैव रसायन में पी.एच.डी. तो क्रमिक रूप से जैव रसायन विभाग के अध्यक्ष व वरिष्ठ उपनिदेशक के पद से निदेशक ग्रेड में सेवानिवृत्त होने वाले वैज्ञानिक डा. रस्तोगी इस क्षेत्र में सौ से भी अधिक रिसर्च पेपर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों में, व विभिन्न लेखों के माध्यम से प्रस्तुत कर चुके हैं। पैरासाइट जैव रसायन, डायबिटीज व अन्य गंभीर रोगों पर आधुनिक शोध हेतु जर्मनी व कई यूरोपीय देशों की यात्राएं कर चुके डा. अनिल रस्तोगी चिकित्सा वैज्ञानिक होने के साथ-साथ रंगमंच की अपनी अभिनय यात्रा से संवेदनशील समाज शोध विज्ञानी की अपनी भूमिका भी बखूबी निर्वहन करते रहे हैं। रंगमंच वस्तुतः समाज चिकित्सा का ही सशक्त माध्यम जो है। रस्तोगी कालेज से युवावस्था में प्रारंभ हुई रंगयात्रा संतराम शुक्ल जी के निर्देशन में अनेक नाटकों में अभिनय से परिपक्व होती प्रमुख रंगकर्मियों के सान्निध्य से परवान चढ़ती गयी। 1972 में दर्पण से जुड़े, उससे प्राप्त मंच व बाद में आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से अपने अभिनय से आपने सशक्त पहचान बनाई। वी.वी.कारंत, अलोक वर्मा, सूर्य मोहन कुलश्रेष्ठ, पुनीत अस्थाना, उर्मिल थपलियाल, विजय वास्तव, हेमेन्द्र, बंसी कौल, प्रयाग वर्मा, कुमुद नागर, प्रकाश जोशी, चित्तरंजन जाफरी व रवि वासवानी जैसे सुविख्यात रंगकर्मियों व निर्देशकों के साथ काम कर चुके डा. रस्तोगी मामा टोनी बाबू व डा. घनश्याम दास व अपने आज को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हैं। तो अपने प्रेरक निर्देशकों के अत्यंत विनम्र आभारी भी हैं जिन्होंने उनकी प्रतिभा का बखूबी इस्तेमाल किया।

यहूदी की लड़की, पंछी जा पंछी आ, तुगलक, सरवालम बाहर, पर्याजल नायक, आस्टोपस, कमला, जैसे कई-कई प्रसिद्ध नाटकों में आपका अभिनय सराहा गया है। पंछी जा पंछी आ को तो सर्वाधिक प्रसिद्धि (मि.स.) ... दीनानाथ जी के निर्देशन वाली इस रंगकृति का मंचन तो लगभग चार सौ बार हो चुका है। तो उधर दूरदर्शन के सुविख्यात हुए और अब पुनर्प्रसारित हो रहे सीरियल उड़ान में आपकी पुलिस अधिकारी की भूमिका मील का पत्थर ही बन चुकी है। इसने आपको राष्ट्रीय ख्याति दिलायी। यहूदी की लड़की से आकाशवाणी में आपको सराहा गया। प्रत्येक भूमिका में प्रस्तुति व अभिव्यक्ति से सशक्त अभिनेता डा. रस्तोगी हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व जर्मन भाषा के जानकार विद्वान हैं। सुविख्यात नादिरा बब्बर की बहन नजमा जहीर जो आपकी सहपाठी रहीं, उनसे उर्दू भाषा सीखने वाले व निरंतर रंगमंच को अपनी अभिनय क्षमता से समृद्ध करने वाले डा. अनिल रस्तोगी संप्रेषण की इस सर्वाधिक सशक्त व चुनौतीपूर्ण सामाजिक भूमिका अर्थात् रंगमंच में शार्टकट या शीघ्र प्रसिद्धि की बढ़ती प्रवृत्ति व इलेक्ट्रानिक मीडिया व फिल्मों से मिल रही चुनौती से थियेटर की उपेक्षा व समर्पण में कमी से आशंकित भी हैं, तो संरक्षण, व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाने व अधिकाधिक दर्शकों को जोड़ने की आवश्यकता के साथ-साथ मनोरंजन से अधिक प्रासंगिकता व संदेश की उसकी भूमिका पर चिंतित हैं। आत्मकेंद्रित होती सामाजिकता ने लोगों को मनोरंजन प्रधान बना दिया है।

संवेदना व संदेश जागृति से समाज उत्थान की थियेटर की भूमिका अब कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण वे मानते हैं। ये वर्तमान में बढ़ती सकारात्मक सोच व नये-नये आयामों से नव प्रयोगों की भूमिका अब कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण वे मानते हैं। ये वर्तमान में बढ़ती सकारात्मक सोच व नये-नये आयामों से, नव प्रयोगों की भूमिका तो साथ ही समर्पित कलाकारों की अपेक्षा भी आप को आशान्वित करती है। संस्कृति विभाग, भारतेन्दु नाट्य अकादमी व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में थियेटर प्रशिक्षण को अनिवार्य पाठ्यक्रम व सरकारी संरक्षण के साथ प्रोफेशनल दृष्टिकोण से दर्शकों की वृद्धि की उनकी अपनी विशिष्ट सोच व मान्यता भी है। कारण कि कमियों के चलते हिन्दी थियेटर अन्य भाषाओं की तुलना में पिछड़ता दिख रहा है। यद्यपि साथ ही डा. रस्तोगी रंगकर्मियों व नव प्रतिभाओं की एक प्रतिबद्ध श्रृंखला व बढ़ती जन जागरूकता व बढ़ती चिंता चर्चा से आशावादी व उत्साहित भी हैं।

अभिनय को वे रंगमंच में स्क्रिप्ट, म्यूजिक, दर्शक व निर्देशक सबके होने की मूल अग्रणी रंगमंचीय प्राथमिकता मानते हैं, कारण कि संवाद की सीधी भूमिका अभिनेता की ही है। संस्थाओं व व्यक्तियों की बढ़ती सकारात्मक भूमिका रंगकर्म की इस विधा को विकसित करती होगी व संरक्षण व प्रोत्साहन के साथ समर्पित अभिनेता जन मानस को संवेदना से जोड़ते होंगे, इस परिदृश्य में बहस व चर्चा से अधिक व्यावहारिक सोच व सशक्त अभिनय के दर्शकों को बांधा जा सकता है। रंगमंच और सी.डी.आर.आई. के माध्यम से भी एक लंबी भूमिका निभाने वाले कलाकार की संवेदनशीलता को समझा जा सकता है। इन्होंने ... कार्यरत उच्च शिक्षित पुत्र के प्रेरक पिता भी हैं।

नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज के फेलो व कई तकनीकी व प्रशासनिक समितियों के अध्यक्ष रहे औषधि वैज्ञानिक डा. रस्तोगी की यात्रा मोहल्ले, कालेज, रंगमंच, राष्ट्रीय ... थियेटर, आकाशवाणी व दूरदर्शन से फिल्मों तक विस्तृत रही है। नारी शिक्षा निकेतन में ... शास्त्र की रीडर व विभागाध्यक्ष डा. सुधा रस्तोगी आपकी जीवन संगिनी हैं। मानव शास्त्र, जेनेटिक्स व ... पर कई प्रसिद्ध पुस्तकों की लेखिका डा. सुधा रस्तोगी अनिल जी की वैज्ञानिक व रंगकर्मी की दोहरी दायित्व भूमिका में सहभागी व सहयोगी रही हैं। शिक्षा, तकनीक व परिवर्तन के दौर में उससे कदमताल करने को अनिल जी प्राथमिक मानते हैं। रंगमंच को भी बदलते दौर, संक्रमित व्यवस्था आर्थिक व व्यावसायिक दबावों के बीच भी वे बेहद चुनौतीपूर्ण मानते हैं। यद्यपि समर्पण व जुड़ाव की बढ़ती नयी पीढ़ी की उत्साहवर्धकता से वे आशान्वित भी हैं। अभिनय, रंगमंच व चिकित्सा अनुसंधान में अपने विशिष्ट योगदान से समाज की सेवा करने वाले वरिष्ठ व समर्पित कलाकार को शतश: नमन।

सुधा

जागरण 10-01-2006

रंगमंच की एक अज़ीम-ओ-शान शख्सियत है डॉ० अनिल रस्तोगी

(आमिर खान)

लखनऊ दिसम्बर। बदलते परिवेश में आज लोग रंगमंच को भूलकर छोटे बड़े पर्दे की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में कलाकार अपनी कला के जौहर किसे दिखाये। जबकि इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता है कि रंगमंच एक ऐसी विधा है जो कलाकार की कला को निखार कर परिपक्व बनाती है जिससे कलाकार [illegible] करोड़ों दर्शकों के दिलों पर राज करता है। इतिहास साक्षी है फिल्म इण्डस्ट्री पर रंगमंच के कलाकारों का वर्चस्व कायम है और वे प्रत्येक किरदारों को बखूबी निभाते हैं। इतना ही नहीं गैर रंगमंची कलाकार भी [illegible] के लिए भी [illegible] निभाते हैं। रंगमंच का [illegible]

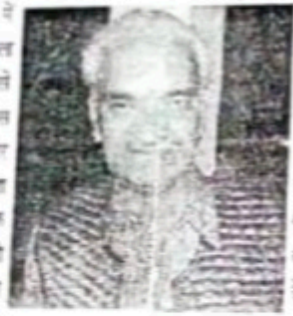

और वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. अनिल रस्तोगी की चर्चा न हो ये कतई सम्भव नहीं है। श्री रस्तोगी के आवास पर हमारे पब्लिक पावर के प्रमुख संवाददाता आमिर खान ने एक मुलाकात की जिसमें उन्होंने बताया कि आज रंगमंच में काफी अंतर आ गया है एक तो अच्छे नाटकों का अभाव है और युवा पीढ़ी कलाकार रंगमंच को बस सीढ़ी बनाकर टेलीविजन या फिल्मों में जाने की मंशा रखते हैं हालांकि उनकी मंशा उचित है क्योंकि फिल्म पैसा व शोहरत साथ-साथ देता है परन्तु उन्हें रंगमंच को सिर्फ माध्यम के जरिये अपनी कला को उभार लाना चाहिए। लखनऊ की सरजमीं पर जन्मे श्री रस्तोगी ने रंगमंच की शुरुआत 1958-59 में [illegible] नाटक से की तदोपरान्त 1962 में [illegible] कालेज में आयोजित प्रतिभा पुरस्कार वितरण के अवसर पर सत्यव्रत शुक्ला के निर्देशन में मंचित नाटक वन एक्टर्स में काम किया। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने उन्हें कलाकार के रूप में स्वीकार कर लिया। 1964 में हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखित तथा सत्यव्रत शुक्ला द्वारा निर्देशित नाटक एकादान में यादगार भूमिका निभाई। यह पूछने पर कि उन्हें लोकप्रियता किस नाटक से मिली पूछने पर उन्होंने बताया कि 1966 में रविन्द्रालय में मंचित नाटक [illegible] से उन्हें काफी ख्याति मिली। इसके

बाद श्री रस्तोगी [illegible] निवासी राजेश्वर बच्चन की शरण में आये और उनसे नाटक के गुर सीखे। 1967 में श्री बच्चन ने उन्हें के.एन. मुंशी की उपन्यास पर आधारित नाटक जय सोमनाथ में काम दिया जिसे के.पी. चन्द्रा डायरेक्ट कर रहे थे और इस नाटक में लगभग सभी [illegible] कलाकार काम कर रहे थे लिहाजा उन्हें काफी छोटा किरदार मिला। परन्तु उनकी अनूठी अदाकारी से आकर्षित होकर निर्देशन कर रहे श्री चन्द्रा ने मन्दिर के पुजारी शिवराशि का रोल दिया गया। जिसे उन्होंने अपनी अव्वल अदाकारी से किरदार को जिन्दा कर दिया। इस नाटक के बाद अनिल रस्तोगी की अपनी एक अलग पहचान बन गयी और लोगों ने उन्हें एक सम्पूर्ण अभिनेता मान लिया। इसके बाद उन्होंने के.पी. सक्सेना के साथ काफी नाटकों में अभिनय किया जो सी.डी.आर.आई. में भी मंचित हुए। सन् 1972 में दर्पण संस्था से जुड़कर गिरीश कर्नाड के नाटक है वदन में विजय वास्तव तथा शोभना जगदीश के साथ काम किया। दो वर्ष तक रंगमंच से नाता तोड़कर श्री रस्तोगी जर्मनी में रहे। जर्मनी से वापस आने पर उन्होंने रवि बासवानी का नाटक अन्धायुग में चुनौती भरा किरदार किया।

शेष पृष्ठ 6 पर

PUBLIC POWER

13.12.2007

रंगमंच की एक अज़ीम-ओ-शान...

पृष्ठ 1 का शेष...

उसे अनुपम खेर छोड़कर मुम्बई चले गये थे। जिसमें किरदार निभाने के लिए काफी दिनों तक उन्होंने उर्दू की शिक्षा ग्रहण की। 1975 में लखनऊ दूरदर्शन का उदय हुआ। जिसमें प्रसारित [illegible] राह बेगम [illegible] और नहीं [illegible] सफर [illegible] आदि सीरियलों में काम किया। आकाशवाणी में [illegible] के लिए भी श्री रस्तोगी ने काफी काम किया। सबसे अधिक उन्हें नेशनल से प्रसारित उड़ान से प्रसिद्धी हासिल हुई। जिसमें दर्शकों ने उन्हें लखनऊ एस.एस.पी. के रोल में सराहा। [illegible] गुब्बारा आदि तमाम टेली फिल्मों में अभिनय करने वाले अनिल रस्तोगी आजकल [illegible] बेदी की फिल्म यहां सब ठीक है में अभिनय करने की तैयारी में हैं। इस फिल्म को रंजीत कपूर डायरेक्ट कर रहे हैं। जिसमें ऋषि कपूर की [illegible]। नसीरुद्दीन शाह, पंकज कपूर, अनुपम खेर, शबाना आज़मी [illegible] अदाकारी को पसन्द करने वाले अनिल रस्तोगी राज [illegible], [illegible] सूर्य मोहन कुल श्रेष्ठ [illegible] को अपना [illegible] मानते हैं। [illegible] में डॉ. अनिल रस्तोगी ने युवा पीढ़ी के कलाकारों को अपने संदेश में कहा कि [illegible] को सीढ़ी न बनाकर उसकी पूजा करें और [illegible]

नाटकों में अभिनय के बूते पर अलग पहचान है डा. अनिल की

निर्भय राजवरूप

लखनऊ शहर में जन्मे ४९ वर्षीय डा. अनिल रस्तोगी, पिछले तीस वर्षों से रंगमंच से जुड़े हैं। इस दरम्यान आप लगभग ...स-साठ नाटकों तथा कई लोकप्रिय ...वी. सीरियल में अभिनय कर चुके ... अपनी प्रतिभा और अभिनय के ...बूते इस क्षेत्र में एवं दर्शकों के बीच ...नी अलग पहचान बनाने में कामयाब ...।

आज के सफल कलाकार डा. अनिल ...तोगी जी ने अपनी कला यात्रा रंगमंच ... शुरू कर नाटकों और टी.वी. ...रियलों में सशक्त अभिनय कर दर्शकों ...बीच काफी शोहरत भी पाई। इनसे एक मुलाकात के कुछ अंश प्रस्तुत ...

आप रंगमंच से कब जुड़े?

मुझे बचपन से ही लगाव था। ...कृतिक कार्यक्रमों और स्कूल उत्सव ...ग लिया करता था। मन में इच्छा ...कि मैं भी नाटकों में अभिनय करूँ, ...भी रस्तोगियों में नाटक में काम ... की परम्परा बहुत पुरानी है। उस ...न ऐतिहासिक नाटक एवं वीर रस ...नियों पर आधारित नाटक हुआ करते थे।

उन्होंने बताया कि हम लोगों का 'सांस्कृतिक संघ' भी था और उसके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में, मैं भी हिस्सा लिया करता था।

साठ के दशक में बजा जी, श्री जी.एम. चोपड़ा जी मंजे हुए निर्देशक माने जाते थे। बजा जी के साथ बच्चन जी उनके साथ सहायक के रूप में जुड़े थे। श्री बच्चन जी से मैंने बहुत कुछ सीखा। वैसे जहां से कुछ भी सीखने का मौका मिला उसे मैंने खोया नहीं। मुझे नाटकों में भी छोटी-मोटी भूमिकायें मिलने लगीं।

डा. अनिल रस्तोगी जी आगे बताते हुए कहते है कि सन् १९६२ में मुझे श्री संत राम शुक्ल ने बड़े मंच पर उतारा और मैंने नाटक 'पृथ्वी का स्वर्ग', 'ज्ञान की परख' में काम किया। तभी मुझे संतराम शुक्ल के निर्देशन में नाटक 'रक्तदान' में बहादुर शाह जफर केबेट का रोल करने का अवसर मिला।

१९६६-६७ से के.बी. चन्द्रा जी के निर्देशन में, रवीन्द्रालय में नाटक 'जय सोमनाथ' का मंचन हुआ। उसमें मैंने

काम किया। इसमें मेरा रोल छोटा तो अवश्य था किन्तु महत्वपूर्ण रोल था। इसमें काम कर मुझे अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला।

साठ के दशक में ही रमेश मेहता का मशहूर नाटक 'जमाना' में काम करने मुझे बम्बई जाना पड़ा और उसमें मुझे मुख्य भूमिका करने का अवसर मिला।

उस समय समाजिक नाटकों का चलन था। रमेश मेहता ने उस दौर में अनेक सफल समाजिक नाटक दर्शकों के सम्मुख पेश किये। उन्होंने लेखक, अभिनेता तथा निर्देशक के रूप में, सफलता प्राप्त भी करी।

डा. अनिल रस्तोगी जी ने अफसोस जाहिर करते हुये कहा कि आज इस सफल कलाकार एवं निर्देशक को कोई पूछता तक नहीं है। रंगमंच से जुड़े लोग उनका आज नाम तक याद नहीं करते।

उन्होंने बताया कि के.पी. सक्सेना, बच्चन जी, थपलियाल जी के साथ काम करने का अवसर मिला।

इसी बीच मैं दर्पण संस्था से जुड़ चुका था। सन् १९७२ में बाबा कारन्त यहां आये। उन्हें नये चेहरों तथा उभरते हुए कलाकारों की तलाश थी। उन्होंने मुझे भी उस नाटक में कपिल की भूमिका दी।

उन्होंने बताया कि बाबा कारन्त 'कल्पना शील मंच' लेकर आये, मुझे उनसे भी सीखने का अवसर मिला। इसी बीच मुझे जर्मनी जाना पड़ा, मैंने वहां के थियेटर के बारे में जानकारी एकत्रित की तथा विदेश से थियेटर का अनुभव लेकर लौटा, फिर मुझे यहां मैनेजिंग का भार भी सौंप दिया गया और एक्टिंग करना कम हो गया।

सन् १९७८ से दर्पण संस्था के सचिव पद की भी जिम्मेदारी निभा रहे है। उनका सपना है कि दर्पण संस्था की ख्याति अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हो। उनका मानना है कि संस्था की प्रतिष्ठा पहले है बाद में मेरी प्रतिष्ठा है।

आपका सर्वश्रेष्ठ नाटक कौन सा है?

मैं अपने नाटकों को सर्वश्रेष्ठ नहीं मानता हूँ। हाँ कुछ नाटक श्रेष्ठ अवश्य है, जिनमें थपलियाल जी का 'यहूदी की लड़की', 'बलराम की तीर्थ यात्रा', 'सूर्यास्त' तथा 'लहरों की वापसी' आदि अच्छे नाटक थे।

मगर मेरी अलग पहचान नाटक 'सखाराम बाइन्डर' से बनी। इसमें मेरा रोल बहुत चैलेन्ज से भरा हुआ था, क्योंकि उसमें जो डायलॉग बोलने थे, उनके शब्दों को मैं आसानी से नहीं बोल पाता था, क्योंकि उनमें जो शब्दों का प्रयोग था, वह सुनने में भी अच्छा नहीं लगता था, काफी बोल्ड नाटक था। मगर काफी प्रयासों तथा रिहर्सल के बाद कहीं सफल हुआ। मेरे द्वारा किया गया अभिनय सभी ने सराहा और पसंद किया।

टी.वी. सीरियल 'उड़ान' की लोकप्रियता के बारे में क्या कहना चाहेंगे? इसमें काम कर आपने क्या महसूस किया?

'उड़ान' सीरियल में मेरा चयन का श्रेय नाटक 'यहूदी की लड़की' को जाता है। सन् १९८९ में चौक में हुआ था, जिसमें कविता जी ने देखा था।

सीरियल की शूटिंग के दौरान ही मुझे फोन द्वारा संदेश मिला, तुरन्त बम्बई आओ, तुम्हें एक अहम् भूमिका करनी है। वहाँ पहुँचने पर मुझे मेरी भूमिका समझाई गयी, जो कि एस.एस.पी. की थी।

इस सीरियल में कविता चौधरी, उनके माता-पिता का किरदार पावरफुल था। मुझे अपने किरदार की भूमिका में कुछ कमी लग रही थी, किन्तु वह कमी भी दूर हो गई। कविता चौधरी के साथ काम कर बहुत अच्छा लगा। वह हर एक की छोटी-छोटी गलतियों पर, डायलॉग बोलने पर, या कोई कमी सामने आने पर तुरन्त उसमें सुधार करवा देती थीं।

इस सीरियल की लोकप्रियता और सफलता का श्रेय कविता चौधरी को जाता है। इसकी लोकप्रियता को देख गर्व अवश्य महसूस होता है।

आपके आने वाले नये ... कौन-कौन से हैं?

आजादी की शिखायें, ... डाक्यूमेन्ट्री फिल्म, परिव... मारीचिका फिल्म भी चार वर्ष ... चुकी है किन्तु अभी रिलीज न... नाटक 'पंछी जा-पंछी ... वर्षों बाद पुनः मंचित हु... समय बाद उसमें दुबारा ...

आपने क्या महसूस किया?

इस नाटक को करते ... कुछ बना हुआ था, क्योंकि... एक परिवर्तन किया था औ... कलाकार पुराने थे।

सिर्फ इतना कहना च... कलाकार शिन्सियरटी से... जबकि हर युवा कलाकार ... चाहते है और तुरन्त सफ... उन्हें धैर्य से तथा लगन ... चाहिए।

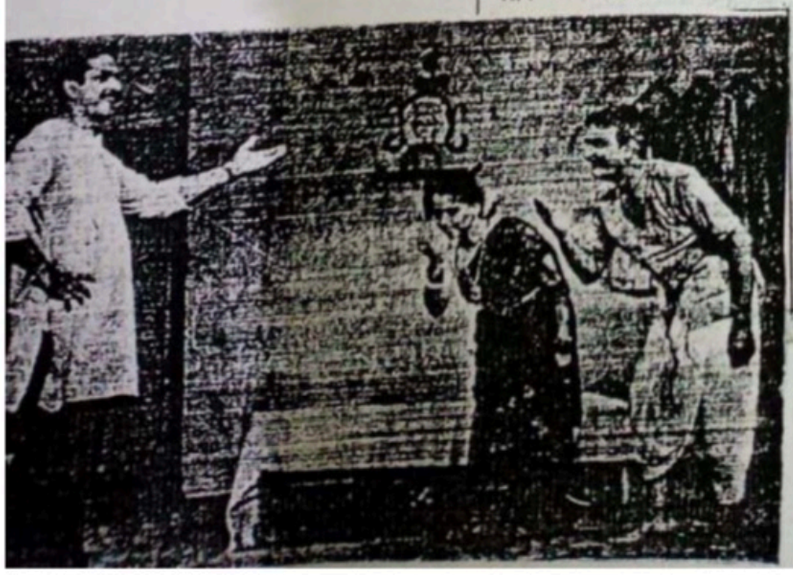

नाटक "नामहीन किनारे" के एक दृश्य में रूपराज नागर, संध्या रस्तोगी एवं अनिल रस्तोगी (दायें)।

'जो कुछ भी है थियेटर की वजह से हो पाया'

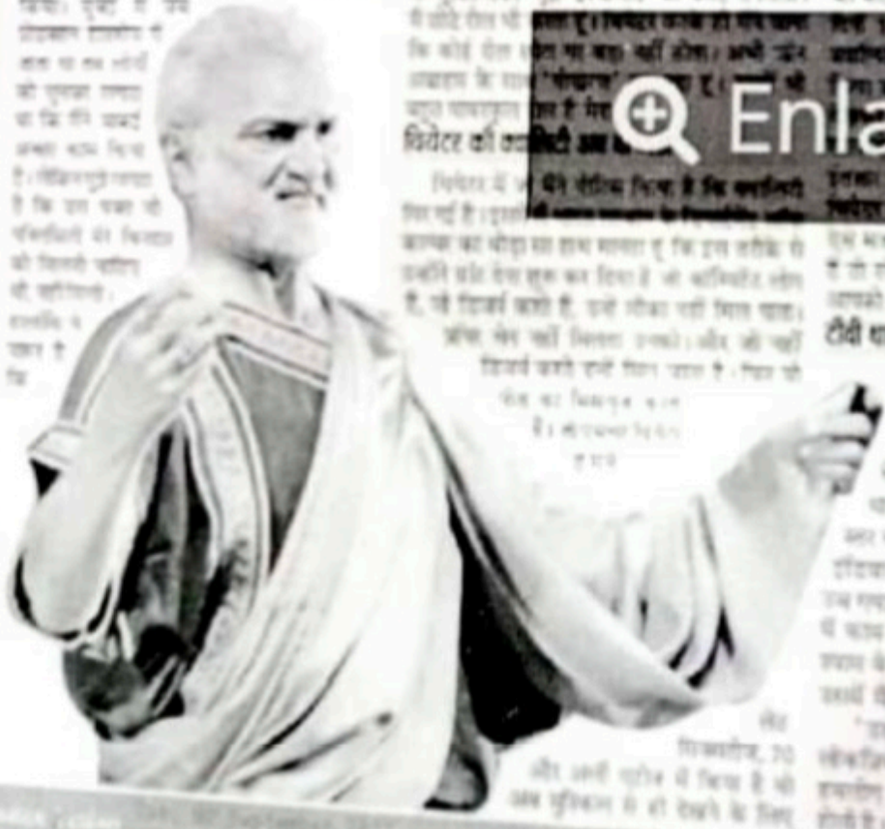

वह 70 की उम्र पार कर चुके हैं पर थिएटर और फिल्मों को लेकर जुनून अब भी बरकरार है। हाल में 'मुक्ति भवन', 'बारात कंपनी' और 'बाबूमोशाय बंदूकबाज' जैसी फिल्मों में नजर आए अभिनेता अनिल कुमार रस्तोगी भले ही एक या दो सीन में नजर आते हों पर हर सीन के साथ अपनी मौजूदगी दर्ज कराते हैं। पेशे से वैज्ञानिक रहे इस अभिनेता ने लंबे समय तक थिएटर भी किया है। वह रेडियो और टीवी हर माध्यम में काम कर चुके हैं लेकिन थिएटर के बाद फिल्में करना उन्हें सबसे ज्यादा पसंद है।

थिएटर से है प्यार

मैं कोई पॉपुलर आर्टिस्ट नहीं हूं

टीवी धारावाहिक करने में मजा नहीं आता

फिल्म इंडस्ट्री बहुत कमर्शियलिस्टिक

अभिनय कोरी अनुकृति नहीं है

• अनिल रस्तोगी

रस्तोगी - इस बिरादरी के लोग बहुत व्यापार की सीमा के दायरे में ही कैद रहे हैं। लेकिन अब इस बिरादरी के लोग इस सीमा को तोड़कर नये क्षितिजों की खोज कर रहे हैं। कला-संस्कृति विज्ञान ... और प्रशासन हर क्षेत्र में रस्तोगियों की उपस्थिति बढ़ रही है। एक व्यापारिक परिवार में डा. अनिल रस्तोगी पेशे से वैज्ञानिक हैं। लेकिन कला या थियेटर से जुड़े ... अपने लिए अभिनय का दायरा बढ़ाया। ... के साथ-साथ वे आकाशवाणी और दूरदर्शन के नाटकों से भी जुड़े हैं। कविता चौधरी के सीरियल 'उड़ान' ने उन्हें नयी पहचान दी। ... टी. वी. के पुनः छोटे पर्दे पर आजादी की लिखावटें, बानो बेगम जैसे सीरियलों के अलावा टेलीफिल्म दिल की दौलत में दिखायी पड़ेंगे। केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सी. डी. आर. आई.) में ये सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। काला ज्वर और टाइफाइड की औषधि भी इन्होंने ईजाद की है।

प्रस्तुत है अभिनेता अनिल रस्तोगी से एक बातचीत-

• आप विज्ञान के छात्र रहे हैं। यह अभिनय से कैसे रिश्ता बना?

☐ यह इत्तफाक से हुआ, या कोई आंतरिक ऊर्जा थी, जिसने मुझे रंगमंच की ओर उन्मुख किया। इस विषय में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कह सकता। उन दिनों मेरे समुदाय में विभिन्न अवसरों पर नाटक हुआ करते थे। श्री राकेश्वर बच्चन ने मुझे रंगमंच के लिए प्रेरित किया। उन्हीं के निर्देशन में मैंने थियेटर कैरियर की शुरुआत की। श्री बच्चन मेरे प्रारम्भिक थियेटर गुरु हैं। बाद में मैंने के. पी. चन्द्रा के निर्देशन में बलराम शुक्ला के निर्देशन में ज्ञान की परख, पृथ्वी की ओर जय सोमनाथ किया। उन्हीं दिनों दर्पण की स्थापना हुई थी। ब. व. कारंत 'हयवदन' करने आए थे। मैं अपने कुछ साथियों के साथ दर्पण से जुड़ा और 'हयवदन' में विजय बहादुर एवं शोभना जगदीश के साथ मुख्य भूमिका की। इसके बाद मैंने कारंत के ही निर्देशन में एक और नाटक एवं इन्द्रजीत किया। कारंत जी के साथ काम करके मुझे थियेटर में नये अनुभव हुए। इसके बाद अपने शोध के सिलसिले में जर्मनी चला गया था। वापस आया तो पुनः थियेटर से जुड़ गया। इस बार मैं काफी अधिक सक्रिय रहा और इस सक्रियता में प्रतिबद्धता का अनुभव करता रहा।

• उड़ान में आपका चयन कैसे हुआ?

☐ कविता चौधरी के भाई और उड़ान के कार्यकारी निर्माता कपिल चौधरी उड़ान की कास्टिंग के लिए लखनऊ आए थे। उन्होंने ही कविता से मिलवाया। फिर एक दिन बम्बई से कविता का फोन आया और मैं उड़ान में शामिल हो गया।

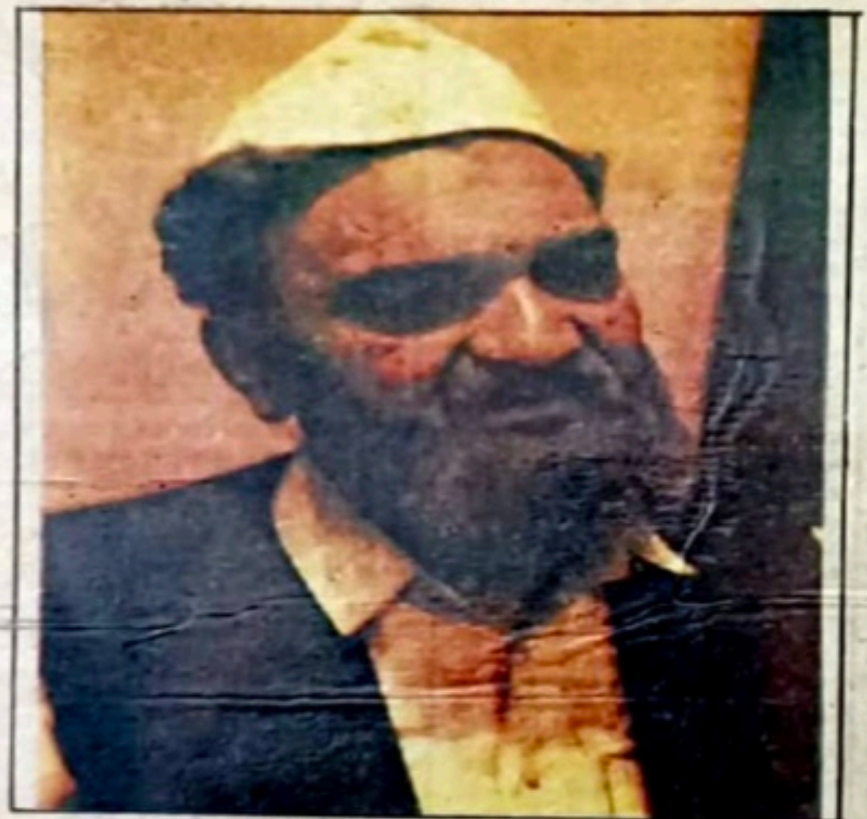

टेली प्ले 'बीवियों का मदरसा' में अनिल रस्तोगी

• उड़ान में आपका अनुभव कैसा रहा?

☐ मैं अपने थियेटर कैरियर से पूरी तरह संतुष्ट था। ... उड़ान ने मुझे राष्ट्रीय पहचान दी। इससे पहले मैं लखनऊ दूरदर्शन के लिए कई नाटक कर चुका था। मेरी नाट्य संस्था दर्पण ने दिल्ली दूरदर्शन के लिए कई प्रस्तुतियां की थीं। इसके साथ ब्रॉडकास्ट टी. वी. के लिए उर्मिल कुमार थपलियाल के लिए सुबह-सुबह का स्वांग और आलोपी वर्मा के लिए मिकी और रेखा फिल्मी कर चुका था। लखनऊ दूरदर्शन के सीरियल बीवी नातियों वाली में भी मैं था। गोगोल के प्रसिद्ध नाटक इंस्पेक्टर जनरल पर दिल्ली दूरदर्शन के लिए राकेश श्रीवास्तव ने टी. वी. प्ले तैयार किया है। उसमें मैं उत्पल दत्त के साथ था। श्री शांति चन्द सोनकर की टेलीफिल्म गुमनाम में मैंने एक मित्र की भूमिका की। मुकेश भटनागर के साथ विज्ञापन फिल्में कीं। पर्यावरण पर राष्ट्रपति पदक से सम्मानित नरेश सक्सेना के संकल्प में मुख्य भूमिका की। इसके अलावा प्रवीण भाई की फिल्म खून बहा गंगा में और सुधीर मिश्रा की 'यह वो मंजिल तो नहीं' कर चुका था। अतः कैमरा मेरे लिए नया नहीं था। फिर मैं थियेटर में भी निर्देशक का अभिनेता रहा हूं। यहां भी मैंने कविता चौधरी के सामने समर्पण कर दिया था और उन्होंने मुझसे बेहतर काम लिया।

• निर्देशक या अभिनेता? कृपया स्पष्ट करें?

☐ देखिये अभिनेता और अभिनय एक दूसरे के पर्याय हैं। अभिनेता के बिना अभिनय का अभिप्राय ही नहीं होता। अब जब हम कोई भूमिका करते हैं तो हमारे सामने एक निर्देशक होता है, जिसने हमें उस भूमिका की जिम्मेदारी सौंपी है। उस भूमिका को लेकर उसकी अपनी एक अवधारणा होती है। उसी अवधारणा से जुड़ा होता है, आपके प्रति उसका विश्वास। एक अभिनेता के लिए उस विश्वास को बनाये रखना और अवधारणा को समझना महत्वपूर्ण है। इससे ही उस किरदार के प्रति आपके सामने एक इमेज बन जाती और उसे आप सहज अभिनीत कर सकते हैं। अभिनय कोई अनुकृति नहीं है। एक निर्देशक की अवधारणा की अभिव्यक्ति अभिनय है। अभिनय के लिए अनुशासन बेहद जरूरी है यह अनुशासन तभी आयेगा, जब आप पर किसी का नियंत्रण हो। अतः मैं अभिनेता पर निर्देशक का नियंत्रण मानता हूं।

• इसका मतलब अभिनेता निर्देशक के हाथ की कठपुतली होता है?

☐ नहीं निर्देशक अभिनेता का पथप्रदर्शक होता है। निर्देशक उसे राह बताता है और अभिनेता अपनी मंजिलें तय करता है। आपको ये राहें पसंद न हों तो आप अपने रास्ते स्वयं चुन सकते हैं। बेहतर हो किसी दूसरे निर्देशक के साथ काम करके या आप स्वयं निर्देशक बन जायें।

• आपके आने वाले सीरियल कौन-कौन से हैं?

☐ उड़ान के बाद मैंने लखनऊ दूरदर्शन के दो सीरियल मुखड़ा क्या देखे दर्पण में और 'कहां चले कहां रहे' किए। प्राइम टाइम के दो सीरियल आर. के. मिश्रा का बानो बेगम और उमाशंकर आशीष मुखर्जी कृत आजादी की लिखावटें भी शीघ्र प्रसारित होने वाले हैं। देवेन्द्र गोस्वामी के टेलीफिल्म पद्मा में भी मेरी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसके अलावा कुर्तुल-एन-हैदर की कहानी नजारा-ए-दरम्यान है पर आधारित टेलीफिल्म दिल की दौलत में मैंने अहम किरदार निभाया है। श्री असद हुसैन शाह इसके निर्माता निर्देशक हैं। इस टेलीफिल्म की सबसे बड़ी खूबसूरती इसके संवाद हैं जो नाटककार इकबाल मजीद ने लिखे हैं। यह फिल्म शीघ्र ही लखनऊ दूरदर्शन द्वारा प्रसारित की जाएगी। एक फिल्म फीचर फिल्म है मरीचिका इसका भी प्रीमियर दूरदर्शन पर ही होगा।

• लखनऊ दूरदर्शन की जो स्थिति है उससे क्या कोई संभावनाएं बची हैं?

☐ लखनऊ दूरदर्शन ने बहुत समय तक शहर की रंग प्रतिभाओं की उपेक्षा की। मैं मानता हूं लखनऊ दूरदर्शन ने कई अच्छे नाटक तैयार किए। लेकिन टी. वी. का नेटवर्क बनने के बाद दूसरे केन्द्रों की तरह लखनऊ दूरदर्शन भी हाशिये पर चला गया। उधर विलायत जाफरी के आने के बाद काफी तब्दीलियां हुईं। उनके कार्यकाल में कोई नाटक रिपीट नहीं हुआ। आते ही उन्होंने दो सीरियल बनवाये। प्रायोजित सीरियलों की बुनियाद डाली। उन्होंने डा. राही मासूम रजा को लखनऊ दूरदर्शन के लिए लिखने के लिए प्रेरित किया। अतः नीम का पेड़ के बाद अब लखनऊ दूरदर्शन के लिए दर्जन भर सीरियल बन रहे हैं। यह श्री जाफरी के प्रयासों से सम्भव हुआ है। इन सीरियलों में लखनऊ और प्रदेश के कलाकारों को अच्छा एक्सपोजर मिल रहा है। लखनऊ दूरदर्शन को माइक्रोवेव से जोड़ने की बात थी। इससे इस केन्द्र का दायरा बढ़ जाएगा। सुनने में आया था, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अजित पांजा यह माइक्रोवेव कलकत्ता दूरदर्शन को दे रहे थे। सम्भवतः सचिव महेश प्रसाद के कारण अभी हमारी उम्मीदें बाकी हैं। हमें आगे इस तरफ पर ध्यान रखना है।

• विवेक चटर्जी

IN PURSUIT OF ACTING

Actor Anil Rastogi is busy shooting for his upcoming film *Z-Plus* in Jaipur. After Hrs caught up with him for an exclusive chat

AFTER HRS CORRESPONDENT
afterhoursjpr@dnaindia.net

CANDID TALK

You are a retired scientist from Central Drugs Research Institute. They why did you opt for Bollywood?

I have closely watched theatre as a child. But then, destiny had other plans for me. So, I joined the Central Drugs Research Institute and got the financial security but my passion for theatre never faded. I still remember that I started my theatre life with the play *Jahangir* in 1972. During my performance in a famous play *Yahudi Ki Ladki*, director of the serial *Udaan*, Kavita Choudhary, was quite impressed with my performance and offered me the role of a police officer.

Between theatre and movie, which one would you prefer?

Theatre gives self-satisfaction and peace, everything has to be done in one go, if you have emotions, you can portray it on stage but on the other hand, performing for a movie is easier, we can have retakes and use glycerine to stimulate tears.

How was your experience in *Z-Plus*?

In this movie, I am playing the role of a politician. Working with Dr Chandra Prakash Dwivedi has been a wonderful experience. Unlike other directors, he was rather supportive and he is a perfectionist. He guided us throughout the shoot.

Other projects that are keeping you busy?

I am shooting for a movie called *Guddu Rangeela*. It has Arshad Warsi as Rangeela, Amit Sadh as Guddu and Aditi Rao Hydri as Baby and I am playing the character of a politician.

What would be your dream role?

Any act which gives satisfaction and is noticeable is my dream role. It hardly matters whether the role is small or big. All that matters to me is appreciation.

Your experience of working with Shyam Benegal for *Samvidhaan*?

Unlike Shekhar Kapur's *Pradhan Mantri*, which had very little resemblance with the original characters, Shyam Benegal has made all the character lively and vivacious. He works differently. Whenever I made mistake, he used to make me do it all over again. I learnt a lot from him.

—Dalbeer Singh Negi/dna

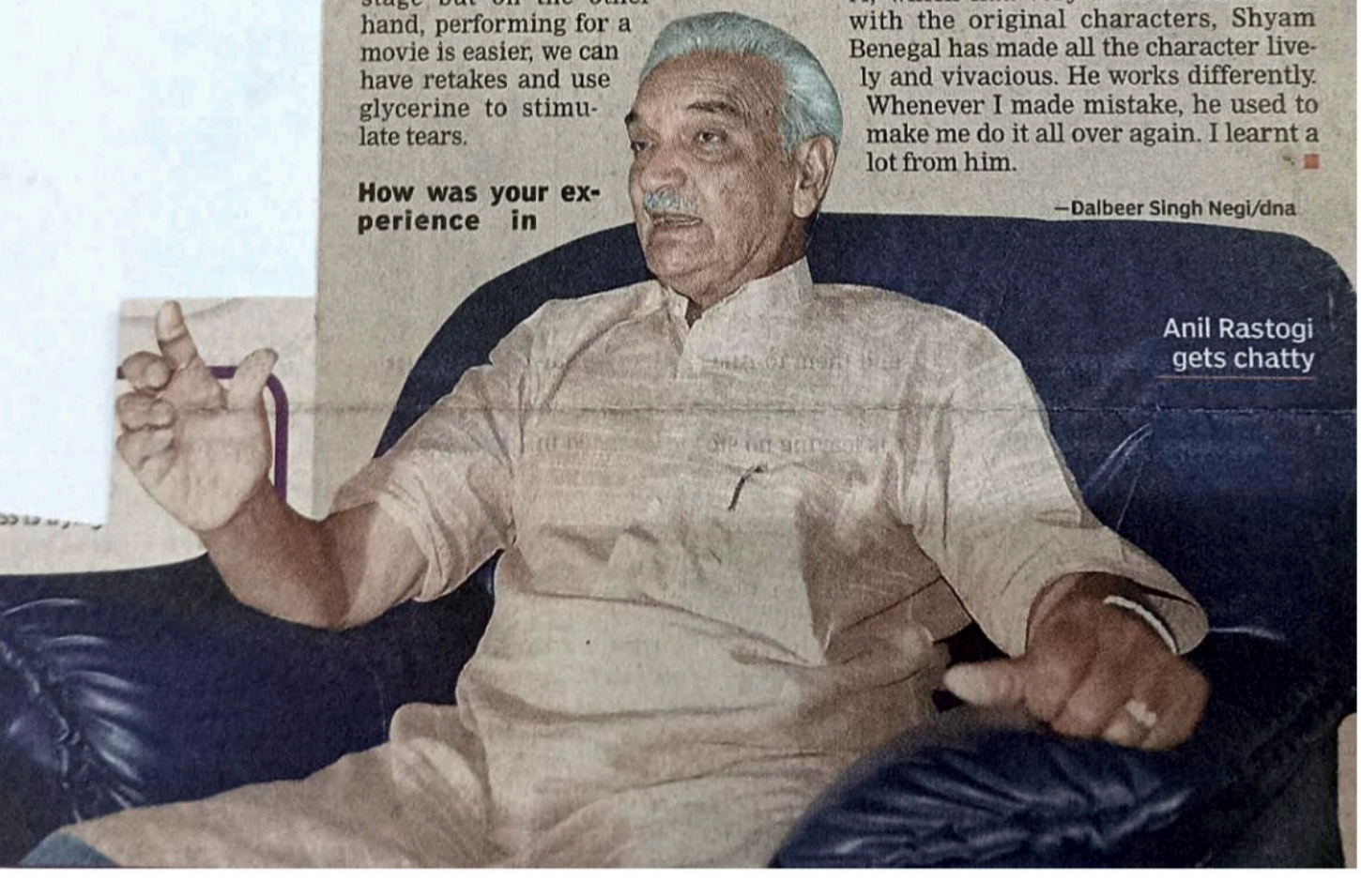

Anil Rastogi gets chatty

नवभारत टाइम्स
NBT
Lucknow Times
masalamix
OF INDIA
नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली/लखनऊ, शनिवार, 12 मार्च 2016 | ADVERTORIAL ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE

रोशन
सक
Page

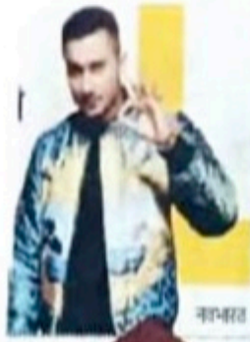

लखनऊ मेरे करियर में प्लस पॉइंट है : अनिल

इन्होंने करियर की शुरुआत लखनऊ के थिएटर से की और आज वे बॉलिवुड और टीवी इंडस्ट्री का जाना-पहचाना नाम बन चुके हैं। इस मुकाम के लिए वे लखनऊ को शुक्रिया कहते हैं।

Thank you Lucknow

Zeba.Hasan@timesgroup.com

वे साइंस और आर्ट दोनों फील्ड में माहिर हैं। सीडीआरआई में साइंटिस्ट रहते हुए भी उन्होंने लखनऊ थिएटर, दूरदर्शन और कई फिल्मों में अपनी पहचान बनाई। जॉब से रिटायर होते-होते उनके एक्टिंग करियर में कई फिल्मों का नाम जुड़ गया था। कॉलेज टाइम से शुरू हुआ उनका एक्टिंग का सफर आज भी जारी है। हबीब फैसल की फिल्म इशकजादे ने उनके करियर को नई उड़ान दी और इन दिनों वे मुम्बई में अपनी सफल सेकंड इनिंग की शुरुआत कर चुके हैं। यह हैं लखनऊ के रस्तोगी टोला, राजा बाजार में रहने वाले डॉ. अनिल रस्तोगी। अनिल इन दिनों 'कलश' और 'दिल को फिर जीने की तमन्ना है' में दादाजी की भूमिका में नजर आ रहे हैं। लखनऊ थिएटर से शुरू हुए इस सफर के बारे में अनिल कहते हैं कि आज मैं जहां भी हूं, उसका क्रेडिट लखनऊ रंगमंच को ही देना चाहूंगा।

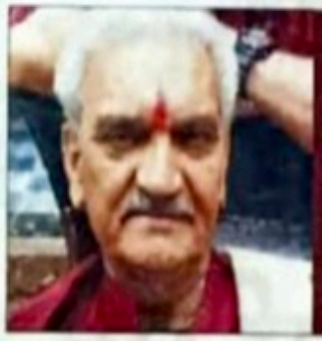

जॉब के साथ किया रंगमंच

उस वक्त मैं 12वीं क्लास में पढ़ता था। अमीनाबाद में एक छोटा सा हॉल था, जहां नाटक हुआ करते थे और वहीं मैंने पहली बार नूरजहां नाम के नाटक में रोल किया। 1963 में 'वनस्पति शाखा' एक मोनो नाटक हुआ, जिसमें मुझे काम करने का मौका मिला। फिर 'मां की पुकार' में मैंने लीड रोल किया। उस समय तक मैं छोटे-छोटे ऑडी में नाटक किया करता था लेकिन राजेश्वर बच्चन के निर्देशन में 'रक्तदान' करने का मौका मिला और मैंने पहली बार रवींद्रालय में प्ले किया। 1972 में मैंने दर्पण थिएटर संस्था जॉइन की और गिरीश कर्नाड के लिखे और एनएसडी के बंसी कौल के निर्देशन में 'हयवदन' नाटक किया। जॉब के साथ ही हमेशा मैं थिएटर से भी जुड़ा रहा क्योंकि एमएससी पास करते ही मुझे 1962 में सीडीआरआई में जॉब मिल गई थी।

एंजॉय कर रहा हूं सेकंड इनिंग

'इशकजादे' को मैं अपनी सेकंड इनिंग का पूरा क्रेडिट देता हूं। इस फिल्म ने मुझे पहचान दिलाई। मुंबई में लोगों ने मुझे इस किरदार की वजह से जाना। इसी की वजह से मुझे 'न बोले तुम न मैंने कुछ' कहा सीजन 2 के कास्टिंग डायरेक्टर ने नंबर ढूंढ के मुझे बुलाया और उसके बाद से सिलसिला लगातार जारी है। 'उड़ान', 'रजिया सुल्तान', 'कलश', श्याम बेनेगल का 'संविधान', 'दरीबा डायरी' जैसे कई शोज मुझे मिले। अब तो मेरे बेटे ने मुम्बई में एक फ्लैट लेकर दे दिया है और मैं वहीं सैटल हो गया हूं।

रंगमंच ने दिलाई पहचान

सीडीआरआई के थ्रू मैं दो साल के लिए विदेश गया। वहां से आने के बाद फिर से मैं रंगमंच, फिल्म और दूरदर्शन से जुड़ गया। मेरे पैशन को पूरा करने में फैमिली के साथ मेरे कलीग्स ने भी पूरा सपोर्ट किया। लखनऊ के लोगों का बेहद प्यार मिला है, जिसकी वजह से मैं यहां हूं। 'यहूदी की लड़की', 'रुस्तम सोहराब', 'सखाराम बाइंडर', 'पंछी जा, पंछी आ', 'ताज महल का टेंडर', 'शाहजहां' जैसे कई फेमस नाटकों के साथ दूरदर्शन के लिए भी काफी काम किया। 'जहां चाह, वहां राह', 'मुखड़ा क्या देखना दर्पण में', 'बीबी नातियों वाली', 'बन्नो बेगम', 'पीली आंधी' जैसे कई टीवी शो के साथ 'उड़ान' में एसएसपी का किरदार निभाया। जहां तक फिल्मों का सवाल है तो मेरी पहली फिल्म 'खून बहा गंगा में' थी, जिसमें अमृता सिंह और आदित्य पंचोली थे। इसके बाद 'मैं, मेरी पत्नी और वो', 'पिंटू जी', 'मरीचिका', 'कॉफी हाउस' और मोनिका जैसी फिल्में करने का मौका मिला। यहां मैं कह सकता हूं कि मुझे जो काम मिला, वो मेरे रंगमंच की पहचान की वजह से मिला। लोगों को मंच पर मेरा काम पसंद आया और फिर मैंने कैमरे के सामने खुद को प्रूव किया।

Straight from science to fiction

FROM science to fiction, this man has had the best of both the worlds. **Dr Anil Rastogi**, who began his career as a scientist at CDRI, is known more for something else – theatre. Having retired as Head of Bio-Chemistry deptt, CDRI, and a scientist of director's grade, in 2003, Rastogi who's dabbled in theatre through all three mediums – stage, radio and television, just wants to carry on like this. What's more, films also join the list.

FIRST LOVE: During my time, there weren't many career options. So at that time, all I had dreamt of becoming was a scientist. When I completed my MSc, it was at a science exhibition that a play *Banaspati Shqwar* was organised and I participated in it. That play was a hit and brought me such recognition that there was no question of leaving theatre.

HOW WORLD CHANGED FOR ME: From then on, I started to participate in local plays. Finally, it was in 1971 that BV Karanth, eminent theatre person, shortlisted me to play the lead in *Hayavadan*, a play that dealt with the theme of completeness of a man. That's how I became a part of Darpan and ended up becoming its secretary in 1979, the post that I hold till now.

SOME THINGS ARE DESTINED! I remember how actor Anupam Kher was selected to play Yahudi in *Yahudi Ki Ladki*. But as luck would have it, after 15 days of his rehearsals, he got an offer for Mahesh Bhatt's movie *Saaransh* and Shyam Benegal's TV serial *Yatra*, because of which he had to quit the play. Since the play was already publicized, Dr Urmil Kumar Thapaliyal, the director of the play, offered me the role. And there was no looking back after that.

MORE FACETS: I also got an opportunity to do plays on radio and was rated as an A-grade artist on radio and TV as well. My first TV serial *Udaan* happened by chance. Kapil Chaudhary, Kavita Chaudhary's brother was in town and was looking for a face for the role of

Dr Anil Rastogi playing a father in the play *Kanyadaan*

ZARA HAT KE

an SSP Lucknow. He happened to see my play *Yahudi Ki Ladki* and was so impressed that he offered me the role straight away.

FORAY INTO FILMS: I've done films like Sudhir Misra's *Ye Woh Manzil Toh Nahi*, RD Singh's *Marichika* and the latest *Main, Meri Patni Aur Woh*. And just like my tryst with theatre, radio and TV, I've enjoyed doing films as much.

ARUNIMA SRIVASTAVA

TOI 12/08/2007

ATUL HUNDOO

विज्ञान और अभिनय का संगम

कहा जाता है कि विज्ञान और कला दो ऐसे किनारे जो कभी नहीं मिल सकते, लेकिन अनिल रस्तोगी ने इस बात को गलत साबित कर दिया और दोनों में ऐसा तालमेल बिठाया जो काबिले तारीफ है

Atul Pandey

एक साथ समाज सुधार के लिए दो रास्तों से जुड़े डा.अनिल रस्तोगी की प्रतिभाओं का लोहा सभी लोग मानते हैं. एक साइंटिस्ट के रूप में सीडीआरआई से जुड़कर जनसमूह के लिए अमीबाएसिस, लीश्मैनिएसिस, डायबटिक व बसा जैसी बीमारी सम्बन्धी दवाओं के निर्माण का काम किया. वहीं दूसरी तरफ रंगमंच से जुड़ कर उन्होंने समाज में लिप्त अन्धविश्वास और कुरीतियों वगैरह को खत्म करने के लिए लोगों को अवेयर किया. आज वह सीडीआरआई से रिटायर होकर अपना सारा समय उन युवाओं को देने में लगे हैं, जो रंगमंच से जुड़ना चाहते हैं. डा. रस्तोगी के लिए यह कहना कहीं भी गलत नहीं होगा कि थिएटर की यह कला उन्हें विरासत में मिली है. यदि ऐसा नहीं होता तो जो छात्र सन् 1962 में सीडीआरआई जैसे इंस्टीट्यूट में एमएससी के लिए अपना एडमीशन लेता है उस पर अचानक रंगमंच से जुड़ने का भूत सवार हो जाए. उनका यह शौक और परवान चढ़ा जब उन्होंने साइंटिस्टों के पैनल में रंगकर्मी तैयार करा दिये और सीडीआरआई जैसे देश के अग्रणी इंस्टीट्यूट में उत्सवों के दौरान नाटकों का मंचन होने लगा.

रिसर्च के साथ ही उनकी यह कला किसी से छिपी नहीं रही. पहले तो बड़े-बड़े रंगकर्मियों ने इन्हें अपने नाटकों में किरदार देने के लिए आगे बुलाया बाद में सीरियल और सिनेमा में भी इन्होंने काम किया.

थिएटर और विज्ञान की दुनिया में क्या समानता और असमानता है?

समानता में दोनों ही क्रिएटिव हैं. थिएटर कैरेक्टर को क्रियेट करता है. साइंस समाज के हेल्थ और वैल्थ को क्रियेट करता है. यदि असमानता को देखा जाए तो एक इंटरटेनमेंट का साधन है तो दूसरा एकेडमिक है, जहां हर दिन नई सोच के साथ काम करना पड़ता है.

दोनों के समागम का फायदा?

थिएटर ने मेरे अन्दर बोल्डनेस पैदा की है. इससे रिसर्च को प्रेजेंट करने में कोई भी परेशानी नहीं हुई. मेरे अन्दर इस कला ने साइंस सम्बंधी कार्यों में एक्सप्रेशन और कम्युनिकेशन स्किल को डेवलप करने में मेरी काफी मदद की. इसका असर मेरे करियर पर बहुत ही अच्छा पड़ा. वहीं, एकेडमिक माहौल में मेरे अन्दर अनुशासन का संचार हुआ जिसने मुझे एक अच्छा रंगकर्मी बनाने में मदद की.

वर्तमान में रंगमंच की दशा क्या है?

इस समय तो इसकी दशा और दिशा दोनों ही बहुत खराब है. इसके पीछे के कारण नाटकों का दिशाहीन होना है. आज लखनऊ में ही इन नाटकों के मंचन की संख्या में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है. इसके चलते उनकी क्वालिटी में बहुत कमी आई है. रंगमंच से जुड़े कुछ गलत लोग अपने पर्सनल हितों के लिए अंधाधुंध तरीके से नाटकों का मंचन करने में लगे हुए हैं. लेकिन इनकी क्वालिटी पर ध्यान नहीं दे रहे हैं. इसी कमी के कारण आज भी ये नाटक दर्शकों को इकट्ठा करने में असफल होता नजर आ रहा है.

इसमें किस तरह के सुधार होने की गुंजाइश आप देखते हैं?

इसमें सुधार करने के लिए नाटकों के मंचन के साथ ही रंगकर्मियों को नाटकों की थीम को दर्शकों तक ले जाना होगा. साथ ही रंगकर्मियों को नाटक के प्रचार-प्रसार पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए. किसी भी नाटक के लोकप्रिय होने में यह ज्यादा महत्वपूर्ण होता है. आज का रंगमंच यहीं मात खा रहा है.

थिएटर को सबसे ज्यादा खतरा किससे है?

इस समय देखा जाए तो थिएटर के ऊपर का खतरा अब खत्म हो गया है. सन् अस्सी के दशक में टेलीविजन का प्रवेश हुआ था. उस समय इसने थिएटर के सामने सबसे बड़ी समस्या खड़ी की थी. उसके बाद केबल नैटवर्क का समय आया और लोगों ने चौबीसों घंटे इसको अपने इंटरटेनमेंट का साधन बना लिया. लेकिन अब लोग इससे बोर हो चुके हैं. अब वह इंटरटेनमेंट के लिए घर से बाहर निकलना चाहते हैं और कुछ नया देखना चाहते हैं.

यही सही मौका है लोगों को थिएटर की तरफ खींचने का. इसके लिए सभी नाट्य संस्थाओं को आगे आना चाहिए और एक साथ एकजुट होकर बढ़िया से बढ़िया प्रस्तुति देनी चाहिए, जिससे लोगों का एक नए तरीके से इंटरटेनमेंट हो सके

युवा पीढ़ी के कलाकारों के साथ काम करने के अनुभव में आप क्या फर्क पाते हैं?

मैंने पाया है कि इनमें उर्जा की कोई भी कमी नहीं है वह काम भी अच्छा कर लेते हैं लेकिन जो सबसे बड़ी समस्या है वह उनकी तेजी को लेकर है. वह जल्द से जल्द सब कुछ हासिल करना चाहते हैं. इसीलिए वह रंगमंच की तरफ की तरफ आते तो बहुत तेजी से हैं और फिर उसी तेजी के साथ ही वहां से सिनेमा और सीरियल की दुनिया की तरफ रुख कर जाते हैं. वह कम समय में सबकुछ हासिल करना चाहते हैं, जो एक्टिंग के लिहाज से ठीक नहीं है.

क्या ऐसे ही अनुभव आपको सांइस के फील्ड में भी होते हैं?

यह भी बात उतनी ही सही है जैसा कि रंगमंच के क्षेत्र में देखने को मिल रहा है. आज की जनरेशन अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहती है. इसलिए वह प्राईवेट सेक्टर में जाकर अच्छे पैकेज पर काम करना चाहती है. विज्ञान के क्षेत्र में लोगों को इतने पैसे नहीं मिल रहे हैं. इसके चलते ही आज का युवा विज्ञान के रिसर्च के क्षेत्र में नहीं जा रहे हैं. लेकिन इसका एक फायदा भी है, जो लोग अब विज्ञान से जुड़े क्षेत्र में आ रहे हैं वह वाकई में विज्ञान से जुड़कर कुछ करना चाहते हैं. युवाओं में साइंस के प्रति घटते हुए इंटरेस्ट को देखते हुए सीएसआईआर ने कई योजनाएं चला रखी हैं. यूवाओं को आगे लाने के लिए विज्ञान के पॉलिसी मेकर को इसके बारे में गहन विचार करने की जरूरत है.

स्टेज पर चढ़ता है सबसे उम्रदराज कलाकार

लखनऊ के रंगमंच में आज की तारीख में स्टेज पर चढ़ने वाला सबसे ज्यादा उम्रदराज रंगकर्मी डा. रस्तोगी है. रंगमंच के प्रति उनका यह समर्पण दर्शाता है कि आज भी वह किरदारों के रूप में लोगों के बीच जाना चाहते है. वह कहते हैं, आज भी उन्हें बहुत से लोग उन किरदारों के नाम से ही जानते हैं जो उन्होंने टेलीवीजन के सीरियल और नाटकों में निभाए हैं. वह आज भी किसी नाटक को करने से पहले नए किरदार को एक चैलेंज के रूप में लेते हैं.

डा. अनिल रस्तोगी

उपलब्धियां

अनिल जी की उपलब्धियों का जिक्र होगा तो जाहिर है एक नहीं दो लिस्ट बनेंगी. एक में रंगमंच की उपलब्धियों का जिक्र होगा तो दूसरी में विज्ञान के क्षेत्र की उपलब्धियों का. विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े रहकर डा. रस्तोगी ने सीडीआरआई में विभिन्न पदों पर रहते हुए देश की कुछ बड़ी बीमारियों पर जैसे अमीबाएसिस, जीशमैनिएसिस, डायबेटीज व वसा से जुड़ी समस्याओं पर कार्य किया. इनके अंतर्गत उनकी करीब 100 शोध पत्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए.

रंगमंच के क्षेत्र में *दर्पण* जैसी संस्था को अस्तित्व में लाने के लिए इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है. डा. रस्तोगी आकाशवाणी व दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं. आकाशवाणी से उनका संबंध 1971 से है, जहां उन्होंने सैकड़ों नाटकों, फीचर्स वार्ताओं में भाग लिया. इसके आलावा कविता चौधरी के सीरियल 'उड़ान' ने इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर एसएसपी बशीर अहमद के रूप में पहचान दी जो किरदार आज भी लोगों के ख्यालों में जीवित है. इसके बाद तो उनके जीवन में सीरियलों और फिल्मों का तांता लग गया. लेकिन इन सब के बीच जिस एक बात का उन्होंने ख्याल रखा वह यह था कि इन कामों से उन्होंने कहीं भी अपने विज्ञान से जुड़े कार्यों को प्रभावित नहीं होने दिया. इसके साथ ही थिएटर के साथ कभी भी कम्प्रोमाइज नहीं किया.

डा. रस्तोगी 1984 में अपने रंगमंच के सराहनीय कार्यों को लेकर उत्तर प्रदेश संगीत नाट्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुए. फनकार सोसाइटी आफ इन्डिया का उत्पल दत्त पुरस्कार, रंग भारती पुरस्कार से भी डा. रस्तोगी सम्मानित हुए.

इसके साथ ही विज्ञान के क्षेत्र मे भी वह समय समय पर सम्मानित होते रहे.

देश विदेश दौरा

देश और विदेशों का दौरा भी उन्होंने खूब किया. नाटकों के मंचन के लिए उन्होंने पूरे देश का दौरा किया. साथ ही में अग्रिम शोध व सभाओं के लिए आप दो बार जर्मनी व चार बार डेनमार्क का दौरा किया.

PEOPLE

PERSON OF THE WEEK

Anil Rastogi

DOCTOR ON THE SET

"Excuse me, but I seem to have seen you somewhere."
"Are you in the police?"
"You are the SSP in Udaan!"

It has been six years since *Udaan* was viewed on Doordarshan, but even today Dr Anil Rastogi continues to be recognised as Bashir Ahmed, senior superintendant of police in Kavita Chowdhary's acclaimed serial.

Senior scientist and deputy director at the Central Drug Research Institute, Lucknow, Rastogi is a skilled juggler of his twin interests, in science and theatre: he can reproduce his favourite couplets from *Yahoodi Ki Ladki* and give a lecture on free-living micro-organisms with equal ease.

"After eight hours of research activities, theatre provides the necessary outlet," says the affable greyhaired scientist-artist.

Though Rastogi's family did not care too much about a conventional education, his older brother was keen that he pursue an academic line. Thus, after a postgraduate degree in biochemistry, he went on to acquire a doctorate degree in the subject. By then he had already joined the CDRI as junior research fellow.

An academician actor? Anil Rastogi is a scientist whose role as Bashir Ahmed in the tv serial *Udaan* brought him into our living rooms. **Namita Bajpai** meets the man who is synonymous with Lucknow's wellknown theatre group, Darpan

"The year 1962 was the most memorable and wonderful year of my life. I joined the CDRI, got married and began theatre."

In the following year he played the lead role in *Maa Ki Pukar*, based on the Indo-China war. In 1972 he joined Darpan, an amateur theatre group. By 1978 he had become the secretary of Darpan which under him has come to be recognised as the largest and most prolific theatre group in the area.

Before he stepped on to the stage he had already gained considerable fame as an A grade artiste of the All India Radio and had participated in several plays, features, talks and discussions in Hindi and Urdu.

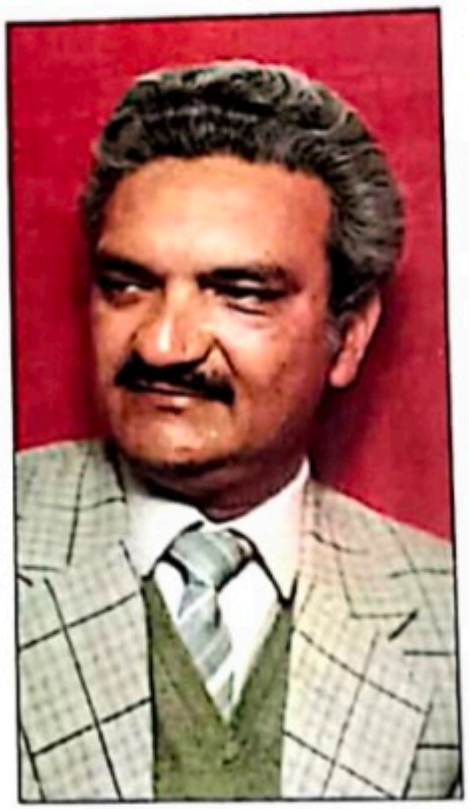

Some time later, he was approved as an A grade artist of Doordarshan Kendra, Lucknow, for whom he did several serials, including *Bano Begum, Jahan Chah Wahan Rah, Mukhra Kyu Dekhein Darpan Mein, Subah Subah Ka Suvng* and *Biwi Natyion Wali*.

There were a couple of interesting teleplays including *Inspector General*, and telefilms such as *Atmaghat, Gumrah* and *Nazara Darmyian Hai*. Among the regular programmes were *Aap Ke Liye, Fursat Mein, Qahqahe* and *Nagri Nautanki*.

His most important role so far has been in *Udaan*. His character was inspired by IPS officer Harideo Pillai. Rastogi featured in 10 out of a total of 33 episodes and was well appreciated. About the same time he did ad films for Indo Gulf Fertilisers, Modi Tyres and the State Bank of India. His preparation even for the smallest of roles, such as that of the sarpanch in the Modi Tyres clip, is thorough.

The Awadhi-speaking hookah-smoking sarpanch looked as if he was brought in from a UP village.

In between, he also acted in a television adaptation of Enid Blyton's Five Find-Outers. With a pillow to add girth to his middle and a hale-fellow-well-met air, he did not need much else to play the role of Mr Goon, the village policeman, a perfect foil to Find-Outer Fatty's detective skills.

Rastogi has had a brush with the big screen: He acted in three feature films, *Khoon Bahu Ganga Mein, Mareechika* and *Ye Woh Manzil To Nahin*.

But as an actor his first love is the stage. "The audience makes an actor. The immediate response from a live audience is heady."

In his 30 years in theatre he has done more than 800 shows of 70 plays all over the country. Accolades were many but he values the UP Sangeet Natak Academy award as among the highest.

One of his most challenging roles was of Yahoodi in *Yahoodi Ki Ladki*. He was replacing Anupam Kher who had left after a brief stint with Darpan. "I was under immense psychological pressure as I had to justify the audience's expectations," he recalls.

He is at ease in most roles he enacts but admits that he was uncomfortable playing the part of Sakharam Binder in the eponymous play. "The protagonist was vulgar and had a foul tongue. I was so uncomfortable, I would rehearse in isolation," says Rastogi. He has refused several offers to play the character again.

Among his most popular roles he includes the character he played in *Panchhi Jaa, Panchhi Aa*. He has enacted the role over 200 times. *Tadbatan Nasoor* with S M Zaheer and *Pankh* with Benjamin Gilani are some of the other projects in the pipeline.

His dream role? "I want to do a monologue, bring out different shades in a single character."

His involvement in theatre did not take away from his scientific quests. Along with his team of scientists Rastogi did considerable research on the mechanism of an insulin releasing drug. He and his team began T3 and T4 hormonal tests for thyroid related ailments at the institute for the first time in the state.

He is currently involved in the research on leishmania, a causative agent of kala-azar, and marine fauna and flora. Molecular biology and cloning too interest the scientist.

Rastogi has published several research papers and was awarded the prestigious DAAD fellowship in Germany.

So what does he do when it's not science or stage? "I spend time with my family."

एक वैज्ञानिक जो नाटकों में पूरे इत्मीनान से लौटा

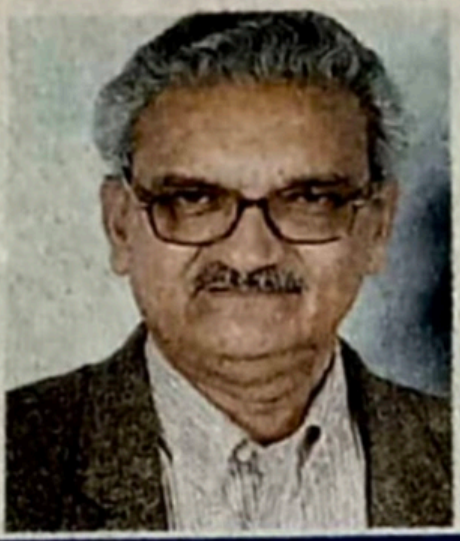

कला क्षेत्रे / डा. अनिल रस्तोगी

अब तक वे विज्ञान और रंगमंच दोनों ही नावों पर एक साथ चल रहे थे। कमाल तो ये रहा कि पिछले चालीस बरस तक वे केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक के साथ ही साथ दर्पण जैसी प्रतिष्ठित नाट्य संस्था के पदाधिकारी और अभिनेता के बीच खुद का काबिले तारीफ संतुलन बनाए रहे। लेकिन बीच-बीच में ऐसा भी हुआ जब विज्ञान की दुनिया के कठोर सच उनको रंगमंच से दूर ले गये लेक्रिन खुद डा.अनिल रस्तोगी नाटकों की दुनिया से अपने को ज्यादा दिनों तक दूर नही रख पाये। अब उन्हें बधाई दी जाए या फिर अफसोस जताया जाए,.. ? लेकिन यह डा.रस्तोगी का नाटकों से जुड़ाव ही है जिसके चलते वे तीस अप्रैल सन् 2003 को केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान से चालीस वर्षों की सेवा के बाद रिटायर होने पर दुखी नहीं बल्कि बहुत खुश हैं। संस्थान के निदेशक डा.सी.एम.गुप्ता व उनके तमाम सहयोगी साथियों व प्रशसंकों ने एक विदाई समारोह में उन्हें भावभीनी विदाई दी।

रिटायर होने के बाद सबसे पहले 'हिन्दुस्तान' से बात करते हुए अपनी चिरपरिचित हंसी में डा.रस्तोगी बोले-'अब मैं दर्पण को पूरा समय दे पाऊंगा। कोशिश होगी कि दर्पण हर महीने एक नाटक अपने दर्शकों को दे सके।' केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान से वरिष्ठ उप निदेशक व जीन रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद से रिटायर हुए डा.रस्तोगी पिछले चौबीस साल से दर्पण नाट्य संस्था के सचिव हैं।

अब उनकी योजना है कि सन् 2001 में तीस वर्ष पूरे होने पर अपना नाट्य महोत्सव करने के बाद सन् 2002 में सन्नाटे में रहे दर्पण को पूरी तरह सक्रिय करने की। इस सिलसिले की शुरुआत हो रही है 13 मई को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में नाटक 'अबुहसन' के मंचन से। उसके बाद गिरीश कर्नाड का नाटक 'अग्नि और बरखा' पुनीत अस्थाना के निर्देशन में, फिर डा.उर्मिल कुमार थपलियाल की नयी स्क्रिप्ट 'तुम सम पुरुष न मोहसम नारी' का मनोज जोशी के निर्देशन में मंचन। फिर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वरिष्ठ रंगकर्मी प्रसन्ना के साथ प्रस्तुति परक नाट्य कार्यशाला। इन तैयारियों के साथ डा.रस्तोगी अब एक और संकल्प लेकर सक्रिय होंगे नाटकों की दुनिया में। यह संकल्प है अब तक के अध्यस्क थियेटर के नाम पर व्यावसायिक रंगमंच से कोसों दूर रहे हिन्दी नाटकों के टिकट आधारित मंचनों का। डा.साहब साफ कहते हैं-'हम अपने अन्य रंग समूहों और संस्थाओं से भी बात करेंगे और तय करेंगे कि चाहे पांच-दस रुपये की मामूली टिकट दर ही क्यों न रखी जाए लेकिन अब नाटक 'पास' पर नहीं बल्कि टिकट पर ही किये जाएं। बिना टिकट के अब शो नहीं करेंगे...।'

चालीस साल पहले संतराम जैसे तजुर्बेकार निर्दशक के निर्देशन में बतौर अभिनेता अपना पहला नाटक करने वाले डा.रस्तोगी की विज्ञान की दुनिया से रंगमंच के रुपहले-सजीले संसार में पूरी तरह से हुई यह वापसी नाटकों के शौकीनों के लिए शायद एक अच्छी खबर साबित हो सके...।

प्रस्तुति-सन्तोष वाल्मीकि

वाह-वाही से लगा थियेटर का चस्का, अब पसंद है चुनौती

- विज्ञानी रंगकर्मी डा. अनिल रस्तोगी ने दी नाटक स्वाहा की प्रस्तुति
- छह दशक से अधिक समय से रंगकर्म की दुनिया में हैं सक्रिय

जागरण संवाददाता, आगरा: छह दशक से अधिक समय से रंगकर्म से जुड़े डा. अनिल रस्तोगी ने सोमवार को सूरसदन में नाटक स्वाहा की प्रस्तुति दी। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआइ), लखनऊ से बायोकैमिस्ट्री के प्रमुख और निदेशक ग्रेड वैज्ञानिक के रूप में संस्थान से सेवानिवृत्त डा. रस्तोगी ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा के काम को पहचान मिलने से और हतर करने को प्रेरणा मिलती है। सलिए वह 80 वर्ष से अधिक की म्र में भी नाटक कर रहे हैं और ख्य भूमिका निभा रहे हैं।

विज्ञानी होते हुए रंगकर्म से जुड़ाव सवाल पर डा. अनिल रस्तोगी कहा कि दोनों यात्राएं साथ-साथ चलीं। वर्ष 1961 में रंगकर्म से जुड़ाव हुआ। मामाजी नाटक करते थे, उनसे नाटक में लेने को कहा। पहला नाटक नूरजहां किया। लोगों की वाह-वाही और प्रोत्साहन से चस्का लग गया। वर्ष 1962 में सीडीआरआइ ज्वाइन किया। पहले बाहर नाटक करता था, बाद में सीडीआरआइ के लिए भी नाटक किए। वर्ष 1972 में दर्पण संस्था से जुड़ने के बाद पूरे देश में नाटक किए हैं। छह दशक से अधिक समय में रंगकर्म में आए बदलाव के सवाल

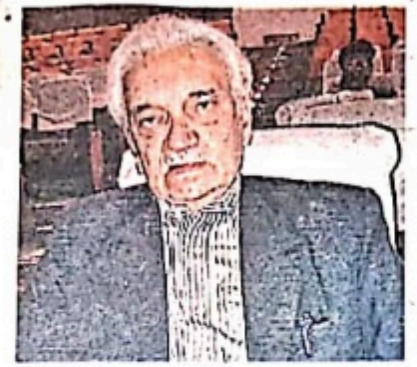

डा. अनिल रस्तोगी ● जागरण

पर रस्तोगी ने कहा कि पहले नाटक स्वांतः सुखाय होता था। लोग अपने सुख के लिए नाटक करते थे। आज की पीढ़ी रंगकर्म को आगे बढ़ने के लिए एक सीढ़ी की तरह उपयोग कर रही है। एक बात जो आज तक नहीं बदली है, वो यह है कि थिएटर में न तब पैसा था और न अब है। थिएटर से रोजी-रोटी चलाने वाले विरले ही होंगे। ओटीटी से रंगकर्म पर पड़े प्रभाव पर डा. अनिल रस्तोगी ने कहा कि इससे रंगकर्मियों के लिए अवसर बढ़े हैं। ओटीटी का बुरा पक्ष यह है कि इस पर कोई सेंसर नहीं है। इस दिशा में सरकार को कदम उठाने चाहिए।

इश्कजादे से मिला बड़ा ब्रेक: डा. अनिल रस्तोगी ने बताया कि उन्होंने पहली फिल्म सुधीर मिश्रा की 'ये वो मंजिल तो नहीं' की थी। इसके लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं किया गया था। सीरियल उड़ान से उन्हें पहचान और फिल्म इश्कजादे से बड़ा ब्रेक मिला। इसके बाद उन्हें लखनऊ से मुंबई शिफ्ट होना पड़ा। विकास दुबे पर आधारित वेब सीरीज ब्रिकरू कानपुर गैंगस्टर और भोजपुरी फिल्म लाटरी, ई कइसन बारात और मोहे प्यार के रंग में रंग सजना में नजर आएंगे। प्रियदर्शन की फिल्म राम राज्य में अशोक सिंहल और जय बजरंग बली हनुमान में चंपत राय की भूमिका वह निभा रहे हैं।

अक्षय कुमार ने निभाया उनका रोल

डा. अनिल रस्तोगी ने बताया कि अक्षय कुमार, जान अब्राहम और परेश रावल अभिनीत फिल्म गरम मसाला की कहानी उनके 1976 में अभिनीत नाटक पंछी जा पंछी आ मिलती है। फिल्म में अक्षय कुमार जो किरदार निभाया था, वह उन्हों नाटक में निभाया था। जान अब्राह और परेश रावल को जब उन्हों बताया तो चकित रह गए थे।

जागरण
www.jagran.com
आगरा, 27 फरवरी, 2024
सिटी

Awadh is known for delicacy, art and culture. For someone born in Lucknow, one can easily nurture any skill or talent as the city provides a conducive atmosphere

'Hum Fida-e-Lakhnau'

'LUCKNOW HUM PAR FIDA, HUM FIDA-E-LUCKNOW
AASMAN KI KYA HAI TAAQAT, JO CHHUDAYE LAKHNAU'

Anil Rastogi

This couplet by Munshi Naubat Rai Nazar (as told to me by my friend and historian Ravi Bhatt) suits me completely as I was not only born and brought up in Lucknow, I also got my education from Class 4 to PhD in the City of Nawabs.

Besides, Lucknow provided me with a job in such an organization (Central Drug Research Institute) which did not have a transfer policy. This helped me in making my career simultaneously in both the fields, science and theatre, and later in the electronic media. Lucknow is known for its delicacy, elegance, art and culture. Being a resident of Old Lucknow, I inherited all of these. Thus, everything could be easily nurtured as I was born in Lucknow.

Generally, one gets support from family and friends in one's endeavours but I was supported by the management, director, colleagues and students at CDRI, where I worked for more than four decades. They not only stood by me in my research work but also helped me pursue my passion for theatre.

I never neglected my job and being a sincere researcher, I was given many important responsibilities by successive directors from time to time, and I could fulfil the commitments with their support.

CDRI gave me opportunities to not only visit different places in the country to attend scientific meetings and conferences, it also sent me abroad for advanced research. The institute also helped me earn a Fellowship of National Academy of Sciences of India and listed me as an accomplished scientist of CDRI.

My career as an actor started taking shape with the opening of a branch of Darpan, an established theatre group of Kanpur, in Lucknow.

The kind of support I got from actors, directors and the audience of Lucknow was very encouraging. As its leader, I took Darpan to the entire country establishing its identity in other cities.

The last 40 years were memorable in my life when I got my first major break in the TV serial 'Udaan' which was telecast on national network, DD1.

I got the break while I was acting in a play 'Yehoodi Ki Ladki' in Chowk as part of Lucknow Mahotsav. Kapil, brother of Kavita (lead actor in the serial Kavita Chaudhary), just walked into the green room after the show and offered me the role.

My performance as senior superintendent of police and the mentor of the protagonist gave me national recognition.

I remember the days when, after the telecast of 'Udaan', I would attend scientific meetings in different institutions, people would not believe that I was the same Bashir Ahmad of 'Udaan'.

Another major break again came in Lucknow when actor Bhumi Pednekar visited the city to conduct auditions for 'Ishaqzade', a movie being made by Yashraj Films. I was selected for a very important role of the politician grandfather of Arjun Kapoor. This film paved the way for my entry in Bollywood.

I was offered a role in a daily soap. During my stay in Mumbai, I worked in a lot of serials, films and TV commercials and came in touch with big casting directors who still approach me for their new projects.

However, I could not stay there for long due to my love for theatre which flourished only in Lucknow and which I was missing in Mumbai.

During shooting in Mumbai mar directors would often ask me if I belo to Lucknow. When asked how they kn they would reply that my language way of talking suggest that I belo Lucknow. My casting as manager of Bhawan' (the film that got 30 intern and 3 national awards) and as Chi ister Sunder Lal in Prakash Jha's was done because I was in Luck shoots were to be done in Varanasi a hya, respectively.

After my return from Mumb some of the best plays of my life wi and my dream director Raj Bisaria only earned me recognition but al like Kalidas Samman (MP gov Yash Bharti (UP Government) a ship of UP Sangeet Natak Academ

With the inspiration I der people in Lucknow, I can only say know is just like my courtya city has given me unprec love. Whatever I am toda cause of this city and its p

(The writer is a f scientist at CDRI and a eran theatre, film television actor)

A scientist who loves acting

Here is a scientist who loves to act in plays, take part in telefilms and pen research papers. Here is a man with a difference...

SHWETA AGARWAL

THE term scientist creates an image of an absent-minded individual, who is always engrossed in bulky books, test tubes and apparatuses in one's subconscious. But Dr. Anil Rastogi is certainly a class apart as his personality is a blend of several aspects.

An eminent theatre personality, Doordarshan artiste and scientist, Dr. Rastogi is indeed a multi-faceted personality and a well-known face in Lucknow.

Theatre is a passion for this scientist who is at present holding the prestigious post of the Head of the Biochemistry department in the Central Drug Research Institute, Lucknow.

Born on April 4, Dr. Rastogi is a hard-core Aries and a born leader. He completed his post graduation in the year 1962 from the Lucknow University and subsequently completed his Ph.D. from the Agra University.

Rastogi's area of interest is a wide spectrum as his interest lies right from scientific research work to theatre and acting which is indeed two ends of a pole. In the scientific arena his interest includes mode of action of anti-diabetic drugs, biochemistry parasitic infection. Dr. Rastogi has 39 years of long experience in the field of metabolic disorders.

Moreover, he has to his credit more then 80 research papers published in both National and International journals.Coming to the other side of his personality, which happens to be love for acting, Rastogi has been graded as 'A' grade artist of Doordarshan and All India Radio, Lucknow.

He has acted in several television serials ,teleplays and also hosted the special programmes for Doordarshan Lucknow. His most popular television serial has been Udaan featuring him as Senior Superintendent of Police, which earned him recognition on national level also.As far as theatre is concerned Dr. Rastogi began his pursue for theatre since the year 1962 and is at present Secretary of Darpan, the oldest amateur theatre group in Northern India.

Dr. Rastogi acting in a play

Rastogi has performed in as many as 800 programmes and has acted in 70 plays all over India. "I love to do different roles, and does not like to be typecast". He further adds, "I would love to do a play which involves moon-acting."

A winner of UP Sang Natak Academy award, Rastogi has a good command over Hindi, English, Urdu and German languages. He feels that correct pronunciation and diction of a language depicts the respect for a particular language.

Dr Rastogi also won the National Award for his role as Jungle Thehedar in 'Sam bandh', a documentary film. Some of his famous plays include Shahjehan, Yahoodi ki ladki, Rustam Sohrab, Chandini ka zahar.

Times of India 4th January 2002

The Glitterati
e-magazine by City Konnect

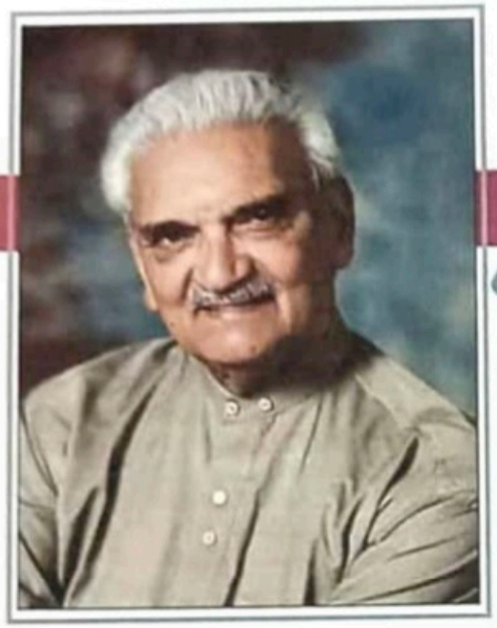

When a scientist decided to make a stint in Bolly'World

Anil Rastogi

"In 70s when most of the people take up sabbatical and just live through life, In that very age this multi-faceted persona decide to follow his heart and passion. After retiring as a scientist Anil Rastogi decided to pursue his passion for acting and theatre in second innings of his life. He rose to the crest of success after his credible acting in popular soaps Udan and Na Bole Tum Na Maine Kuch Kaha. However, Ishazaade turned out to be massive career turning point....Read on to know more about this Lucknawi Star...."

A Step towards Acting...

55 years, 32 films, 92 Plays and more than 1000 stage shows along with multiple films and commercials. No this in not aspiration of some wanna be a star, these are multiple platforms to Anil Rastogi's credit.

The story goes back to 1964, where Anil Rastogi was working with CDRI (Central Drug Research Institute). He throws light on those days and says, "We in CDRI had this trend of cultural festivals where we used to do lots of stage shows theatre being one of them. And, I was always inclined towards theatre. So, I got into this play called 'Banaspati Shayar'. This role got lot of recognition and it was a time when I started making my way in the world of theatre."

Making of a Star...

Anil Ji got his first break in 1971, where he started working as casual artist with Akashwani All India Radio. He started acting with the oldest theatre group Darpan in 1972 and did his first play Haye Vadan. After that there was no looking back. In 1975, he started anchoring with Doordarshan. However, his first movie break was Ye who Manzil toh nhi by Sudhir Mishra which won lots of national awards. However, his major breakthrough was Udaan along with Kavita Chaudhary where he went on to do role of Police Superintendent.

Anil Rastogi adds, "I was lucky enough to get all sorts of roles. If you remember there was this Akshay Kumar and John Abrahim starrer film called Garam Masala. It was an adaption of English comedy film called Boeing Boeing. This was directed by comedy king Dina Nath Ji in Hindi called 'Panchi Ja Panchi Aa.' I did the role of Casanova who was dating three air hostess (Laughs). We did more than 400 shows of the play."

However, he considers 4 Titles as game changers for him. Ishaqzaade being top which gave him a lot of recognition. Udaan, being second which he considers his breakthrough performance. Third is Athvan a 10 minute short film along with Renuka Sahane. Fourth being popular daily soap Na Bole Tum Na Maine Kuch kaha and Mukti Bhavan which gave him international Recognition.

Sunday Hindustan Times

LUCKNOW
SUNDAY
MARCH 12, 2023

MY LUCKNOW

SPOTLIGHT: AGELESS ACHIEVERS

At 79, scientist-turned-artiste still pursues his passion-- acting!

Aakash Ghosh
aakash.ghosh@htlive.com

LUCKNOW: At 79, when most people lead a retired life, former senior CDRI scientist and actor Anil Rastogi is still pursuing his passion—acting--contributing in all available mediums, including stage, radio, television, cinema and OTTs and yearning for more on a daily basis.

Shuffling the pages of an album and looking through old photographs of early days in his old but beautiful house on Subhash Marg, he recalls his first play at the age of 20, first film and TV serial at the age of 44 and becoming a household name at the age of 69.

He is among the very few who followed their acting passion despite having a secure career. He joined CSIR-Central Drug Research Institute in 1962 as a junior fellow and went on to become the institute's head of biochemistry department and directors grade scientist later, having trained multiple young researchers under him before he retired in 2003.

Even today, after having performed in over 900 shows of 95 plays across the country, 55 films and 11 OTT shows, Rastogi's thirst for more work is unquenched. However, the Lucknow-born actor says he had never intended to become an actor. "My goal during my service period was to become a scientist and conduct research. Acting just happened, which brought me national and international recognition," he said.

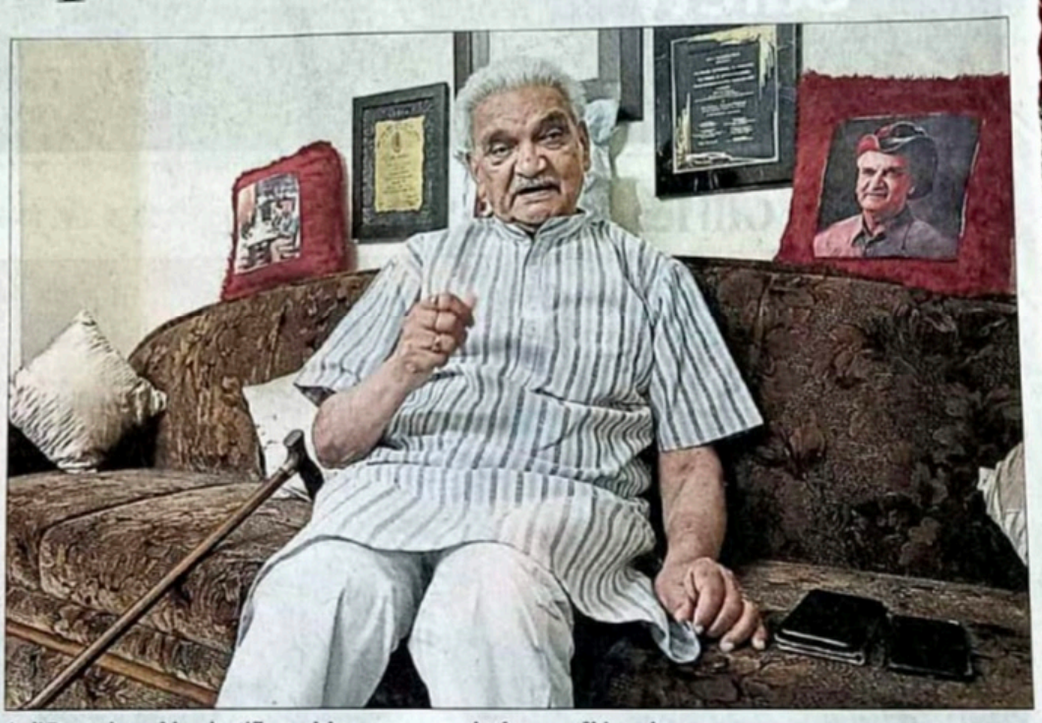

Anil Rastogi says his scientific work has never come in the way of his acting. DEEPAK GUPTA/HT

SCIENTIFIC CAREER

Rastogi completed his M Sc in biochemistry. "In 1962, I attended a civic gathering at CDRI for cosmonaut Uri Gagarin. I decided to come here (to the institute), and by God's grace, I was given a fellowship, after which I worked for 41 years in the same position. I retired as the head of biochemistry and scientist G (director's grade). I travelled to Germany, Denmark and other countries on multiple occasions. I've published 100 research papers and my PhD students are doing well in prestigious universities," he said.

ACTING CAREER

"In 1964, I was organizing an exhibition. For the first time, I performed a play called 'Banaspati Shayar' (fake poet), which received a lot of praise and inspired me. The same director began to promote me. KV Chandra was a big director back then and I got the character of chowkidar in his play 'Jai Somnath,' where I had to only stand at the gate, but as luck would have it, I graduated to being the major villain. For the first time, I was noticed in this performance," he says. With the establishment of the Darpan theatre group in 1971, he made his stage debut as the lead in BV Karanth's 'Haya Vadan' (1972), alongside Vijay Vastav and Shobhna Jagdish. He became Darpan's secretary in 1978 and continued on the post till 2017. "I worked a lot and took Darpan across the country. I continue to take it forward as general secretary even today," he added.

> THE LUCKNOW-BORN ARTISTE SAYS HE HAD NEVER INTENDED TO BECOME AN ACTOR, ACTING JUST HAPPENED.

His big screen journey started with Sudhir Mishra's directorial debut 'Yeh Woh Manzil to Nahi' in 1986. Then he did 'Khoon Baha Ganga Main' (1988), 'Chintoo Ji' (2009), 'Main, Meri Patni Aur Woh' (2005) and a few other films.

But the major break came with the 2012 film 'Ishaqzaade'," which he considers as the game changer.

Kavita Chaudhury's serial 'Udaan', daily soap Na Bole Tum Naa Maine Kuch Kaha (season 2) and films like 'Batla House' (2019) and 'Mukti Bhawan' (2016) brought him international recognition. 'Mukti Bhawan' won 132 international awards.

Rastogi was also seen in movies like 'Thappad' (2020), 'The Accidental Prime Minister' (2019) and 'Guddu Rangeela' (2015) among others and several recent OTT shows such as 'Aashram' (Season 1,2,3) (2020), 'Raktanchal' Season 2 (2022), 'Mumbai Diaries' (2021), 'The Suitable Boy' (2020) and 'Shiksha Mandal' (2022).

The actor will soon be seen in upcoming projects such as 'Bindia' with Richa Chaddha, 'Taali' with Sushmita Sen and 'Capsule Gill' with Akshay Kumar and Parineeti Chopra.

Rastogi takes inspiration from theatre veteran Raj Bisaria (83) who is still going strong. The actor credits his success to his wife Sudha Rastogi, his entire family, his institute and his fans for his success. He says his scientific work has never come in the way of his acting.

Rastogi is also the recipient of several awards, including UP Sangeet Natak Academy Award (1984), UP Sangeet Natak Academy Fellow (2008), Yash Bharti (2017) and Awadh Samman (2019). He is also a social worker who contributes his earnings to social causes. He provides free medication and other medical help to underprivileged patients in KGMU, Lucknow.

WRITE IN

Know anyone who is an elderly, but still committed to a cause, endowed with intellectual agility and exemplifies the spirit of 'to strive, to seek, to find, and not to yield'? Write in to saron@hindustantimes.com with details of such untiring crusaders of excellence.

The Real Page 3

All the world's a stage

ALL THE WORLD'S A STAGE

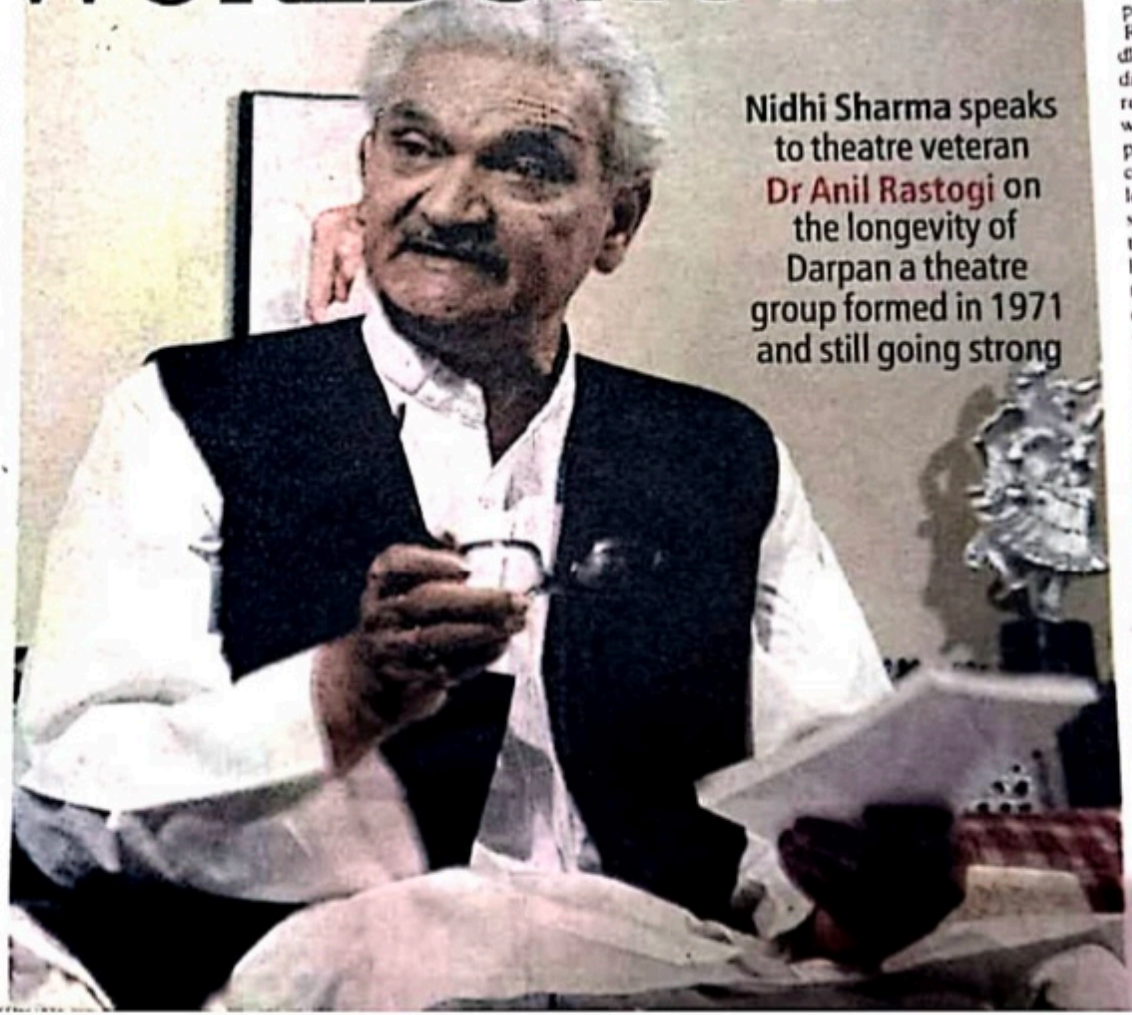

Nidhi Sharma speaks to theatre veteran Dr Anil Rastogi on the longevity of Darpan a theatre group formed in 1971 and still going strong

"IT feels really sad to see that Lucknow theatre, that was better than Delhi or Mumbai theatre around 15 years back, is not in such a good shape now." The man voicing this concern should know what he is saying for it is none other than veteran theatre artist Anil Rastogi from Darpan, one of the only theatre group that has managed to keep its position firm in times that are difficult for theatre. With no monitory gains due to lack of ticketed shows and a general or Lucknow audience disinterested in local theatre, Darpan has made no compromise with quality or standards of its play productions.

Formed in 1960 in Kanpur by Professor Satyamurthy, and subsequently at Lucknow in 1971, Darpan later spread to various other small towns and cities. However, Lucknow at least one performance a month and nothing less," informs Rastogi. Darpan saw its best years during 1970-1985, in which period most of its plays were instant hits.

Stating reasons why theatre in Lucknow suffered a setback in the past few years, Rastogi said that in metros like Delhi and Mumbai, various efforts were made by organisations like the National School of Drama and others.

Especially with the Bharatiya Rang Mahotsav that happens every year with 60-70 productions theatre received a big stimulus in these cities. However, nothing of this kind happened in Lucknow, where no concerted efforts were made by any group to bolster theatre. "Things have deteriorated further since then and it is only a few like Darpan that are striving hard towards keeping theatre active."

"We come up with at least two-three new productions each year. Going by the statistics, one would realise that even in bad times, Darpan has put up at least one performance a month and

"Unfortunately, due to the financial grants

it is quality work that Darpan believes in, he states.

As far as the difficulties in managing ticketed theatre performances is concerned, Rastogi said the biggest hurdle was to get an interested audience who are really keen on watching a good play. Besides, of course, the challenge is to present good quality theatre that has large number of takers. Giving an example in this regard, he said that besides metros, even in cities like Hyderabad, Hindi theatre has managed ticketed shows with tickets ranging from Rs 300 to Rs 3,000. However, due to various hurdles and practical problems it is nearly impossible to organise ticketed shows in Lucknow that can help manage resources for theatre to blossom.

"It is har believe th Darpan, a still com and say th we want t produce q work

Rastogi gave the example of Kolkata, where Usha Ganguly has established Hindi theatre with ticketing. Similar efforts need to be done in Lucknow and Darpan is trying its best to work towards this end. "The lack of infrastructure in the city, proper auditoriums, and lack of contribution by media hinder the possibility of ticketed shows in Lucknow," complains Rastogi. "There is a need for better auditoriums, that too, at

साइंटिस्ट होने के साथ एक आर्टिस्ट के रूप में मिली पहचान

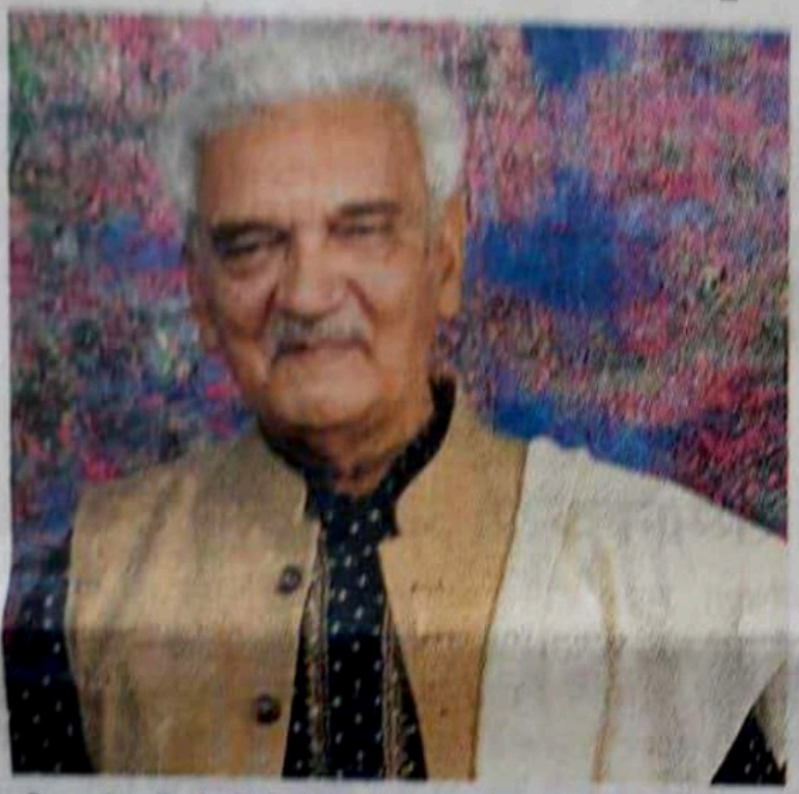

सिटी गेस्ट

डॉ. अनिल रस्तोगी
अभिनेता

लेक सिटी रिपोर्टर। हमारे यहां साइंस एग्जीबिशन में एक प्ले हो रहा था, तो मैंने भी उस रोल प्ले किया। जिसे मेरे कलीग्स मेरे बॉस ने बहुत सराहा तो इससे मुझे एक प्रेरणा मिली कि मैं एक्टिंग में अपना करियर बना सकता हूं। क्योंकि जब मैं एमएससी कर रहा था तो मुझे लगता था कि काश मैं भी एक्टिंग करता और फिर यह सपना मैंने थिएटर ज्वाइन करके पूरा किया। यह कहना है आश्रम, रक्तांचल जैसी फिल्म में दमदार रोल निभाने वाले डॉ. अनिल रस्तोगी का। वह रविवार की शाम भारत भवन की 40वीं वर्षगांठ समारोह में आए और लेक सिटी से बातचीत में उन्होंने अपने अनुभव शेयर किए। अनिल ने कहा कि मैं एक अभिनेता ही नहीं हूं बल्कि बाय प्रोफेशन में एक साइंटिस्ट हूं और बायो केमिस्ट के रूप में रूप में मैंने सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट में डायरेक्टर के पद से रिटायर भी हुआ हूं। एक्टिंग मेरा शौक था तो मैंने थिएटर चुना और 70 की उम्र में मुंबई की ओर रुख किया और फिर फिल्मों और सीरियल में रोल किया।

बव करंत, बंशी कौल के साथ में किया काम

अनिल कहते है कि एक साइंटिस्ट होने के साथ-साथ एक आर्टिस्ट के रूप में भी मैंने बखूबी काम किया और दोनों की कार्यों में अपना सौ प्रतिशत दिया। 1962 में ही मैंने शादी की और 1962 में ही मैंने रंगमंच थिएटर ग्रुप को ज्वाइन किया। बव करंत, बंशी कौल इन सभी के साथ मैं काम कर चुका हूं, इसमें मुझे पैसा पहचान सब मिली, एक अंदर से मुझे इच्छा थी कि मुझे इसी क्षेत्र में आगे बढ़ना है और फिर मैं आगे बढ़ता ही गया, दर्पण थिएटर ग्रुप ने मुझे सचिव दिया तो और मेरा काम बढ़ गया।

रंगमंच के जरिए मिले कई सम्मान

अनिल रस्तोगी ने कहा कि नाटक में कुछ चैलेंज होते हैं, जो आपको अच्छे से आगे बढ़ाते हैं। और इस रंगमंच के जरिए मुझे कई सम्मान भी मिले हैं और अब कालिदास सम्मान बहुत बड़ा सम्मान है। 1990 में कविता चौधरी का सीरियल उड़ान था जिसमें मैंने एसपी का रोल किया था जो काफी पॉपुलर हुआ। उसके बाद में एक बार कैंटीन के बाहर ऑर्डर दे रहा था तो डेढ़ सौ बच्चों ने मुझे उसी कॉस्टयूम में देखा और बोला अरे यह तो वही उड़ान वाले अंकल हैं। तो इससे मुझे एक पहचान मिली है और 70 के उम्र में जब लोग रिटायरमेंट लेते हैं तब मैंने मुंबई की ओर रुख किया और मेरा साथ मेरी किस्मत और मां सरस्वती ने भी दिया।

81वें जन्मदिन (चार अप्रैल 2024) पर विशेष:

'मैंने विज्ञान व अभिनय दोनों को एक दूसरे के आड़े नही आने दिया...'

डॉ. अनिल रस्तोगी

-शान्तिस्वरुप त्रिपाठी

62 वर्षों से थिएटर से जुड़े हुए मशहूर वैज्ञानिक,रंगकर्मी,फिल्म व टीवी कलाकार डॉ.अनिल रस्तोगी उम्र के 81वें पड़ाव के बाद भी सक्रिय हैं। 29 मार्च को प्रदर्शित फिल्म "बंगाल 1947" में वह आजादी से पहले बंगाल की एक रियासत के राजा के किरदार में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। इससे पहले वह अक्षय कुमार की फिल्म "मिशन रानीगंज" में रवि किशन के पिता के किरदार में नजर आए थे। 62 वर्ष के अभिनय करियर में 96 नाटकों के हजार शो के अलावा 'उड़ान' और 'ना बोले तुम ना मैने कुछ कहा' सहित 15 टीवी सीरियल तथा 'मुक्तिभवन', 'मैं मेरी पत्नी और वह', 'इश्कजादे', 'जेड प्लस', 'रेड', 'मुल्क', 'नक्काश' सहित साठ फिल्मों में अभिनय कर डॉ.अनलि रस्तोगी अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। डॉ. अनिल रस्तोगी ने अभिनय जगत में इतना काम लखनउ, उत्तर प्रदेश में रहते हुए किया है। 62 वर्षों से अभिनय से जुड़े हुए डॉ. अनिल रस्तोगी को अब तक 'यश भारती', 'उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी', 'कालीदास अवॉर्ड', 'अवध सम्मान' और राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित ढेरों पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। चार अप्रैल 2024 को वह 81 वर्ष के हो गए। हमने लखनऊ में उनके घर पर उनसे लंबी बातचीत की...

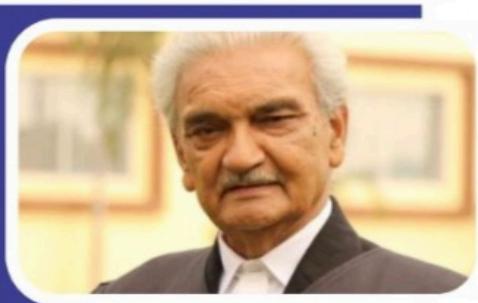

☐ आप तो मूलतः वैज्ञानिक हैं.फिर रंगकर्म और फिल्मों में अभिनय का सिलसिला कहां से शुरू हुआ?

देखिए, ऐसा है मैने अठारह वर्ष की उम्र से ही थिएटर करना शुरू कर दिया था। मैं थिएटर करता रहता था। फिल्में भी देखता रहता था। मगर मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैं कभी रेडियो पर जाउंगा या कभी टेलीवीजन व फिल्मों में अभिनय करुंगा। फिल्म में अभिनय करना तो मेरे लिए बहुत दूर की कौड़ी थी। मैने इस दिशा में कभी सोचा भी नहीं था। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि मुंबई मायानगरी में कलाकर कैसे पहुँचता है और फिल्मों के लिए कलाकार का चयन किस तरह से होता है। इत्तेफाक की बात है कि 1984 में सुधीर मिश्रा जी के पिता प्रोफेसर डी एन मिश्रा ने मुझे फ्रेंच भाषा पढ़ाई थी। जब मैने पीएचडी किया था,तब हमारे लिए एक भाषा का कोर्स करना अनिवार्य था, तो मैने फ्रेंच भाषा की पढ़ाई की थी। उस वक्त प्रोफेसर डी एन मिश्रा मेरे शिक्षक थे। मुझे किसी ने बताया कि प्रोफेसर डी एन मिश्रा के बेटे सुधीर मिश्रा अच्छी फिल्में बनाते है। मेरे थिएटर के एक मित्र आलोपी वर्मा एक दिन मेरे पास सुधीर मिश्रा की फिल्म में अभिनय करने का आफर लेकर आए, मगर बताया कि सुधीर मिश्रा इसके लिए मेहनताना नहीं देंगें। उन दिनों मेरे लिए फिल्म में अभिनय करना बड़ी बात थी, तो मैने हामी भर दी.मैने इस फिल्म में अभिनय किया। इसमें मनोहर सिंह व हबीब तनवीर साहब भी थे। मनोहर सिंह के बचपन का किरदार राज जुत्शी कर रहे थे और उनके पिता का किरदार मैने किया था। यह मेरी पहली फिल्म थी, जिसकी शूटिंग लखनउ में काजल होटल में हुई थी। पैसे नही मिले,मगर खुद को सिनेमा के परदे पर देखकर काफी अच्छा लगा था। फिर लखनऊ के ही एक बिल्डर जैन साहब ने एक फिल्म 'खून बहा गंगा में" का निर्माण किया। इसमें मैने ठाकुर का किरदार निभाया। मूलतः तो मैं ठहरा थिएटर का कलाकार। पर फिल्म 'खून बहा गंगा में' के दौरान निर्देशक ने मुझे समझाया कि थिएटर और फिल्म के अभिनय में अंतर होता है। तो मैं धीरे धीरे नई नई तकनीक सीखता आ रहा हूँ। लखनउ दूरदर्शन पर आर डी सिंह निर्माता थे, वह अच्छे कलाकार भी हैं। आर डी सिंह के कानपुर के मित्र एक फिल्म 'मरीचिका' बना रहे थे,तो आर डी सिंह ने इस फिल्म में हीरो के पिता का किरदार निभाने का अवसर मुझे दिला दिया। इसमें रघुवीर यादव जी भी थे। इस तरह फिल्मों में अभिनय का सिलसिला शुरू हुआ। फिर 1989 में कविता चौधरी ने मुझे बुलाया और अपने सीरियल "उड़ान" में अभिनय करने का अवसर दिया। सीरियल 'उड़ान' में एसएसपी बशीर अहमद का किरदार निभाने से मुझे अभिनेता के तौर पर राष्ट्रीय पहचान मिली। उससे पहले फिल्मों में छोटे छोटे किरदार कर रहा था,जिनसे पहचान बनना संभव ही नहीं था। 'उड़ान' से मिली पहचान के चलते मेरे पास फिल्मों के ढेर सारे आफर आ गए।

☐ आपकी शिक्षा कहां हुई और अठारह वर्ष की उम्र में थिएटर से जुड़ना कैसे हुआ था?

मेरे जन्म 1943 में लखनउ में ही हुआ और मैं लखनऊ में ही राजा बाजार में रहा करता था। मेरे मामा रामकिशोर उर्फ टोनी बाबू थे। हमारे। यहां पर पुराना थिएटर हुआ करता था। केसर बाग में मेरे मामा जी और मदन मोहन 'बाग मक्का' नाटक की रिहर्सल किया करते थे। मैने कई बार यह नाटक देखा। इस नाटक में पुरूष ही महिलाओं के भी किरदार निभाया करते थे। इस नाटक के कलाकारों को बडी वाहवाही मिलती थीं। 1961 में ऐश बाग,लखनउ में रस्तोगी कालेज बना तो उसमें एक बड़ा ऑडीटोरियम भी था। उन दिनों लखनउ में रवींद्रालय वगैरह नही थे। एक दिन तय हुआ कि रस्तोगी कालेज के ऑडीटोरियम में नाटक किया जाए। इस बीच नाटक देखकर मेरे मन में आया कि मैं भी नाटक कर सकता हूँ। एक दिन मैने अपने मामा टोनी बाबू से कह दिया कि मुझे नाटक में एक छोटा किरदार निभाना है। उन्ही दिनों डी एन राय का लिखा हुआ "नूरजहां" नामक नाटक हुआ था। मेरे घर के पास ही पोलीटिकल साइंस के प्रोफेसर डॉ. घनश्याम दास रहा करते थे। बहुत अच्छे कलाकार थे। उन्होने इस नाटक में जहांगीर का किरदार निभाया था और मुझे विजय सिंह नामक मंत्री का किरदार निभाने का अवसर दिया था।

मैं तो साइंस का विद्यार्थी था और यहां पर साइंस की एक प्रदर्शनी लगी थी। इसके बाद पुरस्कार वितरण था। पुरस्कार वितरण के समय कल्चरल प्रोगाम भी होना था। तो मैने सलाह दी कि संगीत व नृत्य की बजाय एक नाटक किया जाना चाहिए। उस वक्त एक पत्रकार सुरेश सिंह जी हुआ करते थे, जो कि अब दिल्ली में हैं। उन्होने नाटक लिखा था-"वनस्पति शायर"। तो रेडियो के मशहूर कलाकार संग्राम शुक्ला जी ने इस नाटक को

निर्देशित किया था और उन्होने इस नाटक में मुझे हीरो का किरदार निभाने का अवसर दिया। इस नाटक में अभिनय कर मैं अपने मोहल्ले व पूरे लखनऊ में काफी लोकप्रिय हो गया। लोगो ने कहा कि मुझे फिल्मों में अभिनय करना चाहिए। तो इस तरह थिएटर का परवान चढ़ता रहा। हमने थिएटर करने के लिए एक संस्था 'फ्रेंड सर्कल' बनायी। फिर मेरी मुलाकात चौक में रहने वाले राजेश्वर बच्चन से हुई। उन्होने मुझे नाटक 'माटी की पुकार' में हीरो का किरदार निभाने का अवसर दिया और इसका शो रवींद्रालय में हुआ था। शो खत्म होने के बाद कुछ दर्शको ने मुझसे कहा कि मैं नीचे देखकर संवाद बोलता हूँ, यह गलत है। मुझे सामने देखते हुए संवाद बोलने चाहिए। इतना ही नहीं उस वक्त के मशहूर थिएटर निर्देशक जयंत चोपड़ा ने मेरे अभिनय की तारीफ करते हुए नीचे देखते हुए संवाद बोलने पर आपत्ति जतायी। इस तरह अपनी गलतियों से मैं सीखता चला गया। बाद हमने 'फ्रेंड सर्कल' ग्रुप के लिए उनसे 'चंदामामा' नामक नाटक निर्देशित करवाया। इसका शो रवींद्रालय में हुआ।

फिर 1967 में के बी चंद्रा सरकारी नाट्यतंत्र से जुड़े हुए थे। उनके कई सामाजिक नाटक हुआ करते थे। के बी चंद्रा ने मुझे गजनी के बलमधारी का किरदार निभाने के लिए कहा। गजनी का किरदार रजा साहब निभा रहे थे। कुछ वजहों से वह इस नाटक से अलग हो गए, तब गजनी का किरदार निभाने का अवसर मुझे मिल गया। इस नाटक की रिहर्सल संगीत कालेज के बगल वाले कमरे में हुआ करती थी। के मुंशी के बहुत लोकप्रिय उपन्यास ''जय सोमनाथ' पर इसी नाम से नाटक किया। इसका निर्देशन के बी चंद्रा और 'बीबी नातियों वाले' से मशहूर हुए विश्वनाथ मिश्रा इसका अडॉप्टेशन कर रहे थे। इसमें विलेन शिवराशी का किरदार निभाने का अवसर मिला। मिश्रा जी ने मेरे किरदार को थोड़ा सा बढ़ा दिया। मेरा काम देखकर के बी चंद्रा ने मेरे बारे में कहा कि,'यह लड़का तो सब को खा जाएगा।' इस किरदार से लखनउ में कलाकार के तौर पर मेरी चर्चा होने लगी। इसका सबसे बड़ा फायदा हुआ कि 'दर्पण थिएटर ग्रुप' ने मुझे अपने साथ जोड़ लिया। 1971 में दो मशहूर नाटक 'स्टील फ्रेम' और 'खामोश अदालत जारी है' हुए। इन नाटकों का निर्देशन करने के लिए बी बी कारंथ दिल्ली से आए थे। बी. बी कारंथ जी ने मेरे बारे में सुन रखा था। इसलिए उनके कहने पर 'दर्पण थिएटर' के संस्थापक सुदेश बंधू जी मेरे पास इन नाटकों से जुड़ने का आफर लेकर आए। नाटक में दो हीरो थे, कारंथ जी ने मुझें उनमें से एक हीरो बना दिया। मेरे लिए इससे बड़ी बात क्या हो सकती थी। इस नाटक में पद्मिनी का किरदार शोभना जगदीश कर रही थीं। 'दर्पण' से जुड़ने के बाद मैं नियमित रूप से नाटक करने लगा। फिर 1973 में डेढ़ वर्ष के लिए मैं अपने संस्थान 'सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट' की तरफ से जर्मनी चला गया। जर्मनी में मैं दर्पण को मिस करता रहा। 1974 के अंत में जब मैं वापस लखनऊ आया, तो मुझे 'दर्पण' का ट्रेजरर बना दिया गया। उस वक्त इस संस्था के पास एक भी पैसा नही था। पर आज यह बहुत अच्छी तरह से स्थापित संस्था है। 'दर्पण' के तहत मैने रवि वासवानी के साथ 'अंधा युग' किया। थपलियाल के साथ 'सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक किया। दीनानाथ के साथ 'पंक्षी जा पंक्षी आ' किया। 1978 में मुझे 'दर्पण' का सेटरी बना दिया गया। 2016 तक मैं 'दर्पण थिएटर' ग्रुप का सेक्रेटरी रहा। इस बीच मैने कई निर्देशकों निमंत्रित कर 'दर्पण' के लिए नाटक निर्देशित करवाए।

इस बीच मुझे 1962 में सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट' यानी कि सीडीआरआई में नौकरी मिल गयी थी। वहां के सेक्रेटरी ने मेरा नाटक देखकर इस संस्थान के कल्चरल

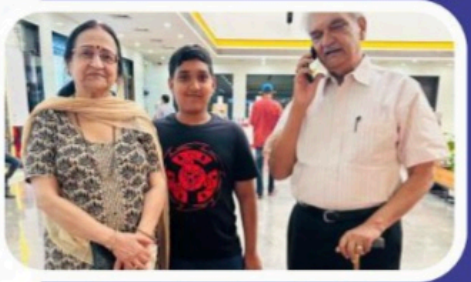

प्रोग्राम में नाटक करने के लिए कहा। कुल मिलाकर मैंने थिएटर व नाटकों के विकास के लिए अपने स्तर पर काफी काम किया। मुझे कलाकार, निर्देशक व सीडीआरआई का सहयोग मिला, जिसके चलते मेरे लिए थिएटर से जुड़ा रहना संभव हो पाया। .मैं एक तरफ 'सीडीआरआई' में विज्ञान के शोध करता रहा, तो दूसरी तरफ नाटकों में अभिनय करता रहा। मैने विज्ञान के कार्य में भी अपनी तरफ से कभी कोई कमी नहीं आने दी। मैं विज्ञान के प्रति समर्पित था, कई बार ऐसा हुआ कि मैं रात में दो बजे भी साइंस के प्रयोग करने गया और रात भर काम कर सुबह पांच बजे घर आया। पुनः दस बजे आफिस पहुँच गया। मेरे अंदर विज्ञान के साथ ही नाटक में अभिनय करने का जुनून रहा है। मगर मैने दोनों को एक दूसरे के आड़े नहीं आने दिया। साइंस से मुझे अनुशासन मिला, जिसका उपयोग मैने थिएटर पर किया। थिएटर से 'पॉवर आफ एक्सप्रेशन' मिला, जिसका उपयोग मैने साइंस में किया। 1971 से मैने रेडियो पर नाटक करने शुरू किए। 1975 से मैने टीवी पर नाटक करने शुरू किए। आकाशवाणी के निर्माता जयदेव शर्मा कमल से जब मेरी पहली मुलाकात हुई, तो मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैने भगवान को देख लिया।

☐ साइंस रिसर्चर की नौकरी फुलटाइम जॉब है और नाटक में अभिनय करना भी फुलटाइम काम है। इतना ही नही लोग वैज्ञानिक को भी पागल/जुनूनी कहते हैं और अभिनेता को भी ऐसा ही माना जाता है। ऐसे में आप इन दोनों के बीच कैसे सामंजस्य बैठा रहे थे?

काम के प्रति गंभीरता मेरे खून में है। मेरे पिता व भाई सभी में काम के प्रति गंभीरता और जुनून था। मैं साइंस रिसर्चर के रूप में गंभीर व समर्पित था। लेकिन सच यह भी है कि मैं बहुत 'ब्राइट साइंटिस्ट' नहीं था। मेरे अंदर पागलपन नही था। साइंटिस्ट के रूप में काम करते हुए मेरे दिमाग में यह बात रहती थी कि मुझे अभी नाटक का रिहर्सल करने जाना है। .मैं तो जर्मनी में भी रात रात भर साइंस का शोध करता रहता था। जहां नाटक में अभिनय करने का नशा मेरे अंदर था, वहीं साइंस में रिसर्च करने का भी नशा मुझमें था।

☐ जब थिएटर में आपकी रूचि थी, तो फिर साइंस रिसर्चर की नौकरी करने की जरुरत क्यों पड़ी थी?

मेरे बड़े भाई बहुत बड़े सामाजिक कार्यकर्ता रहे। उन्होने 'हरी ओम सेवा केंद्र 'बनाया। यह संस्था पिछले 25 साल से मेडिकल जगत में बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। फिलहाल मैं इस संस्थान का अध्यक्ष हूँ। वह चाहते थे कि मैं पढ़लिखकर डाक्टर बनूँ। पर डाक्टरी में प्रवेश नही मिल पाया। तब मैने साइंस की उच्च शिक्षा हासिल की। मैं लखनऊ विश्वविद्यालय में बायोकेमिस्ट्री का पहला विद्यार्थी था। और एक वैज्ञानिक के रूप में नौकरी की। आज कल मैं वहां की एसोसिएशन से भी जुड़ा हुआ हूँ। खैर, मैने सीडीआरआई ज्वाइन कर लिया और नाटक भी कर रहा था। एक दिन मेरे बॉस ने मुझसे कहा कि संस्थान के निदेशक कह रहे थे कि रस्तोगी यदि नाटक छोड़कर सारा ध्यान सीडीआरआई में ही लगाए, तो और बेहतर काम कर सकता है। मैने कहा कि मैं अपनी तरफ से साइंस की कहीं से भी उपेक्षा नहीं कर रहा हूँ, पर नाटक भी करता रहूँगा। फिर निदेशक ने मुझे पूरा सहयोग देने का वादा किया। वह मेरा नाटक देखने आते थे,और गर्व महसूस करते थे.सीरियल 'उड़ान' देखने के बाद मेरे विश्वविद्यालय के शिक्षक लोगों से गर्व से कहते थे कि यह मेरा विद्यार्थी है। देखिए,जब तक लोगो का सपोर्ट न मिले, लोग आपकी मदद न करें,तब तक आप विकास नही कर पाते हैं।

THURSDAY, FEBRUARY 29, 2024
LUCKNOW TIMES, THE TIMES OF

IT IS SPECIAL: DR ANIL RASTOGI ON SNA AWARD

The octogenarian actor has been conferred the Sangeet Natak Akademi Award

P3

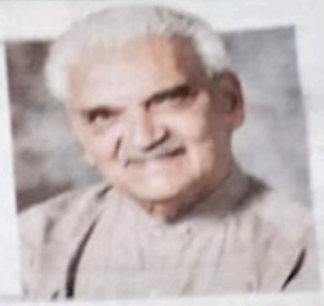

It is special: Dr Anil Rastogi on Sangeet Natak Akademi award

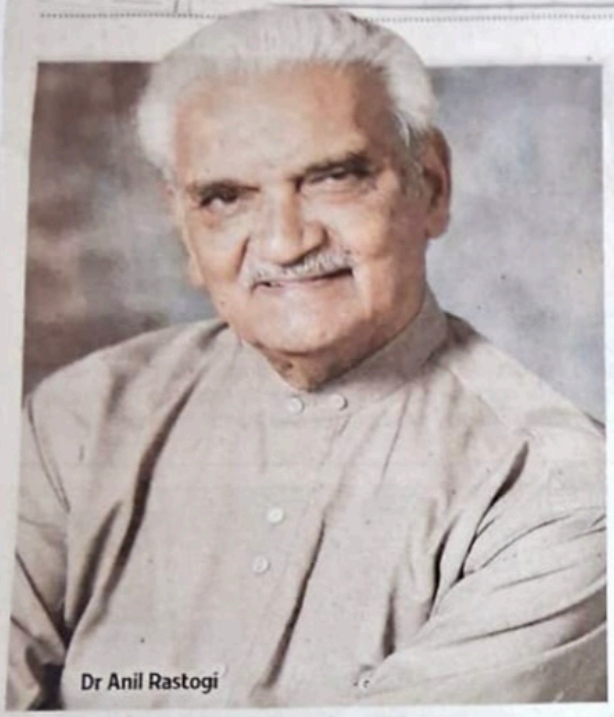

Dr Anil Rastogi

I have been lucky to have been part of the Darpan group and to have worked with Dr Urmil Kumar Thapliyal. We both worked for decades where he was the creative director, and I was managing other affairs as a secretary of the group

– Reminiscing his early days of theatre when he started with the Darpan group in 1972

Dr Anil Rastogi in play *Yahudi Ki Ladki* staged in 2010

With Arjun Kapoor in movie *Ishaqzaade*

@rastogi.anilk

(above) Anil Rastogi in *Aashram* series and (right) in play *Yahudi Ki Ladki* in 1979 which was directed by Dr Urmil Kumar Thapliyal

Abhishek Shukla

Veteran theatre artist, film actor, and former CSIR- Central Drug Research Institute (CDRI) scientist **Dr Anil Rastogi** has been selected for the Sangeet Natak Akademi award for acting in the awards announced on Tuesday.

The 81-year-old Dr Rastogi, who has also been honoured with the Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademi Fellowship in 2007 and the Kalidas Samman by Madhya Pradesh Government in 2019, to name a few, calls this recognition special. "It is undoubtedly special because it is India's highest recognition in the field of performing arts. I would like to dedicate this award to my colleagues in theatre and in CDRI, who have always been supportive and have played a big part in," shares Dr Rastogi.

From portraying the role of Senior Superintendent of Police and mentor of protagonist Kavita Chaudhary in serial *Udaan* in 1990 to playing a judge in Sushmita Sen starrer series *Taali* in 2023, Dr Rastogi not only has done nearly a 100 plays u "directors but has also acted 60 films till date. He has also active in Radio and TV and is artist of Akashwani and Doo too. "But theatre has always first love. I have been succes other mediums be it films, ra because of what I learned fr says Dr Rastogi.

Talking about the plays close to his

"There are two plays which ho very close to my heart. One is *Yahudi Ki Ladki*, which was di by Dr Urmil Kumar Thapliyal performed it for the first time Later, I did 60-70 shows of th play, and it was last staged second play is *Vibhas* in 201 directed by late Prof Raj Biso

THE TIMES OF INDIA

Ace actor Anil Rastogi to get Sangeet Akademi Award

Pathikrit Chakraborty & Aditi Singh | TNN

Lucknow: At an age where many might consider retiring, 81-year-old scientist-turned-actor Anil Rastogi stands as a beacon of energy and enthusiasm. On Tuesday, the esteemed actor was conferred with the prestigious Sangeet Natak Akademi Award by the National Academy of Music, Dance, and Drama in New Delhi, in recognition of his exceptional contributions to the field of acting.

Rastogi's journey is a testament to his unwavering commitment to the arts. With over 600 theatre performances, numerous films, and television serials to his credit, he has carved a niche for himself as a multifaceted artist.

81-year-old Anil Rastogi

A former scientist at the Central Drug Research Institute in Lucknow, Rastogi's transition into acting was driven by a profound passion for the craft. Despite his scientific background, Rastogi's innate talent for acting blossomed under the tutelage of acclaimed theatre stalwarts such as BV Karanth, MK Raina, Ravi Baswani, Balraj Pandit, and Raj Bisaria.

▶ Expresses gratitude, P 2

Rastogi thanks all for love, support

▶ Continued from P 1

His association with the prime cultural organisation 'Darpan' further honed his skills, shaping him into a versatile and accomplished actor. Rastogi expressed gratitude, saying, "I had never envisioned becoming an actor, but the unwavering support and diligently pursuing it propelled me forward."

"I am probably the senior most actor in the country active in all four fields of histrionic expressions viz. theatre, radio, film and television," he added.

Throughout his illustrious career, Rastogi has been the recipient of numerous accolades, including the UP SNA Award in 1984, UP SNA Fellow in 2007, Yash Bharati Award in 2016, and the Kalidas Samman of MP in 2019, among others.

His portrayal of diverse characters, notably as the super cop Bashir Ahmed in the popular TV serial 'Udaan', has garnered widespread acclaim. Rastogi's versatility shines through in his roles in films such as 'Manzil', 'Khoon Baha Ganga Mein', 'Mareechika', and the upcoming 'Pati Patni aur Woh', where he essays the role of the heroine's father.

Since the inception of the Darpan theatre group in 1971, Rastogi has been an integral part of the theatre landscape. From his debut in BV Karanth's 'Haya Vadan' to his tenure as Darpan's secretary from 1978 to 2017, his contribution to Indian theatre has been invaluable. With over 400 shows of the play 'Panchhi Jaa Panchhi Aa' and memorable performances in productions like 'Garam Masala', Rastogi continues to captivate audiences with his charisma and talent.

LUCKNOW/METRO,
Monday, May 22, 2023

{ 'SHOW GOES ON' }

'Despite competition from OTT & movies, theatre stands tall'

HT Correspondent
letters@htlive.com

LUCKNOW : In today's times, theatres have to compete with not just movies but OTT platforms as well. Despite this, there is a loyal audience for plays and hence, theatre stands tall, said popular actor Anil Rastogi.

He added that theatres in Lucknow are also ready to compete with new streaming platforms.

"Today, the theatres in the city are not afraid of innovations. Theatres are also reinventing themselves in terms of scripts, content, dialogue delivery, presentation of facts, backstage techniques, light effects, sets, concepts, and sound effects, among others. This keeps the audience hooked. Viewers live our script and don't just watch it. In the days to come, theatres would be the first choice for people who wish to feel the drama and not just watch it," said the actor.

He also urged Lucknow residents to watch plays at Sangeet Natak Akademi Gomti Nagar between May 18 and May 26. These plays will have powerful script and immaculate performances, he added.

Directed by Bharatendu, the new play 'Swaha' will be full of thriller and suspense. It will be staged at Sangeet Natak Akademi from 6.30 pm.

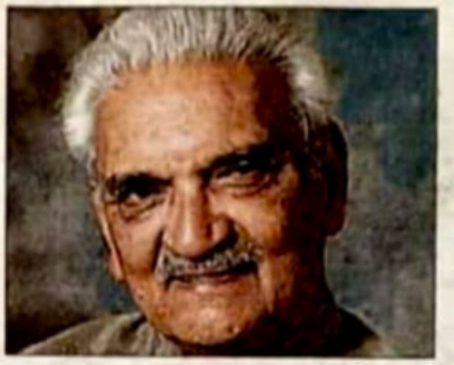

Actor Anil Rastogi FILE

Noted director Shubhdeep Raha said, "Today, OTT has taken a lead over feature films when it comes to content and script. We have to experiment with content to bring people to theatres. This has been taken care of in my plays."

He added that in his plays, every person associated with light, sound, camera, support staff, and backstage work in coordination. They rehearse continuously for a month. Colour, light, and sound have special importance in plays, especially if it is a thriller. The coordination of all these with the artists enhances the play."

In a similar vein, actor Shatrughan Sharma said, "During the last 25 years, theatre has changed a lot. Like films and OTT, the theatre has also become very professional. Any weak performance gets noted and the audience reacts immediately. Perfection is the key word and that's why, practice is important."

> In the days to come, theatre would be the first choice for people who wish to feel the drama and not just watch it
>
> **ANIL RASTOGI,** actor

He added, "However, money is a big difference when it comes to theatre. The OTT industry generated revenue of Rs 20 billion in 2020 and Rs 31 billion in 2021. In 2022, this industry earned more than Rs 46 billion in India. In comparison, theatre groups make far less money. Therefore, we don't have the liberty to spend on lavish sets, dresses, make up, or special effects but with investment coming in, things are improving in the theatre as well. Despite a low budget, theatre is still miles ahead due to good content and script, and powerful acting. It still supplies manpower to the entertainment industry."